TOUBA KI RIWAYAAT V HIKAYAAT (HINDI)

तौबा की रिवायात व हिकायात

- तौबा की ज़रूरत 10
- तौबा के फ़ज़ाइल 14
- तौबा में रुकावटें और इन का हल 17
- सच्ची तौबा किसे कहते हैं ? 37
- तौबा की शराइत़ 38
- तौबा पर इस्तिक़ामत क्यूं कर मिले ? 53
- तौबा करने वालों की 55 हिकायात 55

مکتبۃ المدینہ
(दा'वते इस्लामी)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ़

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَکَاتُهُمُ الْعَالِیَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ़ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَاالْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तर्जमा : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ *! हम पर इल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले।*

(اَلْمُسْتَطْرَف ج۱ ص۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : *अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।*

ता़लिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़फ़िरत

13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़ह़ात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो ***मक्तबतुल मदीना*** *से रुजूअ़ फ़रमाइये।*

तौबा की रिवायात व हिकायात

येह किताब **मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)** ने "उर्दू" **ज़बान** में पेश की है। **मजलिसे तराजिम, बरोडा (दा'वते इस्लामी)** ने इस किताब को "**हिन्दी**" **रस्मुल ख़त़** में तरतीब दे कर पेश किया है और **मक्तबतुल मदीना** से **शाएअ़** करवाया है।

इस में अगर किसी जगह **कमी-बेशी** या **ग़-लत़ी** पाएं तो **मजलिसे तराजिम** को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, e-mail या sms) **मुत्त़लअ़** फ़रमा कर षवाब कमाइये।

उर्दू से हिन्दी (रस्मुल ख़त़) का तराजिम चार्ट

त = ت	फ = پھ	प = پ	भ = بھ	ब = ب	अ = ا	
झ = جھ	ज = ج	ष = ث	ठ = ٹھ	ट = ٹ	थ = تھ	
ढ = ڈھ	ध = دھ	ड = ڈ	द = د	ख़ = خ	ह़ = ح	
ज़ = ژ	ज़ = زھ	ज़ = ز	ढ़ = ڑھ	ड़ = ڑ	र = ر	ज़ = ذ
अ़ = ع	ज़ = ظ	त़ = ط	ज़ = ض	स = ص	श = ش	स = س
ग = گ	ख = کھ	क = ک	क़ = ق	फ़ = ف	ग़ = غ	' = ع
य = ی	ह = ہ	व = و	न = ن	म = م	ल = ل	घ = گھ
् = ْ	ु = ُ	ि = ِ	– = َ	ी = ئ	ू = وُ	ा = آ

-: राबित़ा :-

मजलिसे तराजिम, मक्तबतुल मदीना (दा'वते इस्लामी)

मदनी मर्कज़, क़ासिम हाला मस्जिद, सेकन्ड फ़्लोर,

नागर वाड़ा मेन रोड, बरोडा, गुजरात, अल हिन्द

Mo. + 91 9327776311

E-mail : translation.baroda@dawateislami.net

तौबा की अहम्मिय्यत, फ़ज़ाइल, शराइत, इस की राह में हाइल रुकावटों और तौबा करने वालों के वाक़िआ़त पर मुश्तमिल तालीफ़

तौबा की रिवायात व हिकायात

–: पेशकश :–
मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या
(शो'बए इस्लाही कुतुब)

–: नाशिर :–
मक्तबतुल मदीना
421, उर्दू मार्केट, मटया महल, जामेअ़ मस्जिद,
देहली–110006 फ़ोन : 011-23284560

الصلوۃ والسلام علیک یارسول اللہ وعلی آلک واصحابک یا حبیب اللہ

जुम्ला हुक़ूक़ ब हक़्क़े नाशिर महफ़ूज़ हैं

नाम किताब : तौबा की रिवायात व हिकायात

पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या

मुरत्तब : शो'बए इस्लाही कुतुब

सिने त़बाअ़त : शव्वालुल मुकर्रम, 1434 हि.

नाशिर : मक्तबतुल मदीना, देहली - 1

-: मक्तबतुल मदीना की मुख़्तलिफ़ शाख़ें :-

❁...**अह़मदाबाद** : सिलेक्टेड हाऊस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा,, अह़मदाबाद-1, फ़ोन : **9327168200**

❁... **मुम्बई** : **19, 20,** मुह़म्मद अ़ली रोड, मांडवी पोस्ट ऑफ़िस के सामने, मुम्बई, फ़ोन : **022-23454429**

❁... **नागपूर** : सैफ़ी नगर रोड, ग़रीब नवाज़ मस्जिद के सामने, मोमिन पूरा, नागपूर फ़ोन : **9326310099**

❁.... **अजमेर** : **19 / 216** फ़लाह़े दारैन मस्जिद के क़रीब, नला बाज़ार, स्टेशन रोड, दरगाह, फ़ोन : **(0145) 2629385**

❁....**हुबली** : **A.J** मुधल कोम्पलेक्स, **A.J** मुधल रोड, ओल्ड हुबली, कर्नाटक - फ़ोन : **08363244860**

❁... **ह़ैदराबाद** : मक्तबतुल मदीना, मुग़ल पूरा, पानी की टंकी, ह़ैदराबाद, फ़ोन : **(040) 2 45 72 786**

E.mail : ilmia26@yahoo.com

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

अल मदीनतुल इल्मिय्या

अज़ : *बानिये दा'वते इस्लामी, आ़शिक़े आ'ला ह़ज़रत, शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई* دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَلٰى اِحْسَانِهٖ وَبِفَضْلِ رَسُوْلِهٖ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **"दा'वते इस्लामी"** नेकी की दा'वत, एह़याए सुन्नत और इशाअ़ते इल्मे शरीअ़त को दुन्या भर में आ़म करने का अ़ज़्मे मुसम्मम रखती है, इन तमाम उमूर को ब हुस्ने ख़ूबी सर अन्जाम देने के लिये मुतअ़द्दिद मजालिस का क़ियाम अ़मल में लाया गया है जिन में से एक मजलिस **"अल मदीनतुल इल्मिय्या"** भी है जो **दा'वते इस्लामी** के **उ़-लमा व मुफ़्तियाने किराम** كَثَّرَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰى पर मुश्तमिल है, जिस ने ख़ालिस इल्मी, तह़क़ीक़ी और इशाअ़ती काम का बीड़ा उठाया है। इस के मुन्दरिजए ज़ैल **छे शो'बे** हैं :

﴾1﴿ शो'बए कुतुबे आ'ला ह़ज़रत ﴾2﴿ शो'बए दर्सी कुतुब
﴾3﴿ शो'बए इस्लाह़ी कुतुब ﴾4﴿ शो'बए तख़रीज
﴾5﴿ शो'बए तफ़्तीशे कुतुब ﴾6﴿ शो'बए तराजुमे कुतुब

"**अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या**" की अव्वलीन तरजीह़ सरकारे आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, अ़ज़ीमुल बरकत, अ़ज़ीमुल मर्तबत, परवानए शम्ए़ रिसालत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, ह़ामिये सुन्नत, माह़िये बिदअ़त, आ़लिमे शरीअ़त, पीरे त़रीक़त, बाइ़षे ख़ैरो बरकत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अलह़ाज अल ह़ाफ़िज़ अल क़ारी अश्शाह **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن की गिरां मायह तसानीफ़ को अ़सरे ह़ाज़िर के तक़ाज़ों के मुत़ाबिक़ ह़त्तल वुस्अ़ सह्ल उस्लूब में पेश करना है। तमाम इस्लामी भाई और इस्लामी बहनें इस इ़ल्मी, तह़क़ीक़ी और इशाअ़ती **मदनी काम** में हर मुमकिन तआ़वुन फ़रमाएं और **मजलिस** की त़रफ़ से शाएअ़ होने वाली कुतुब का ख़ुद भी मुत़ालआ़ फ़रमाएं और दूसरों को भी इस की तरग़ीब दिलाएं ।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ "**दा'वते इस्लामी**" की तमाम मजालिस ब शुमूल "**अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या**" को **दिन ग्यारहवीं** और **रात बारहवीं** तरक़्क़ी अ़त़ा फ़रमाए और हमारे हर अ़मले ख़ैर को ज़ेवरे इख़्लास से आरास्ता फ़रमा कर **दोनों जहां की भलाई** का सबब बनाए। हमें ज़ेरे गुम्बदे ख़ज़रा शहादत, जन्नतुल बक़ीअ़ में मदफ़न और **जन्नतुल फ़िरदौस** में **जगह** नसीब फ़रमाए । اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

रमज़ानुल मुबारक, **1425** हि.

नम्बर शुमार	मौज़ूअ़	सफ़हा नम्बर
1	पेशे लफ़्ज़	9
2	तौबा की ज़रूरत	10
3	तौबा के फ़ज़ाइल	14
4	तौबा में ताख़ीर की 12 वुजूहात और इन का ह़ल	17
5	सच्ची तौबा किसे कहते हैं ?	37
6	तौबा की शराइत़	38
7	इन शराइत़ की तफ़्सील	40
8	तजदीदे ईमान का त़रीक़ा	47
9	तौबा करने का एक त़रीक़ा	48
10	तौबा की क़बूलिय्यत कैसे मा'लूम हो ?	49
11	तौबा के बा'द क्या करे ?	50
12	अगर दिल दोबारा गुनाहों की त़रफ़ माइल हो ?	51
13	तौबा के बा'द गुनाह सरज़द हो जाए तो क्या करे ?	52
14	तौबा पर इस्तिक़ामत कैसे पाएं ?	53
15	**तौबा करने वालों के वाक़िआ़त**	55
16	(1) एक ह़बशी की तौबा	55
17	(2) एक ज़ानिया की तौबा	55

18	(3) एक गुलूकार की तौबा	56
19	(4) हरामी बच्चे को मारने वाली औरत की तौबा	57
20	(5) शराबी नौजवान की तौबा	58
21	(6) रियाकारी से तौबा	59
22	(7) एक डाकू की तौबा	60
23	(8) तीस(30) साल तक सच्ची तौबा की दुआ करने वाला	61
24	(9) खुरासानी आलिम की तौबा	62
25	(10) शहज़ादे की तौबा	63
26	(11) बादशाह के बेटे की तौबा	67
27	(12) डाकूओं के सरदार की तौबा	70
28	(13) एक क़स्साब की तौबा	71
29	(14) बेहोश होने वाले शराबी की तौबा	72
30	(15) गुनाहों की दलदल में फंसने वाले नौजवान की तौबा	73
31	(16) एक अमीर नौजवान की तौबा	75
32	(17) एक गाइका की तौबा	77
33	(18) एक वज़ीर की तौबा	80
34	(19) अज़दहे से बचने वाले की तौबा	80
35	(20) एक आशिक़ की तौबा	82

36	(21) एक रईस की तौबा	83
37	(22) एक पड़ोसी की तौबा	83
38	(23) अपनी जान पर जुल्म करने वाले नौजवान की तौबा	84
39	(24) फ़ाहिशा औरत के इश्क़ में मुब्तला नौजवान की तौबा	86
40	(25) एक हाशिमी नौजवान की तौबा	87
41	(26) लह्व लअ्ब में मश्ग़ूल शख़्स की तौबा	89
42	(27) नसरानी त़बीब की तौबा	91
43	(28) एक आ़शिक़ की तौबा	91
44	(29) साज़ बजाने वाले नौजवान की तौबा	92
45	(30) औरत से ज़ियादती करने वाले की तौबा	93
46	(31) एक फ़ासिक़ व फ़ाजिर शख़्स की तौबा	94
47	(32) बनी इसराईल के नौजवान की तौबा	96
48	(33) तौबा पर क़ाइम रहने वाले की तौबा	96
49	(34) एक नाफ़रमान शख़्स की तौबा	97
50	(35) नह्र में ग़ुस्ल करने वाले की तौबा	98
51	(36) एक बादशाह की तौबा	99
52	(37) एक सिपाही की तौबा	101
53	(38) बिस्मिल्लाह की ता'ज़ीम की बरकत से तौबा नसीब हो गई	104

54	(39) एक लुटेरे की तौबा	105
55	(40) एक रहज़न की तौबा	106
56	(41) एक मजूसी की तौबा	107
57	(42) नसरानी ह़कीम की तौबा	109
58	(43) लह्व लअ़ब में मश्ग़ूल नौजवान की तौबा	110
59	(44) एक बद मुआ़श की तौबा	111
60	(45) एक सूदख़ोर की तौबा	112
61	(46) ह़सीन औ़रत पर फ़रेफ़्ता होने वाले की तौबा	114
62	(47) ताइबीन के ह़ालात सुन कर तौबा करने वाला	115
63	(48) एक ताजिर की तौबा	116
64	(49) कफ़न चोर की तौबा	117
65	(50) रक़्सो सुरूर में मसरूफ़ लोगों की तौबा	117
66	(51) अ़क़्लमन्द बाप के बेटे की तौबा	118
67	(52) शराबी वज़ीर के मुसाह़िब की तौबा	119
68	(53) संगीन जराइम में मुलव्विष शख़्स की तौबा	120
69	(54) एक दहरिये की तौबा	121
70	(55) क़ादियानी प्रोफ़ेसर की तौबा	122
71	माख़ज़ो मराजेअ़	123

पेशे लफ़्ज़

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ **दा'वते इस्लामी** की **मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या** की जानिब से एक फ़िक्र अंगेज़ किताब **''तौबा की रिवायात व हिकायात''** आप के सामने पेश की जा रही है। इस में पहले पहल तौबा की ज़रूरत का बयान है, फिर तौबा की अहम्मिय्यत व फ़ज़ाइल मज़कूर हैं। इस के बा'द तफ़्सीलन बताया गया है कि सच्ची तौबा किस त़रह़ की जा सकती है ? और आख़िर में तौबा करने वालों के 55 वाक़िआ़त भी नक़्ल किये गए हैं। उम्मीदे वाषिक़ है कि येह किताब इस्लाही कुतुब में बेहतरीन इज़ाफ़ा मुतसव्विर होगी। اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ

इस किताब को मुरत्तब करने की सआ़दत **अल मदीनतुल इल्मिय्या** के **शो'बए इस्लाही कुतुब** ने ह़ासिल की है।

अल्लाह तआ़ला से दुआ़ है कि हमें **''अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश''** करने के लिये मदनी इन्आ़मात पर अ़मल और मदनी क़ाफ़िलों का मुसाफ़िर बनते रहने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए और दा'वते इस्लामी की तमाम मजालिस ब शुमूल मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या को दिन ग्यारहवीं रात बारहवीं तरक़्क़ी अ़त़ा फ़रमाए। اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

शो'बए इस्लाही कुतुब (अल मदीनतुल इल्मिय्या)

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَ الصَّلٰوۃُ وَ السَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

प्यारे इस्लामी भाइयो !

ऐसे पुर फ़ितन ह़ालात में कि इर्तिकाबे गुनाह बेह़द आसान और नेकी करना बेह़द मुश्किल हो चुका हो और नफ़्सो शैत़ान हाथ धो कर इन्सान के पीछे पड़े हों, इन्सान का गुनाहों से बचना बेह़द दुशवार है । लेकिन याद रखिये ! गुनाहों का अन्जाम हलाकत व रुस्वाई के सिवा कुछ नहीं, लिहाज़ा ! इस से पहले की पयामे अजल आन पहुंचे और हम अपने अ़ज़ीज़ो अक़रिबा को रोता छोड़ कर और दुन्या की रोनक़ों से मुंह मोड़ कर, क़ब्र के हौलनाक और तारीक गढ़े में हज़ारों मुर्दों के दरमियान तन्हा जा सोएं, हमें चाहिये कि इन गुनाहों से छुटकारे की कोई तदबीर करें । इस के लिये ज़रूरी है कि हम अपने परवर दगार عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में सच्ची तौबा करें क्यूंकि सच्ची तौबा ऐसी चीज़ है जो हर क़िस्म के गुनाह को इन्सान के नामए आ'माल से धो डालती है जैसा कि क़ुरआने पाक में है :

''وَهُوَ الَّذِیْ یَقْبَلُ التَّوْبَةَ عَنْ عِبَادِهٖ وَیَعْفُوْا عَنِ السَّیِّاٰتِ وَیَعْلَمُ مَا تَفْعَلُوْنَ 0

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और वोही है जो अपने बन्दों की तौबा क़बूल फ़रमाता और गुनाहों से दर गुज़र फ़रमाता है और जानता है जो कुछ तुम करते हो ।'' (پ۲۵،الشوریٰ:۲۵)

सरवरे आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ''اَلتَّائِبُ مِنَ الذَّنْبِ كَمَنْ لَّا ذَنْبَ لَهٗ'' या'नी गुनाहों से तौबा करने वाला ऐसा है कि गोया उस ने कभी कोई गुनाह किया ही न हो ।''

(السنن الکبریٰ، کتاب الشہادات، باب شہادۃ القاذف، رقم ۲۰۵۶۱، ج۱۰،ص۲۵۹)

जब कि हज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया, **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाता है : "ऐ इब्ने आदम ! तू ने जब भी मुझे पुकारा और मुझ से रुजूअ़ किया, मैं ने तेरे गुनाहों की बख़्शिश कर दी और मुझे इस की परवाह नहीं और ऐ इब्ने आदम ! अगर तेरे गुनाह आस्मान तक पहुंच जाएं, फिर तू मुझ से मग़फ़िरत त़लब करे तो मैं तेरी बख़्शिश कर दूंगा और मेरी ज़ात बे नियाज़ है। ऐ इब्ने आदम ! अगर तेरी मुझ से मुलाक़ात इस ह़ालत में हो कि तेरे गुनाह पूरी ज़मीन को घेर लें, लेकिन तूने शिर्क का इर्तिकाब न किया हो तो मैं तेरे गुनाहों को बख़्श दूंगा।" (جامع الترمذی، کتاب الدعوات، باب ماجاء فی فضل التوبۃ والاستغفار، رقم ۳۵۵۱، ج ۵، ص ۲۱۸)

और हज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि जब बन्दा अपने गुनाहों से तौबा करता है तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ लिखने वाले फ़िरिश्तों को उस के गुनाह भुला देता है, इसी त़रह़ उस के आ'ज़ा (या'नी हाथ पाउं) को भी भुला देता है और उस के ज़मीन पर निशानात भी मिटा डालता है। यहां तक कि क़ियामत के दिन जब वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से मिलेगा तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से उस के गुनाह पर कोई गवाह न होगा। (الترغیب والترھیب، کتاب التوبۃ والزھد، باب الترغیب فی التوبۃ، رقم ۷، ج ۴، ص ۴۸)

प्यारे इस्लामी भाइयो !

तौबा की अहम्मिय्यत के पेशे नज़र सरवरे कौनैन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم और अकाबिरीने उम्मत (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم) ने भी इस के बारे में तरग़ीबी कलाम इरशाद फ़रमाया है, चन्द रिवायात मुलाह़ज़ा हों :

(1) हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया कि "ऐ लोगो ! **अल्लाह** तआ़ला से तौबा करो, बेशक मैं भी दिन में सो मरतबा इस्तिग़फ़ार करता हूं।"

(صحیح مسلم، کتاب الذکر والدعاء والتوبۃ والاستغفار، باب استحباب الاستغفار والاستکثار منہ، رقم ۲۷۰۲، ص ۱۴۴۹)

(2) हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह इब्ने मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना : बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपने मोमिन बन्दे की तौबा से उस शख़्स से ज़ियादा ख़ुश होता है जो किसी हलाकत ख़ेज़ पथरीली ज़मीन पर पड़ाव करे उस के साथ उस की सुवारी भी हो जिस पर उस के खाने पीने का सामान लदा हुवा हो फिर वोह सर रख कर सो जाए फिर जब बेदार हो तो उस की सुवारी जा चुकी हो तो वोह उसे तलाश करे यहां तक कि गर्मी और शिद्दते प्यास या जिस वजह से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ चाहे परेशान हो कर कहे कि मैं उसी जगह लौट जाता हूं। जहां सो रहा था फिर सो जाता हूं यहां तक कि मर जाउं। फिर वोह अपनी कलाई पर सर रख कर मरने के लिये सो जाए फिर जब बेदार हो तो उस के पास उस की सुवारी मौजूद और उस पर उस का तौशा भी मौजूद हो तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मोमिन बन्दे की तौबा पर उस शख़्स के अपनी सुवारी के लौटने पर ख़ुश होने से भी ज़ियादा ख़ुश होता है।

(صحیح مسلم، کتاب التوبۃ، باب فی الحض علی التوبۃ والفرح بھا، رقم ۲۷۴۴، ص ۱۴۶۸)

(3) हज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ कहते हैं कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "सारे इन्सान ख़ताकार हैं और ख़ताकारों में से बेहतर वोह हैं, जो तौबा कर लेते हैं।"

(سنن ابن ماجہ، کتاب الزھد، باب ذکر التوبۃ، رقم ۴۲۵۱، ج ۴، ص ۴۹۱)

(4) हज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमान है कि "जिस ने इस्तिग़फ़ार को लाज़िम पकड़ लिया, तो **अल्लाह** तआ़ला उस की तमाम मुश्किलों में आसानी, हर ग़म से आज़ादी और बे हिसाब रिज़्क़ अ़ता फ़रमाता है।"

(سنن ابی داؤد، کتاب الوتر، باب فی الاستغفار، رقم ۱۵۱۸، ج ۲، ص ۱۲۲)

(5) हज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : बेशक लोहे की त़रह़ दिलों को भी ज़ंग लग जाता है और उस की जिला (या'नी सफ़ाई) त़लबे मग़्फ़िरत है।''

(مجمع البحرین، کتاب التوبۃ، باب الاستغفار جلاء القلوب، رقم ۴۷۳۹، ج۴، ص۴۷۲)

(6) हज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि सरवरे कौनैन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ''मोमिन की और ईमान की मिषाल अपनी खूंटी (किले) के साथ बन्धे हुए घोड़े की त़रह़ है (या'नी गोया मोमिन के दिल में ईमान बन्धा हुवा है) कि घोड़ा कभी उछलता कूदता है, फिर अपनी खूंटी के पास लौट आता है। चुनान्चे मोमिन भी कभी भूल चूक से (गुनाह) कर बैठता है फिर लौट आता है (या'नी तौबा कर लेता है) तो तुम अपने खाने परहेज़गारों को खिलाया करो और नेकी के काम अहले ईमान के साथ किया करो।''

(شرح السنۃ، کتاب البر والصلۃ، باب المجالیس الصالح...الخ، رقم ۳۳۷۹، ج۶، ص۴۶۹)

(7) एक आदमी ने हज़रते सय्यिदुना इब्ने मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से पूछा कि एक आदमी ने गुनाह किया, क्या उस की तौबा की कोई सूरत है ? हज़रते सय्यिदुना इब्ने मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने मुंह दूसरी त़रफ़ कर लिया। फिर दोबारा उधर तवज्जोह की तो उस की आंखें डब डबा रही थीं। फ़रमाया : ''जन्नत के आठ दरवाज़े हैं, सब खुलते और बंद होते हैं, सिवाए तौबा के, इस लिये कि तौबा के दरवाज़े पर एक फ़िरिश्ता मुक़र्रर है जो बंद नहीं होता इस लिये नेक अ़मल करो और मायूस न हो।''

(مکاشفۃ القلوب، الباب السابع عشر فی بیان الامانۃ والتوبۃ، ص۶۱، ۶۲)

(8) शैख़ फ़ुज़ैल बिन इ़याज़ عَلَیْہِ رَحْمَۃُ फ़रमाते हैं कि "रब्ब तआ़ला ने एक पैग़म्बर को हुक्म दिया कि गुनाहगारों को बिशारत दे दो कि अगर वोह तौबा करेंगे तो मैं क़बूल करूंगा और मेरे दोस्तों को येह वईद सुनाओ (या'नी इस बात से डराओ) कि अगर मैं इन के साथ अ़दलो इन्साफ़ से पेश आऊं तो सब को सज़ा दूं (या'नी सब मुस्तहिक़े सज़ा होंगे)।"

(کیمیائے سعادت، رکن چہار، منجیات، اصل اول قبول توبہ، ج۲، ص۷۶۳)

(9) शैख़ त़लक़ बिन ह़बीब عَلَیْہِ رَحْمَۃُ फ़रमाते हैं कि "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हुक़ूक़ बन्दों पर इस क़दर हैं कि इन का अदा करना मुमकिन नहीं है लिहाज़ा चाहिये कि हर बन्दा जब उठे तो तौबा करे और रात को तौबा कर के सोए।" (کیمیائے سعادت، رکن چہار، منجیات، اصل اول قبول توبہ، ج۲، ص۷۶۳)

तौबा के फ़ज़ाइल

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो!

ताइब होने वाले ख़ुश नसीब को गुनाहों की मुआ़फ़ी के साथ साथ दीगर फ़ज़ाइल भी ह़ासिल होंगे जिन में से चन्द येह हैं :

(1) **फ़लाह़ व कामरानी का ह़ुसूल :**

रब्ब तआ़ला फ़रमाता है। "

وَتُوْبُوْۤا اِلَى اللّٰهِ جَمِيْعًا اَيُّهَ الْمُؤْمِنُوْنَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ۝

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और **अल्लाह** की त़रफ़ तौबा करो ऐ मुसलमानो! सब के सब इस उम्मीद पर कि तुम फ़लाह़ पाओ।"

(پ۱۸، النور:۳۱)

(2) **तौबा करने वाला अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का महबूब :**

अल्लाह तआ़ला ने इरशाद फ़रमाया : "اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ التَّوَّابِيْنَ

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक **अल्लाह** पसन्द करता है बहुत तौबा करने वालों को।" (پ۲، البقرۃ:۲۲۲)

एक और मक़ाम पर इरशाद फ़रमाया है :

''اِنَّ اللّٰهَ یُحِبُّ التَّوَّابِیْنَ وَیُحِبُّ الْمُتَطَهِّرِیْنَ0

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक **अल्लाह** पसन्द करता है बहुत तौबा करने वालों को और पसन्द रखता है सुथरों को।'' (پ۲،البقرہ:۲۲۲)

(3) **तौबा करने वाला रह़मते इलाही** عَزَّوَجَلَّ **का मुस्तह़िक़ :**

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है :

''اِنَّمَاالتَّوْبَةُ عَلَى اللّٰهِ لِلَّذِیْنَ یَعْمَلُوْنَ السُّوْٓءَ بِجَهَالَةٍ ثُمَّ یَتُوْبُوْنَ مِنْ قَرِیْبٍ فَاُولٰٓئِكَ یَتُوْبُ اللّٰهُ عَلَیْهِمْ ط وَكَانَ اللّٰهُ عَلِیْمًا حَكِیْمًا0

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : वोह तौबा जिस का क़बूल करना **अल्लाह** ने अपने फ़ज़्ल से लाज़िम कर लिया है वोह उन्हीं की है जो नादानी से बुराई कर बैठें फिर थोड़ी देर में तौबा कर लें। ऐसों पर **अल्लाह** अपनी रह़मत से रुजूअ़ करता है और **अल्लाह** इल्मो हिक्मत वाला है।'' (پ۴،النساء:۱۷)

और फ़रमाता है : ''فَمَنْ تَابَ مِنْۢ بَعْدِ ظُلْمِهٖ وَاَصْلَحَ فَاِنَّ اللّٰهَ یَتُوْبُ عَلَیْهِ ط

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तो जो अपने जुल्म के बा'द तौबा करे और संवर जाए तो **अल्लाह** अपनी मेहर से उस पर रुजूअ़ फ़रमाएगा।'' (پ۶،المآئدہ:۳۹)

(4) **बुराइयों का नेकियों में तब्दील होना :**

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है :

''اِلَّا مَنْ تَابَ وَاٰمَنَ وَعَمِلَ عَمَلًا صَالِحًا فَاُولٰٓئِكَ یُبَدِّلُ اللّٰهُ سَیِّاٰتِهِمْ حَسَنٰتٍ ط وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِیْمًا0

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : मगर जो तौबा करे और ईमान लाए और अच्छा काम करे तो ऐसों की बुराइयों को **अल्लाह** भलाइयों से बदल देगा और **अल्लाह** बख़्शने वाला मेहरबान है।'' (پ۱۹،الفرقان:۷۰)

(5) दुख़ूले जन्नत का इन्आम :

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है :

"يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا تُوْبُوْۤا اِلَى اللّٰهِ

تَوْبَةً نَّصُوْحًاؕ عَسٰى رَبُّكُمْ اَنْ يُّكَفِّرَ عَنْكُمْ سَيِّاٰتِكُمْ وَيُدْخِلَكُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُۙ

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो **अल्लाह** की त़रफ़ ऐसी तौबा करो जो आगे को नसीहत हो जाए क़रीब है तुम्हारा रब्ब तुम्हारी बुराइयां तुम से उतार दे और तुम्हें बाग़ों में ले जाए जिन के नीचे नहरें बहें।" (پ۲۸،التحریم:۸)

एक और मक़ाम पर है :

"اِلَّا مَنْ تَابَ وَاٰمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَاُولٰٓىٕكَ يَدْخُلُوْنَ الْجَنَّةَ وَلَا يُظْلَمُوْنَ شَيْــٴًـاO

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : मगर जो ताइब हुए और ईमान लाए और अच्छे काम किये तो येह लोग जन्नत में जाएंगे और इन्हें कुछ नुक़्सान न दिया जाएगा। (پ۱۶،مریم:۶۰)

(6) अ़ज़ाबे जहन्नम से रिहाई :

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है :

اَلَّذِيْنَ يَحْمِلُوْنَ الْعَرْشَ وَمَنْ حَوْلَهٗ يُسَبِّحُوْنَ بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَيُؤْمِنُوْنَ بِهٖ وَيَسْتَغْفِرُوْنَ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْاۚ

رَبَّنَا وَسِعْتَ كُلَّ شَيْءٍ رَّحْمَةً وَّعِلْمًا فَاغْفِرْ لِلَّذِيْنَ تَابُوْا وَاتَّبَعُوْا سَبِيْلَكَ وَقِهِمْ عَذَابَ الْجَحِيْمِ رَبَّنَا

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : वोह जो अ़र्श उठाते हैं और जो उस के गिर्द हैं अपने रब्ब की ता'रीफ़ के साथ उस की पाकी बोलते और उस पर ईमान लाते और मुसलमानों की मग़फ़िरत मांगते हैं ऐ रब्ब हमारे तेरे रह़मत व इ़ल्म में हर चीज़ की समाई है तू उन्हें बख़्श दे जिन्हों ने तौबा की और तेरी राह पर चले और उन्हें दोज़ख़ के अ़ज़ाब से बचा ले ऐ हमारे रब्ब।"

(پ۲۴،المؤمن:۷،۸)

तौबा में ताख़ीर की वुजूहात और इन का हल

प्यारे इस्लामी भाइयो !

तौबा की तमाम तर अहम्मिय्यत और फ़ज़ाइल के बा वुजूद बा'ज़ बद नसीब नफ़्सो शैतान के बहकावे में आ कर तौबा करने में टाल मटोल से काम लेते हैं। इस की चन्द वुजूहात और इन का हल पेशे ख़िदमत है।

पहली वजह : गुनाहों के अन्जाम से ग़ाफ़िल रहना

गुनाहों के अन्जाम से ग़ाफ़िल होना भी तौबा की राह में रुकावट बन जाता है। शायद इस की वजह येह है कि इन्सान को जिस अ़ज़ाब से डराया गया है वोह इस की निगाहों से औझल है जब कि इस की नफ़्सानी ख़्वाहिशात का नतीजा फ़ौरी तौर पर इस के सामने आ जाता है और येह इन्सान का फ़ित्री तक़ाज़ा है कि येह ताख़ीर से वुक़ूअ़ पज़ीर होने वाली चीज़ की निस्बत फ़ौरी तौर पर ह़ासिल होने वाली शै की त़रफ़ बहुत जल्द मुतवज्जेह होता है। मषलन ज़िना करने वाला इस से फ़ौरी तौर पर ह़ासिल होने वाली लज़्ज़त की त़रफ़ माइल हो जाता है और इस की उख़रवी सज़ा के बारे में सोचने की भी ज़हमत गवारा नहीं करता।

इस का ह़ल

ऐसा शख़्स ग़ौर करे कि अगर्चे येह अ़ज़ाबात मेरी निगाहों से औझल सही लेकिन हैं तो यक़ीनी, कितने ही दुन्यावी फ़वाइद ऐसे हैं जिन्हें मैं मुस्तक़बिल में होने वाले नुक़्सान की वजह से छोड़ देता हूं मषलन कोई ग़ैर मुस्लिम डॉक्टर येह कह दे कि तुम्हें दिल का मरज़ है लिहाज़ा चिकनाई वाली चीज़ें मषलन पराठा, समोसे, पकोड़े वग़ैरा खाना बिल्कुल तर्क कर दो वरना तुम्हारी तक्लीफ़ में इज़ाफ़ा हो

जाएगा तो मैं महज़ एक डॉक्टर की बात पर ए'तिबार कर के आयन्दा नुक़्सान से बचने के लिये इन अश्या को इन की तमाम तर लज़्ज़त के बा वुजूद छोड़ देता हूं तो क्या येह नादानी नहीं है कि मैं ने एक बन्दे के डराने पर अपनी लज़्ज़तों को छोड़ दिया लेकिन तमाम काइनात के ख़ालिक़ عَزَّوَجَلَّ के वा'दए अ़ज़ाब को सच्चा जानते हुए अपने नफ़्स की नाजाइज़ ख़्वाहिशात को तर्क नहीं करता। इस अन्दाज़ से ग़ौरो फ़िक्र करने की बरकत से मज़कूरा रुकावट दूर हो जाएगी और तौबा करने में कामयाबी नसीब होगी। اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ

تُوْبُوْا اِلَی اللّٰہ (या'नी **अल्लाह** तआ़ला की बारगाह में तौबा करो।)

اَسْتَغْفِرُاللّٰہ (मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में तौबा करता हूं।)

दूसरी वजह : दिल पर गुनाहों की लज़्ज़त का ग़लबा

बा'ज़ अवक़ात इन्सान के दिलो दिमाग़ पर मुख़्तलिफ़ गुनाहों मषलन ज़िना, शराब नोशी, बद निगाही, ना महरम औ़रतों से हंसी मज़ाक़, फ़िल्म बीनी वग़ैरा की लज़्ज़त का इस क़दर ग़लबा हो जाता है कि वोह इन गुनाहों को छोड़ने का सोच भी नहीं सकता। इन गुनाहों के बिग़ैर उसे अपनी ज़िन्दगी बहुत उदास और वीरान महसूस होती है, यूं वोह तौबा से महरूम रहता है।

इस का ह़ल :

इस क़िस्म की सूरते ह़ाल से दोचार शख़्स इस त़रह़ सोचो बिचार करे कि जब मैं ज़िन्दगी के मुख़्तसर अय्याम में इन लज़्ज़तों को नहीं छोड़ सकता तो मरने के बा'द हमेशा हमेशा के लिये लज़्ज़तों (या'नी जन्नत की ने'मतों) से महरूमी कैसे गवारा करूंगा? जब मैं सब्र की आज़माइश बर्दाश्त नहीं कर सकता तो नारे जहन्नम की तक्लीफ़ किस त़रह़ बर्दाश्त करूंगा? इन गुनाहों में लज़्ज़त यक़ीनन है लेकिन

इन का अन्जाम त़वील ग़म का सबब है, जैसा कि किसी बुज़ुर्ग ने इरशाद फ़रमाया : "कभी लज़्ज़त की वजह से गुनाह न करो कि लज़्ज़त जाती रहेगी लेकिन गुनाह तुम्हारे ज़िम्मे बाक़ी रह जाएगा और कभी मशक़्क़त की वजह से नेकी को तर्क न करो कि मशक़्क़त का अषर ख़त्म हो जाएगा लेकिन नेकी तुम्हारे नामए आ'माल में महफ़ूज़ रहेगी।"

اِنْ شَآءَاللّٰہ عزوجل इस अन्दाज़ से ग़ौरो फ़िक्र करने की बरकत से मज़कूरा रुकावट दूर हो जाएगी और तौबा करने में कामयाबी नसीब होगी। जब ऐसा शख़्स नेकियों की वजह से ह़ासिल होने वाले सुकूने क़ल्ब को मुलाह़ज़ा करेगा तो गुनाहों की लज़्ज़त को भूल जाएगा जैसा कि एक शख़्स जिसे दाल बड़ी पसन्द थी और वोह किसी दूसरे खाने ह़त्ता कि गोश्त को भी ख़ात़िर में न लाता था। उस का दोस्त उसे मुर्ग़ी खाने की दा'वत देता लेकिन वोह येह कह कर उस दा'वत को ठुकरा देता कि इस दाल में जो लज़्ज़त है किसी और खाने में कहां? आख़िरे कार एक दिन जब उस के दोस्त ने उसे मुर्ग़ी खाने की दा'वत दी तो उस ने सोचा कि आज मुर्ग़ी भी खा कर देख लेते हैं कि इस का ज़ाइक़ा कैसा है और मुर्ग़ी खाने लगा। जब उस ने पहला लुक़मा मुंह में रखा तो उसे इतनी लज़्ज़त महसूस हुई कि अपनी पसन्दीदा दाल को भूल गया और कहने लगा : "हटाओ इस दाल को, अब मैं मुर्ग़ी ही खाया करूंगा।" बिला तशबीह जब तक कोई शख़्स महज़ गुनाहों की लज़्ज़त में मुब्तला और नेकियों के सुकून से ना आशना होता है, उसे येह गुनाह ही रोनक़े ज़िन्दगी महसूस होते हैं लेकिन जब उसे नेकियों का नूर ह़ासिल हो जाता है तो वोह गुनाहों की लज़्ज़त को भूल जाता है और नेकियों के ज़रीए सुकूने क़ल्ब का मुतलाशी हो जाता है।

تُوْبُوْا اِلَی اللّٰہ! (या'नी **अल्लाह** तआ़ला की बारगाह में तौबा करो।)

اَسْتَغْفِرُ اللّٰہ (मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में तौबा करता हूं।)

तीसरी वजह : त़वील अ़र्सा ज़िन्दा रहने की उम्मीद

तौबा में ताख़ीर का एक सबब येह भी होता है कि नफ़्सो शैत़ान इस त़रह़ इन्सान का ज़ेह्न बनाते हैं कि अभी तो बड़ी उ़म्र पड़ी है बा'द में तौबा कर लेना ... या... अभी तुम जवान हो बुढ़ापे में तौबा कर लेना ... या... नोकरी से रीटायर होने के बा'द तौबा कर लेना। चुनान्चे येह "अ़क़्ल मन्द" नफ़्सो शैत़ान के मश्वरे पर अ़मल करते हुए तौबा से महरूम रहता है।

इस का ह़ल :

ऐसे शख़्स को इस त़रह़ ग़ौर करना चाहिये की जब मौत का आना यक़ीनी है और मुझे अपनी मौत के आने का वक़्त भी मा'लूम नहीं तो तौबा जैसी सआ़दत को कल पर मौक़ूफ़ करना नादानी नहीं तो और क्या है? जिस गुनाह को छोड़ने पर आज मेरा नफ़्स तय्यार नहीं हो रहा कल इस की आ़दत पुख़्ता हो जाने पर मैं इस से अपना दामन किस त़रह़ बचाऊंगा? और इस बात की भी क्या ज़मानत है कि मैं बुढ़ापे में पहुंच पाऊंगा या नोकरी से रीटायर होने तक मैं ज़िन्दा रहूंगा? ह़दीष में है कि "तौबा में ताख़ीर करने से बचो क्यूंकि मौत अचानक आ जाती है।" (الترغیب والترہیب، کتاب التوبۃ والزھد، باب الترغیب فی التوبۃ...الخ، رقم ۱۸، ج ۴، ص ۴۸)

फिर मौत तो किसी ख़ास उ़म्र की पाबन्द नहीं है, बच्चा हो या बुढ़ा, जवान हो या उधेड़ उ़म्र येह बिला इम्तियाज़ सब को ज़िन्दगी की रौनक़ों के बीच से उठा कर क़ब्र के गढ़े में पहुंचा देती है, येह वोह है कि जब उस के आने का वक़्त आ जाए तो कोई ख़ुशी या ग़म, कोई मसरूफ़िय्यत या किसी क़िस्म के अधूरे काम उस की राह में रुकावट नहीं बन सकते, एक दिन मुझे भी मौत आएगी और मुझे ज़ेरे ज़मीन दफ़्न होना पड़ेगा, अगर मैं बिग़ैर तौबा के मर गया तो मुझे कितनी ह़सरत व नदामत का सामना करना पड़ेगा, अभी मोहलत मुयस्सर है लिहाज़ा मुझे फ़ौरन तौबा कर लेनी चाहिये।

इस अन्दाज़ से ग़ौरो फ़िक्र करने की बरकत से मज़कूरा रुकावट दूर हो जाएगी और तौबा करने में कामयाबी होगी। اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ

تُوْبُوْا اِلَی اللّٰہ! (या'नी अल्लाह तआ़ला की बारगाह में तौबा करो।)

اَسْتَغْفِرُ اللّٰہ (मैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में तौबा करता हूं।)

चौथी वजह : रह़मते इलाही के बारे में धोके का शिकार होना

हमारे मुआ़शरे में इस क़िस्म के लोग भी ब कषरत पाए जाते हैं कि जब उन्हें गुनाहों से तौबा की तरग़ीब दी जाए तो इस क़िस्म के जुम्ले बोल कर ला जवाब करने की कोशिश करते हैं कि : "अल्लाह तआ़ला बड़ा ग़फ़ूर व रह़ीम है, हमें उस की रह़मत पर भरोसा है, वोह हमें अ़ज़ाब नहीं देगा" और तौबा पर आमादा नहीं होते।

इस का ह़ल :

ऐसों की ख़िदमत में गुज़ारिश है कि अल्लाह तआ़ला के रह़ीमो करीम होने में किसी मुसलमान को शको शुबा नहीं हो सकता लेकिन जिस त़रह़ येह दोनों उस की सिफ़ात हैं इसी त़रह़ क़ह्हार और जब्बार होना भी रब्ब عَزَّوَجَلَّ की सिफ़ात हैं और येह बात भी कुरआनो ह़दीष से षाबित है कि कुछ न कुछ मुसलमान जहन्नम में भी जाएंगे तो अब आप ही बताइये कि इस बात की क्या ज़मानत है कि वोह मुसलमान ग़ज़बे इलाही عَزَّوَجَلَّ का शिकार हों और जहन्नम में जाएं लेकिन आप पर रह़मते इलाही عَزَّوَجَلَّ की छमाछम बरसात हो और आप को दाख़िले जन्नत किया जाए? इस सिलसिले में हमारे अकाबिरीन का त़र्ज़े अ़मल मुलाह़ज़ा हो :

अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : "अगर आवाज़ दी जाए कि एक शख़्स के सिवा सब जहन्नम में चले जाएं तो मुझे उम्मीद है कि वोह (या'नी

जहन्नम में न जाने वाला) शख़्स में होऊंगा और अगर ए'लान किया जाए कि एक आदमी के इलावा सब जन्नत में दाख़िल हो जाएं तो मुझे ख़ौफ़ है कि कहीं वोह (या'नी जन्नत में दाख़िले से महरूम रह जाने वाला) मैं न होऊं।" (حلیۃ الاولیاء، ذکر الصحابۃ من المہاجرین، رقم ۱۴۲، ج ۱، ص ۸۹)

अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अपने साह़िबज़ादे से फ़रमाया : "ऐ बेटे ! **अल्लाह** तआ़ला से ऐसा **ख़ौफ़** रखो कि तुम्हें गुमान होने लगे कि अगर तुम तमाम अहले ज़मीन की नेकियां उस की बारगाह में पेश करो तो वोह इन्हें क़बूल न करे और **अल्लाह** तआ़ला से ऐसी उम्मीद रखो कि तुम समझो कि अगर सब अहले ज़मीन की बुराइयां ले कर उस की बारगाह में जाओगे तो भी तुम्हें बख़्श देगा।" (احیاء العلوم، کتاب الخوف والرجاء، باب بیان ان الافضل ھو غلبۃ الخوف...الخ، ج ۴، ص ۲۰۲)

दियानतदारी से सोचिये कि रह़मते इलाही (عَزَّوَجَلَّ) पर इस क़दर यक़ीन का इज़हार कहीं सामने वाले को ख़ामोश करवाने के लिये तो नहीं है ? अगर आप का यक़ीन इतना ही कामिल है तो क्या आप अपना तमाम मालो दौलत, घरबार ग़रीबों में तक़्सीम करने के बा'द इस बात के मुन्तज़िर होने को तय्यार होंगे कि **अल्लाह** तआ़ला अपनी रह़मत के सदक़े आप को ज़मीन में मदफ़ून ख़ज़ाने का पता बता देगा .. या .. डाकूओं की आमद की इत्तिलाअ़ होने पर आप अपने घर में मौजूद तमाम रूपिया और ज़ेवरात येह सोच कर सह़न में ढेर कर देने की हिम्मत करेंगे कि **अल्लाह** तआ़ला अपने फ़ज़्ल से डाकूओं को इस की त़रफ़ से ग़ाफ़िल कर देगा या उन्हें अन्धा कर देगा और इस त़रह़ आप लुट जाने से मह़फ़ूज़ रहेंगे ? अगर इन सुवालों का जवाब नफ़ी में हो तो अब आप का यक़ीने कामिल कहां रुख़्सत हो गया ? ख़ुदारा ! नफ़्सो शैत़ान के धोके से अपनी जान छुड़ाइये कि गुनाह कर के तौबा किये बिग़ैर मग़फ़िरत का उम्मीदवार बनने वाले

को हदीषे नबवी में अहमक़ क़रार दिया गया है, चुनान्चे सरवरे आलम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "समझदार वोह शख़्स है जो अपना मुहासबा करे और आख़िरत की बेहतरी के लिये नेकियां करे और अहमक़ वोह है जो अपने नफ़्स की ख़्वाहिशात की पैरवी करे और **अल्लाह** तआला से इन्आमे आख़िरत की उम्मीद रखे ।" (المسند احمد بن حنبل، حدیث شداد بن اوس، رقم ۱۷۱۲۳، ج ۶، ص ۷۸)

एक और मक़ाम पर इरशाद फ़रमाया : "तुम में से कोई **अल्लाह** तआला के हिल्म व बुर्दबारी से धोके में न पड़ जाए, जन्नत व दोज़ख़ तुम्हारे जूते के तस्मे से भी ज़ियादा क़रीब है, फिर आप ने येह आयात तिलावत फ़रमाई :

فَمَنْ یَّعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ خَیْرًا یَّرَهٗ ؕ وَمَنْ یَّعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ شَرًّا یَّرَهٗ ؕ

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तो जो एक ज़र्रा भर भलाई करे उसे देखेगा और जो एक ज़र्रा भर बुराई करे उसे देखेगा । (پ ۳۰، الزلزال: ۷،۸)

(الترغیب والترہیب، کتاب التوبۃ والزھد، باب الترغیب فی التوبۃ...الخ، ۱۸، ج ۴، ص ۴۸)

उम्मीदे वाषिक़ है कि इस नहज पर सोचने की बरकत से बहुत जल्द तौबा की तौफ़ीक़ मिल जाएगी । اِنْ شَاءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ

تُوْبُوْا اِلَی اللّٰہ! (या'नी **अल्लाह** तआला की बारगाह में तौबा करो ।)

اَسْتَغْفِرُ اللّٰہ (मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में तौबा करता हूं ।)

पांचवीं वजह : बा'दे तौबा इस्तिक़ामत न मिलने का ख़ौफ़

बा'ज़ लोग येह उज़्र पेश करते हैं कि हमें अपने आप पर ए'तिमाद नहीं कि बा'दे तौबा गुनाहों से बच पाएंगे या नहीं ? इस लिये तौबा करने का क्या फ़ाइदा ?

इस का हल

येह सरासर शैतानी वस्वसा है क्यूंकि आप को क्या मा'लूम कि तौबा करने के बा'द आप ज़िन्दा रहेंगे या नहीं ? हो सकता है कि तौबा करते ही मौत आ जाए और गुनाह करने का मौक़अ ही न मिले ।

वक़्ते तौबा आयन्दा के लिये गुनाहों से बचने का पुख़्ता इरादा होना ज़रूरी है, गुनाहों से बचने पर इस्तिक़ामत देने वाली ज़ात तो रब्बुल आ़लमीन की है। अगर इर्तिकाबे गुनाह से महफ़ूज़ रहना न भी नसीब हुवा तो भी कम अज़ कम गुज़श्ता गुनाहों से जान तो छूट जाएगी ! और साबिक़ा गुनाहों का मुआ़फ़ हो जाना मा'मूली बात नहीं। अगर बा'दे तौबा गुनाह हो भी जाए तो दोबारा पुर ख़ुलूस तौबा कर लेनी चाहिये कि हो सकता है येही आख़िरी तौबा हो और इसी पर दुन्या से जाना नसीब हो। ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "शैत़ान ने **अल्लाह** तआ़ला की बारगाह में कहा : "ऐ मेरे रब्ब ! मुझे तेरी इ़ज़्ज़त व जलाल की क़सम ! जब तक बन्दों के जिस्मों में रूह़ बाक़ी है, मैं उन्हें बहकाता रहूंगा।" **अल्लाह** तआ़ला ने जवाबन इरशाद फ़रमाया : "मुझे अपनी इ़ज़्ज़तो जलाल और बुलन्द मक़ाम की क़सम ! मैं हमेशा उस वक़्त तक उन की मग़फ़िरत करता रहूंगा, जब तक की वोह मुझ से मग़फ़िरत मांगते रहेंगे।"

(المسند للامام احمد بن حنبل، مسند ابی سعید الخدری، رقم ۱۱۲۳، ج ۴، ص ۵۸)

और ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है कि "जब कोई बन्दा गुनाह कर लेता है और फिर कहता है कि "ऐ मौला ! मैं ने गुनाह कर लिया, मुझे मुआ़फ़ कर दे।" तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है : "मेरा बन्दा जानता है कि उस का कोई रब्ब (عَزَّوَجَلَّ) है जो गुनाह मुआ़फ़ भी करता है और इस पर पकड़ भी लेता है, (ऐ फ़िरिश्तो ! गवाह हो जाओ कि) मैं ने अपने बन्दे को बख़्श दिया।" फिर जितना रब्ब عَزَّوَجَلَّ चाहता है बन्दा ठहरा रहता है, इस के बा'द फिर कोई गुनाह कर लेता है, फिर अ़र्ज़ करता है : "या इलाही عَزَّوَجَلَّ ! मैं ने फिर गुनाह कर लिया, बख़्श दे।" तो रब्बे करीम عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है कि मेरा येह

बन्दा जानता है कि इस का कोई रब्ब (عَزَّوَجَلَّ) है जो गुनाह पर पकड़ भी लेता है और मुआ़फ़ भी कर देता है, (ऐ फिरिश्तो ! गवाह रहना कि) मैं ने अपने बन्दे को बख़्श दिया ।''

फिर जितना रब्ब عَزَّوَجَلَّ चाहे वोह बन्दा ठहरा रहता है और फिर मज़ीद गुनाह कर बैठता है, और दोबारा अ़र्ज़ करता है : ''या रब्बे करीम عَزَّوَجَلَّ मुझे मुआ़फ़ कर दे ।'' तो रब्ब عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है कि मेरा येह बन्दा जानता है कि उस का कोई रब्ब (عَزَّوَجَلَّ) है जो गुनाह मुआ़फ़ भी करता है और इस पर पकड़ भी लेता है। (ऐ फ़िरिश्तो ! गवाह हो जाओ कि) मैं ने अपने बन्दे की बख़्शिश फ़रमा दी, अब जो चाहे करे ।

(صحیح البخاری، کتاب التوحید، رقم ۷۵۰۷، ج۴، ص۵۷۵)

इस अन्दाज़ से ग़ौरो फ़िक्र करने की बरकत से मज़कूरा रुकावट दूर हो जाएगी और तौबा करने में कामयाबी नसीब होगी । اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ

تُوْبُوْا اِلَی اللّٰہ (या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में तौबा करो ।)

اَسْتَغْفِرُاللّٰہ (मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में तौबा करता हूं ।)

छठी वजह :

कष्रते गुनाह की वजह से मायूसी का शिकार हो जाना

बा'ज़ लोग बद क़िस्मती से त़वील अ़र्से तक बड़े बड़े गुनाहों मषलन चोरी, क़त्ल, डाके, दहशत गर्दी वग़ैरा में मुब्तला रहते हैं । शैत़ान इन के दिल में येह बात डाल देता है कि इतने बड़े बड़े गुनाहों के बा'द तुझे मुआ़फ़ी नहीं मिलने वाली...या..अब तेरी बख़्शिश होना मुश्किल है। इल्मे दीन से महरूम येह अफ़राद मायूसी का शिकार हो कर गुनाहों पर मज़ीद दिलैर हो जाते हैं और तौबा से महरूम रहते हैं ।

इस का ह़ल

ऐसे भाइयों से गुज़ारीश है कि **अल्लाह** तआ़ला की रह़मत से मायूस नहीं होना चाहिये, **अल्लाह** तआ़ला ने इरशाद फ़रमाया :

"لَا تَقْنَطُوْا مِنْ رَّحْمَةِ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يَغْفِرُ الذُّنُوْبَ جَمِيْعًا ؕ

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : अल्लाह की रह़मत से नाउम्मीद न हो बेशक **अल्लाह** सब गुनाह बख़्श देता है।" (پ۲۴،الزمر:۵۳)

रह़मते ख़ुदावन्दी किस त़रह़ अपने उम्मीदवार को आग़ोश में लेती है, इस का अन्दाज़ा दर्जे ज़ैल रिवायात से लगाइये.....

मक्की मदनी सरकार صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ و اٰلہٖ وسلَّم ने फ़रमाया : ह़क़ तआ़ला अपने बन्दों पर इस से कहीं ज़ियादा मेहरबान है, जितना कि एक मां अपने बच्चे पर शफ़्क़त करती है।"

(صحیح مسلم،کتاب التوبۃ،باب فی سعۃ رحمۃ اللہ تعالٰی،رقم ۲۷۵۴،ص۱۴۷۲)

नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ و اٰلہٖ وسلَّم ने फ़रमाया : "**अल्लाह** तआ़ला की सो रह़मतें हैं निनानवे रह़मतें उस ने क़ियामत के लिये रखी हैं और दुन्या में फ़क़त़ एक रह़मत ज़ाहिर फ़रमाई है। सारी मख़्लूक़ के दिल इसी एक रह़मत के बाइ़ष रह़ीम हैं। मां की शफ़्क़त व मह़ब्बत अपने बच्चे पर और जानवरों की अपने बच्चे पर ममता, इसी रह़मत के बाइ़ष है। क़ियामत के दिन उन निनानवे रह़मतों के साथ इस एक रह़मत को जम्अ़ कर के मख़्लूक़ पर तक़्सीम किया जाएगा, और हर रह़मत आस्मानो ज़मीन के त़बक़ात के बराबर होगी और उस रोज़ सिवाए अज़ली बदबख़्त के और कोई तबाह न होगा।"

(کنز العمال،کتاب التوبۃ،رقم ۱۰۴۰۰،ج۴،ص۱۰۷)

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि दो शख़्सों को जहन्नम से बाहर लाया जाएगा। ह़क़ तआ़ला इरशाद फ़रमाएगा : "जो अ़ज़ाब तुम ने देखा वोह तुम्हारे ही अ़मलों के सबब से था, मैं अपने बन्दों पर ज़ुल्म नहीं करता हूं।" फिर इन को दोबारा जहन्नम में डाले जाने का हुक्म दिया जाएगा। इन में से एक शख़्स जल्दी जल्दी दोज़ख़ की त़रफ़ जाएगा और कहता जाएगा कि

"मैं गुनाहों के बोझ से इतना डर गया हूं कि अब इस हुक्म को पूरा करने में कोताही नहीं कर सकता।"

और दूसरा कहेगा कि "या इलाही عَزَّوَجَلَّ मैं नेक गुमान रखता था और मुझे उम्मीद थी कि एक मरतबा दोज़ख़ से निकालने के बा'द दोबारा दोज़ख़ में डालना तेरी रह़मत गवारा न करेगी।" तब **अल्लाह** तआ़ला की रह़मत जोश में आएगी और इन दोनों को जन्नत में जाने का हुक्म दे दिया जाएगा। (ترمذی، کتاب صفۃ الجہنم، جلد۴، ص۲۶۹ بتغیر)

प्यारे इस्लामी भाइयो! इन्सान से चाहे कितने ही गुनाह क्यूं न हो जाएं लेकिन जब वोह नादिम हो कर तौबा के लिये बारगाहे इलाही عَزَّوَجَلَّ में ह़ाज़िर हो जाए तो उस के गुनाह मुआ़फ़ कर दिये जाते हैं चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि रह़मते आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया: "अगर तुम गुनाह करते रहो यहां तक कि वोह आस्मान तक पहुंच जाएं फिर तुम तौबा करो तब भी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम्हारी तौबा क़बूल फ़रमा लेगा।"

(سنن ابن ماجہ، کتاب التوبۃ، باب ذکر التوبہ، رقم۴۲۴۸، ج۴، ص۴۹۰)

जब कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया जब तक बन्दे की रूह ह़ल्क़ूम तक न पहुंच जाए **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ बन्दे की तौबा क़बूल फ़रमा लेता है। (سنن ابن ماجہ، کتاب الزھد، باب ذکر التوبۃ، رقم۴۲۵۳، ج۴، ص۴۹۲)

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया तुम से पहले एक शख़्स ने निनानवे क़त्ल किये थे। जब उस ने अहले ज़मीन में सब से बड़े आ़लिम के बारे में पूछा तो उसे एक राहिब के बारे में बताया गया। वोह उस के पास पहुंचा और उस से कहा: "मैं ने निनानवे क़त्ल किये हैं क्या मेरे लिये तौबा की कोई सूरत है?" राहिब ने कहा: नहीं "उस

ने उसे भी क़त्ल कर दिया और सो का अ़दद पूरा कर लिया। फिर उस ने अहले ज़मीन में सब से बड़े आ़लिम के बारे में सुवाल किया तो उसे एक आ़लिम के बारे में बताया गया तो उस ने उस आ़लिम से कहा :" मैं ने सो क़त्ल किये हैं क्या मेरे लिये तौबा की कोई सूरत है?" उस ने कहा "हां ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और तौबा के दरमियान क्या चीज़ रुकावट बन सकती है? फुलां फुलां अ़लाक़े की त़रफ़ जाओ वहां कुछ लोग **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इबादत करते हैं उन के साथ मिल कर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इबादत करो और अपने अ़लाक़े की त़रफ़ वापस न आना क्यूंकि येह बुराई की सर ज़मीन है।"

वोह क़ातिल उस अ़लाक़े की त़रफ़ चल दिया जब वोह आधे रास्ते में पहुंचा तो उसे मौत आ गई। रह़मत और अ़ज़ाब के फ़िरिश्ते उस के बारे में बह़ष करने लगे। रह़मत के फ़िरिश्ते कहने लगे : "येह तौबा के दिली इरादे से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ आया था।" और अ़ज़ाब के फ़िरिश्ते कहने लगे कि इस ने कभी कोई अच्छा काम नहीं किया। तो उन के पास एक फ़िरिश्ता इन्सानी सूरत में आया और उन्हों ने उसे षालिष मुक़र्रर कर लिया। उस फ़िरिश्ते ने उन से कहा : "दोनों त़रफ़ की ज़मीनों को नाप लो येह जिस ज़मीन के क़रीब होगा उसी का ह़क़दार है।" जब ज़मीन नापी गई तो वोह उस ज़मीन के क़रीब था जिस के इरादे से वोह अपने शहर से निकला था तो रह़मत के फ़िरिश्ते उसे ले गए। (کتاب التوابین، توبۃ من قتل مائۃ نفس، ص ۸۵)

उम्मीद है इन सुत़ूर के मुत़ालए के बा'द मज़्कूरा इस्लामी भाई भी तौबा करने की सआ़दत पा लेंगे। اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ

تُوبُوْا اِلَی اللہ! (या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में तौबा करो।)

اَسْتَغْفِرُ اللہ (मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में तौबा करता हूं।)

सातवीं वजह : बुरी सोहबत में मुब्तला होना

बा'ज़ भाइयों का उठना बैठना ऐसे लोगों के साथ होता है जो "हम तो डूबे हैं सनम तुझे भी ले डूबेंगे" के मिस्दाक़ होते हैं। चुनान्चे ऐसे लोग न ख़ुद गुनाहों से तौबा करते हैं और न ही अपने दोस्तों में से किसी को तौबा की त़रफ़ माइल होने देते हैं। बल्कि अगर कोई इन की "मह़फ़िल" से ग़ैर ह़ाज़िरी कर के किसी दीनी मह़फ़िल में शिर्कत के लिये चला जाए और दूसरे दिन इन्हें नेकी की दा'वत पेश करे तो उस का ख़ूब मज़ाक़ उड़ाते हैं।

इस का ह़ल :

प्यारे इस्लामी भाइयो ! हर सोह़बत अपना अषर रखती है, प्यारे आक़ा, मक्की मदनी सुल्त़ान, रह़मते आ़लमियान صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इसी त़रफ़ इशारा करते हुए इरशाद फ़रमाया : "अच्छे और बुरे मुसाह़िब की मिषाल, मुश्क उठाने वाले और भट्टी झोंकने वाले की त़रह़ है, कस्तूरी उठाने वाला तुम्हें तोह़फ़ा देगा या तुम उस से ख़रीदोगे या तुम्हें उस से उ़म्दा ख़ुश्बू आएगी, जब कि भट्टी झोंकने वाला या तुम्हारे कपड़े जलाएगा या तुम्हें उस से ना गवार बू आएगी।"

(صحیح مسلم، کتاب البر والصلۃ والآداب، باب استحباب مجالسۃ الصالحین..الخ، رقم ۲۶۲۸، ص۱۴۱۴)

इस लिये हिम्मत कर के पहली फ़ुरसत में बुरी सोह़बत से इजतिनाब करें कि अगर हम ऐसे अफ़राद की सोह़बत इख़्तियार किये रहेंगे जो इर्तिकाबे गुनाह में किसी क़िस्म की शर्म मह़सूस न करें और उन का मत़मए नज़र सिर्फ़ दुन्या हो तो सच्ची तौबा का नसीब होना मह़ज़ एक ख़्वाब है। लिहाज़ा ! नेक सोह़बत इख़्तियार करें कि जब

हमें ऐसे इस्लामी भाइयों की सोहबत मुयस्सर आएगी जो अपने हर फ़े'ल में **अल्लाह** तआ़ला की गिरिफ़्त का ख़याल रखने वाले हों और अ़ज़ाबे जहन्नम के ख़ौफ़ की वजह से इर्तिकाबे गुनाह से बचते हों तो हमारे अन्दर भी इन उ़म्दा अवसाफ़ का ज़ुहूर होना शुरूअ़ हो जाएगा। फिर हम भी जल्वत व ख़ल्वत में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डरने वाले बन जाएंगे और येह ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ हमें साबिक़ा ज़िन्दगी में किये हुए गुनाहों पर तौबा करने की त़रफ़ माइल करेगा। اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ

تُوْبُوْا اِلَی اللّٰہ! (या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में तौबा करो।)

اَسْتَغْفِرُاللّٰہ (मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में तौबा करता हूं।)

आठवीं वजह : अपने बारे में ख़ुश फ़हमी का शिकार होना

बा'ज़ भाई इस ख़ुश फ़हमी का शिकार होते हैं कि हम बहुत पहले तौबा की सआ़दत ह़ासिल कर चुके हैं, लिहाज़ा ! हमें तौबा की ह़ाजत नहीं।

इस का ह़ल :

ऐसे भाइयों को चाहिये कि आयन्दा सफ़्ह़ात में दी गई तौबा की शराइत़ को पढ़े और अपना मुह़ासबा करें कि क्या वाक़ेई हम सच्ची तौबा कर चुके हैं और क्या बा'दे तौबा हम से कोई गुनाह सरज़द नहीं हुवा। उम्मीद है कि इस मुह़ासबे के बा'द मज़्कूरा इस्लामी भाई अपने ख़यालात पर नज़रे षानी करते हुए तौबा की सआ़दत ह़ासिल कर लेंगे। اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ

تُوْبُوْا اِلَی اللّٰہ! (या'नी **अल्लाह** तआ़ला की बारगाह में तौबा करो।)

اَسْتَغْفِرُاللّٰہ (मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में तौबा करता हूं।)

नवीं वजह : किसी फ़ित्ने का शिकार होने के सबब

बा'ज़ भाई तौबा पर आमादा होने और बज़ाहिर कोई रुकावट न होने के बावुजूद तौबा से मह़रूम रहते हैं। इस की बड़ी और ख़ुफ़्या वजह येह होती है कि वोह किसी दुन्यावी ह़ूर की "नाम निहाद

पाकीज़ा महब्बत'' में मुब्तला हो चुके होते हैं, लिहाज़ा ! उन्हें इस बात का ख़ौफ़ होता है कि तौबा करने और मदनी माहोल अपनाने के बा'द उन्हें अपनी मन पसन्द शै से हाथ धोने पड़ेंगे, चुनान्चे वोह तौबा की ख़्वाहिश के बा वुजूद तौबा नहीं कर पाते ।

इस का हल :

इस क़िस्म की आज़माइश में मुब्तला भाइयों को चाहिये कि वोह वक़्ती लज़्ज़त की बजाए इस के नुक़्सानात मषलन माल, वक़्त और सिहूहत की बरबादी, ख़ानदान की बदनामी, नेकियों से महरूमी और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की नाराज़ी वग़ैरा पर निगाह फ़रमाएं और ऐसे आ'माल इख़्तियार करें जिस से दुन्या में भी आ़फ़िय्यत नसीब हो और आख़िरत में कामयाबी मिले। इस आफ़त से छुटकारे के लिये अपने ज़मीर से येह सुवाल करें कि जो जज़्बात मैं किसी की बहन या बेटी के बारे में रखता हूं, अगर कोई दूसरा मेरी बहन या बेटी के बारे में भी ऐसे ख़यालात रखता हो तो क्या मुझे येह गवारा होगा ? इस ज़िम्न में दर्जे ज़ैल हदीषे पाक मुलाहज़ा फ़रमाइयें :

एक नौजवान रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में हाज़िर हुवा और अ़र्ज़ करने लगा ''या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! मुझे ज़िना की इजाज़त दीजिये।'' येह सुनते ही तमाम सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُم जलाल में आ गए और उसे मारना चाहा। रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया कि ''इसे न मारो।''फिर उसे अपने पास बुला कर बिठाया और निहायत नर्मी और शफ़्क़त के साथ सुवाल किया, ''ऐ नौजवान ! क्या तुझे पसन्द है कि कोई तेरी मां से ऐसा फ़े'ल करे ?'' उस ने अ़र्ज़ की : ''मैं इस को कैसे रवा रख सकता हूं ?'' आप ने इरशाद फ़रमाया : ''तो फिर दूसरे लोग तेरे बारे में इसे कैसे रवा रख सकते हैं ?'' फिर आप ने दरयाफ़्त फ़रमाया : ''तेरी बेटी

से अगर इस त़रह़ किया जाए तो तू इसे पसन्द करेगा ?" अ़र्ज़ की : नहीं। फ़रमाया : "अगर तेरी बहन से कोई ऐसी ना शाइस्ता ह़रकत करे तो ?" और अगर तेरी ख़ाला से करे तो ? इसी त़रह़ आप ने एक एक रिश्ते के बारे में सुवाल फ़रमाया और वोह येही कहता रहा कि मुझे पसन्द नहीं और लोग भी रिज़ामन्द नहीं। तब रसूलुल्लाह صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस के सीने पर हाथ रख कर **अल्लाह** तआ़ला की बारगाह में अ़र्ज़ की : "या इलाही عَزَّوَجَلَّ ! इस के दिल को पाक कर दे, इस की शर्मगाह को बचा ले और इस का गुनाह बख़्श दे।" इस के बा'द वोह नौजवान तमाम उ़म्र ज़िना से बेज़ार रहा।

(المسند للامام احمد بن حنبل، حدیث ابی امامۃ الباھلی، رقم ۲۲۲۷۴، ج۸، ص ۲۸۵)

उम्मीद है कि इस तफ़हीम के बा'द मज़्कूरा इस्लामी भाई तौबा करने में देर नहीं करेंगे। اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ

تُوْبُوْا اِلَی اللہ! (या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में तौबा करो।)

اَسْتَغْفِرُ اللّٰہ (मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में तौबा करता हूं।)

दसवीं वजह : दुन्यावी तरक़्क़ी से मह़रूम होने का ख़ौफ़

बा'ज़ भाई इस लिये तौबा की सआ़दत ह़ासिल नहीं कर पाते कि उन्हें मुतवक़्क़ेअ़ त़ौर पर ह़ासिल होने वाली दुन्यावी तरक़्क़ी से मह़रूमी का ख़ौफ़ लाह़िक़ होता है।

इस का ह़ल :

सरकारे दो आ़लम صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "दुन्या की मह़ब्बत तमाम बुराइयों की जड़ है।"

(شعب الایمان، باب فی الزھد وقصر الامل، رقم ۱۰۵۰۱، ج۷، ص ۳۳۸)

लिहाज़ा ! ऐसे इस्लामी भाइयों को ग़ौर करना चाहिये कि आख़िरत के मुक़ाबले में दुन्या को तरजीह़ देना इन्हें सिवाए हलाकत के कुछ न देगा। क्यूंकि ह़दीष में है : "जो शख़्स अपनी दुन्या से

महब्बत करता है तो वोह अपनी आख़िरत को नुक़्सान पहुंचाता है और जो आख़िरत से महब्बत करता है वोह अपनी दुन्या को नुक़्सान पहुंचाता है तो (ऐ मुसलमानो !) फ़ना होने वाली चीज़ (या'नी दुन्या) को छोड़ कर बाक़ी रहने वाली चीज़ (या'नी आख़िरत) को इख़्तियार कर लो ।"

(المسند لامام احمد بن حنبل، حدیث ابی موسی الاشعری، رقم ۱۹۷۱۷، ج۷، ص ۱۲۵)

नीज़ आख़िरत के मुक़ाबले में दुन्या की क्या हैषिय्यत है, इस सिलसिले में फ़रमाने मुस्त़फ़ा صلّی اللہ تعالٰی علیہ و الہٖ وسلّم मुलाहज़ा हो : "**अल्लाह** عزّ وجلّ की क़सम ! दुन्या आख़िरत के मुक़ाबिल ऐसी है जैसे तुम में से कोई अपनी उंगली समुन्दर में डाले फिर देखे कि उंगली कितना पानी ले कर लौटती है ।"

(مشکوٰۃ المصابیح، کتاب الرقاق، رقم الحدیث ۵۱۵۶، ج۳، ص ۱۰۵)

अल्लाह तआ़ला हम सब को सच्ची तौबा की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए । اٰمین بجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلّی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلّم

تُوبُوْا اِلَی اللہ! (या'नी **अल्लाह** عزّ وجلّ की बारगाह में तौबा करो ।)

اَسْتَغْفِرُ اللہ (मैं **अल्लाह** عزّ وجلّ की बारगाह में तौबा करता हूं ।)

ग्यारहवीं वजह : अहले ख़ाना की तन्क़ीद

बा'ज़ भाई तौबा कर के अपना त़र्ज़े ज़िन्दगी बदलना चाहते हैं लेकिन जूं ही वोह कोई अ़मली क़दम उठाते हैं उन के घर वाले आड़े आ जाते हैं और उन्हें इस त़रह़ "समझाते" नज़र आते हैं कि "देखो अभी तो तुम जवान हो बुढ़ापे में दाढ़ी रख लेना अभी तो तुम्हारी शादी भी करनी है अगर तुम किसी दीनी माहोल से वाबस्ता हो गए तो कोई तुम्हें अपनी लड़की नहीं देगा" वग़ैरा वग़ैरा

इस का ह़ल

इस सिलसिले में ज़रा सी हिम्मत की ज़रूरत है, अगर इरादा पुख़्ता हो और निगाह रह़मते इलाही पर हो तो मुश्किल मराह़िल भी

ब आसानी तै हो जाया करते हैं। लिहाज़ा ! घर वालों की तन्क़ीद से हरगिज़ मत घबराएं और न ही इन के डराने पर ख़ौफ़ज़दा हों बल्कि इन से उलझे बिग़ैर गुनाहों को तर्क करने और नेकियों का ज़ख़ीरा जम्अ़ करने का सिलसिला जारी रखें। इस ज़िम्न में शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी مَدَّظِلُّهُ الْعَالِي के अ़त़ा कर्दा "घर में मदनी माह़ोल बनाने के मदनी फूलों" पर अ़मल करना बेह़द मुफ़ीद षाबित होगा।

"घर में मदनी माह़ोल" के पन्द्रह हुरूफ़ की निस्बत से 15 मदनी फूल

1. घर में आते जाते बुलन्द आवाज़ से सलाम करें।
2. वालिद या वालिदा को आता देख कर ता'ज़ीमन खड़े हो जाएं।
3 दिन में कम अज़ कम एक बार इस्लामी भाई वालिद साह़िब का और इस्लामी बहनें मां का हाथ और पाऊं चुमा करें।
4. वालिदैन के सामने आवाज़ धीमी रखें, इन से आंखें हरगिज़ न मिलाएं।
5. इन का सोंपा हुवा हर वोह काम जो ख़िलाफ़े शरअ़ न हो फ़ौरन कर डालें।
6. मां बल्कि घर (और बाहर) के एक दिन के बच्चे को भी आप कह कर ही मुख़ात़िब हों।
7. अपने मह़ल्ले की मस्जिद में इ़शा की जमाअ़त के वक़्त से ले कर दो घन्टे के अन्दर अन्दर सो जाया करें। काश ! तहज्जुद में आंख खुल जाए वरना कम अज़ कम नमाज़े फ़ज्र तो ब आसानी (मस्जिद की पहली सफ़ में बा जमाअ़त) मुयस्सर आए और फिर काम काज में भी सुस्ती न हो।
8. घर में अगर नमाज़ों की सुस्ती, बे पर्दगी, फ़िल्मों ड्रामों और गाने बाजों का सिलसिला हो तो बार बार न टोकें, सब को नर्मी के साथ सुन्नतों भरे बयानात की केसिटें सुनाएं। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ "मदनी" नताइज बर आमद होंगे।

9. घर में कितनी ही डांट बल्कि मार भी पड़े, सब्र सब्र और सब्र कीजिये। अगर आप ज़बान चलाएंगे तो "मदनी माहोल" बनने की कोई उम्मीद नहीं बल्कि मज़ीद बिगाड़ पैदा हो सकता है कि बेजा सख़्ती करने से बसा अवक़ात शैतान लोगों को ज़िद्दी बना देता है। लिहाज़ा गुस्सा, चिड़ चिड़ा पन और झाड़ने वग़ैरा की आदत बिल्कुल ख़त्म कर दें।

10. घर में रोज़ाना (अबवाबे) फ़ैज़ाने सुन्नत का दर्स ज़रूर ज़रूर ज़रूर दें या सुनें।

11. अपने घर वालों की दुन्या व आख़िरत की बेहतरी के लिये दिल सोज़ी के साथ दुआ भी करते रहें कि दुआ मोमिन का हथयार है।

12. सुसराल में रहने वालियां जहां घर का ज़िक्र है वहां सुसराल और जहां वालिदैन का ज़िक्र है वहां सास और सुसर के साथ वोही हुस्ने सुलूक बजा लाएं जब कि कोई मानेअ़ शरई न हो।

13. मसाइलुल कुरआन स. 290 पर है : हर नमाज़ के बा'द ज़ैल में दी हुई दुआ अव्वल व आख़िर दुरूद शरीफ़ के साथ एक बार पढ़ लें اِنْ شَآءَاللّٰہ عزوجل बाल बच्चे सुन्नतों के पाबन्द बनेंगे और घर में मदनी माहोल क़ाइम होगा।

(اَللّٰھُمَّ)رَبَّنَاھَبْ لَنَا مِنْ اَزْوَاجِنَا وَذُرِّیّٰتِنَا قُرَّۃَ اَعْیُنٍ وَّاجْعَلْنَا لِلْمُتَّقِیْنَ اِمَامًا0 (پ۱۹،الفرقان۷۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ हमारे रब्ब हमें दे हमारी बीबियों और हमारी अवलाद से आंखों की ठन्डक और हमें परहेज़गारों का पेशवा बना।

14. नाफ़रमान बच्चा या बड़ा जब सोया हो तो उस के सिरहाने खड़े हो कर ज़ैल में दी हुई आयात सिर्फ़ एक बार इतनी आवाज़ से पढ़ें कि उस की आंख न खुले। (मुद्दत 11 ता 21 दिन)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط بَلْ هُوَ قُرْاٰنٌ مَّجِيْدٌ ۙ فِيْ لَوْحٍ مَّحْفُوْظٍ ۔

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बल्कि वोह कमाल शरफ़ वाला कुरआन है लौहे महफ़ूज़ में) (البروج:۲۱،۲۲)

(अव्वल आख़िर, एक मरतबा दुरूद शरीफ़)

15. नीज़ नाफ़रमान अवलाद को फ़रमां बरदार बनाने के लिये ता हुसूले मुराद नमाज़े फ़ज्र के बा'द आस्मान की त़रफ़ रुख़ कर के "یَاشَهِیْدُ" 21 बार पढ़े (अव्वल व आख़िर, एक बार दुरूद शरीफ़) ।

मदनी इल्तिजा : नाफ़रमानों को फ़रमां बरदार बनाने के लिये अवराद शुरूअ़ करने से क़ब्ल सय्यिदुना इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن के ईसाले षवाब के लिये 25 रूपे की दीनी किताबें तक़्सीम कर दें ।

बारहवीं वजह : शर्मो झिझक

कुछ भाई ऐसे भी होते हैं जिन की तौबा की राह में मज़्कूरा रुकावटों में से कोई रुकावट नहीं होती लेकिन वोह फिर भी येह सोच कर तौबा से महरूम रहते हैं कि तौबा करने के बा'द जब मेरा अन्दाज़े ज़िन्दगी तब्दील होगा मषलन पहले मैं नमाज़ें क़ज़ा कर दिया करता था मगर बा'दे तौबा पांच वक़्त मस्जिद का रुख़ करते दिखाई दूंगा, पहले मैं शेव्ड था बा'दे तौबा मेरे चेहरे पर सुन्नते मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم या'नी दाढ़ी शरीफ़ सजी हुई नज़र आएगी, पहले मैं ख़िलाफ़े सुन्नत लिबास ज़ेबतन करता था मगर बा'दे तौबा मेरे बदन पर सुन्नत के मुत़ाबिक़ लिबास दिखाई देगा, अ़ला हाज़ल क़ियास, ... तो लोग मुझे अ़जीब निगाहों से देखेंगे और मुझे शर्म महसूस होगी ।

इस का ह़ल

इस क़िस्म के "शर्मीले भाइयों" की ख़िदमत में अ़र्ज़ है कि यक़ीनन यक़ीनन येह भी शैत़ानी वस्वसा है । ज़रा सोचिये तो सही कि आज उन लोगों की परवाह करते हुए अगर आप नेकी के रास्ते पर

चलने से कतराते रहे और सुन्नतों से मुंह मोड़ते रहे लेकिन कल जब क़ियामत के दिन सारी मख़्लूक़ के सामने अपना नामए आ'माल पढ़ कर सुनाना पड़ेगा और अगर इस में गुनाह ही गुनाह हुए तो किस क़दर शर्म आएगी। लिहाज़ा ! आख़िरत में शर्मिन्दा होने से बचने के लिये दुन्या की आ़रिज़ी शर्मो झिझक को बालाए ताक़ रखते हुए फ़ौरन तौबा की सआ़दत हासिल कर लेनी चाहिये। **अल्लाह** तआ़ला हमारा हामी व नासिर हो। اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

تُوْبُوْا اِلَی اللّٰہ! (या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में तौबा करो।)

اَسْتَغْفِرُ اللّٰہ (मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में तौबा करता हूं।)

सच्ची तौबा किसे कहते हैं ?

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !

याद रखिये कि ठन्डी आहें भरने.. या.. अपने गालों पर चपत मारने.. या.. अपने नाक और कानों को हाथ लगाने.. या.. अपनी ज़बान दांतों तले दबा लेने..या.. सर हिलाते हुए "तौबा, तौबा, तौबा" की गर्दान करने का नाम तौबा नहीं है बल्कि सच्ची तौबा से मुराद येह है कि बन्दा किसी गुनाह को **अल्लाह** तआ़ला की नाफ़रमानी जान कर इस पर नादिम होते हुए रब्ब عَزَّوَجَلَّ से मुआ़फ़ी तलब करे और आयन्दा के लिये इस गुनाह से बचने का पुख़्ता इरादा करते हुए, इस गुनाह के इज़ाले के लिये कोशिश करे, या'नी नमाज़ क़ज़ा की थी तो अब अदा भी करे, चोरी की थी या रिश्वत ली थी तो बा'दे तौबा वोह माल अस्ल मालिक या उस के वुरषा को वापस करे या मुआ़फ़ करवा ले और इन दोनों (या'नी अस्ल मालिक या वुरषा) के न मिलने की सूरत में अस्ल मालिक की तरफ़ से राहे ख़ुदा में सदक़ा कर दे। **अ़ला हाज़ल क़ियास**

(माख़ूज़ अज़ फ़तावा रज़विय्या, जि. 10, निस्फ़ अव्वल, स. 97)

प्यारे इस्लामी भाइयो !

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से मरवी है कि क़ियामत के दिन कई तौबा करने वाले ऐसे होंगे जिन को गुमान होगा कि वोह तौबा करने वाले हैं, ह़ालांकि वोह तौबा करने वाले नहीं हैं। या'नी तौबा का त़रीक़ा इख़्तियार नहीं किया, नदामत नहीं हुई, गुनाहों से रुक जाने का अ़ज़्म नहीं किया, जिन पर ज़ुल्म किया है उन से मुआ़फ़ नहीं कराया और न उन को ह़क़ दिया बशर्तेकि मुमकिन था, अलबत्ता ! जिस ने कोशिश की और नाकामी की सूरत में अहले ह़ुक़ूक़ के लिये इस्तिग़फ़ार किया, तो उम्मीद है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अहले ह़ुक़ूक़ को राज़ी कर के इसे छुड़ा लेगा।'' (مکاشفۃ القلوب، الباب اسابع عشر فی بیان الامانۃ والتوبۃ، ص۶۲)

तौबा की शराइत़

शर्ह़े फ़िक़्हे अक्बर में है : ''मशाइख़े उ़ज़्ज़ाम ने फ़रमाया कि तौबा के तीन अरकान हैं (1) माज़ी पर नदामत। (2) ह़ाल में इस गुनाह को छोड़ देना। (3) और मुस्तक़्बिल में इस त़रफ़ न लौटने का पुख़्ता इरादा। येह शराइत़ उस वक़्त होंगी कि जब येह तौबा ऐसे गुनाहों से हो कि जो तौबा करने वाले और **अल्लाह** तआ़ला के दरमियान हों जैसे शराब पीना।''

और अगर **अल्लाह** तआ़ला के ह़ुक़ूक़ की अदाएगी में कमी पर तौबा की है जैसे नमाज़, रोज़े और ज़कात तो इन की तौबा येह है कि अव्वलन इन में कमी पर नादिम व शर्मिन्दा हो फिर इस बात का पक्का इरादा करे कि आयन्दा इन्हें फ़ौत न करेगा अगर्चे नमाज़ को उस के वक़्त से मुअख़्ख़र करने के साथ हो फिर तमाम फ़ौतशुदा को क़ज़ा करे।

और अगर तौबा उन गुनाहों पर थी कि जिन का तअ़ल्लुक़ बन्दों से है, पस अगर वोह तौबा मज़ालिमे अम्वाल से थी तो येह तौबा

उन चीज़ों के साथ साथ कि जिन को हम हुक़ूक़ुल्लाह में पहले बयान कर चुके हैं, माल की ज़िम्मेदारी से निकलने और मज़्लूम को राज़ी करने पर मौक़ूफ़ होगी, इस सूरत के साथ कि या तो इन से इस माल को ह़लाल करवा ले (या'नी मुआ़फ़ करवा ले) या इन्हें लौटा दे, या (अगर वोह न हों तो) उन्हें (दे कि) जो इन के क़ाइम मक़ाम हों जैसे वकील या वारिष वग़ैरा।

और क़िन्या में है कि: "एक शख़्स पर कुछ ऐसे लोगों के दैन मषलन ग़सब शुदा चीज़, मज़ालिम और दीगर जराइम हैं कि जिन को येह नहीं पहचानता, तो अदाएगी की निय्यत से दियून की मिक़्दार माल फ़क़ीरों पर सदक़ा करे, (फिर) अगर वोह इन्हें **अल्लाह** तआ़ला की बारगाह में तौबा करने के बा'द पाए तो इन से मुआ़फ़ी त़लब करे।"

और अगर तौबा ऐसे मज़ालिम से हो कि जो ए'राज़ (या'नी किसी की इ़ज़्ज़त से तअ़ल्लुक़ रखते) हैं जैसे ज़िना की तोहमत लगाना और ग़ीबत, तो इन की तौबा में हुक़ूक़ुल्लाह के सिलसिले में बयान क़र्दा चीज़ों के इलावा येह है कि जिन पर तोह्मत लगाई या जिन की ग़ीबत की उन्हें इस बात की ख़बर दे कि जो इस ने उन के बारे में कही थी और (फिर) उन से मुआ़फ़ी त़लब करे। फिर अगर येह दुश्वार हो तो इरादा करे कि जब भी उन को पाएगा तो मुआ़फ़ी त़लब करेगा। फिर अगर येह आ़जिज़ आ जाए बईं त़ौर पर मज़्लूम मर गया तो उसे चाहिये कि **अल्लाह** तआ़ला से मग़्फ़िरत त़लब करे और उस के फ़ज़्लो करम से उम्मीद रखे कि वोह इस के मद्दे मुक़ाबिल को अपने एह़सान के ख़ज़ानों के ज़रीए, इस से राज़ी फ़रमा देगा, क्यूंकि वोह जव्वाद, करीम, रऊफ़ और रह़ीम है।" (फ़तावा रज़विय्या, जि. 10, निस्फ़ अव्वल, स. 97)

मशाइख़े किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلام की तसरीह़ के मुत़ाबिक़ तौबा के लिये चार उमूर का होना ज़रूरी है ।

(1) पहले उस गुनाह का इर्तिकाब हो चुका हो,

(2) उस गुनाह को **अल्लाह** तआ़ला की नाफ़रमानी समझ कर उस पर नादिम हो,

(3) उसे आयन्दा न करने का पुख़्ता इरादा किया जाए, ..और...

(4) उस गुनाह की तलाफ़ी करे ।

इन शराइत़ की तफ़्सील

﴾1﴿ पहले उस गुनाह का इर्तिकाब हो चुका हो :

या'नी तौबा से माज़ी में किये गए गुनाह मुआ़फ़ होंगे न कि ज़मानए मुस्तक़बिल में इर्तिकाबे गुनाह की इजाज़त मिलेगी, लिहाज़ा ! आयन्दा ज़माने में गुनाह करने का इरादा रखते हुए इस पर पेशगी तौबा करना, फिर गुनाह करना बहुत बड़ी जुरअत है, क्या मा'लूम कि इन्सान गुनाह करने के बा'द तौबा करने के लिये ज़िन्दा रहेगा भी या नहीं ?

﴾2﴿ उस गुनाह को अल्लाह तआ़ला की नाफ़रमानी समझ कर उस पर नादिम हो :

तौबा गुनाह को छोड़ने का नाम है और किसी चीज़ को छोड़ना उसी वक़्त मुमकिन है जब उस की पहचान हो, लिहाज़ा ! सब से पहले गुनाहों की मा'रिफ़त का होना बेह़द ज़रूरी है क्यूंकि जब तक बन्दा गुनाह को गुनाह नहीं समझेगा उस से तौबा कैसे करेगा ? गुनाहों की मा'रिफ़त के लिये सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ की तस्नीफ़े लत़ीफ़ "इह़याउल उ़लूम" और अ़ल्लामा शम्सुद्दीन ज़ह़बी عَلَيْهِ رَحْمَةُ की तालीफ़ "किताबुल कबाइर" मक्तबतुल मदीना की शाएअ़ कर्दा किताब "जहन्नम में ले जाने वाले आ'माल" और "रसाइले अमीरे अहले सुन्नत مَدَّظِلُّهُ الْعَالِي" का मुत़ालआ़ बेह़द मुफ़ीद है ।

नीज़ तौबा के लिये येह भी ज़रूरी है कि किसी गुनाह को इस लिये छोड़े कि येह **अल्लाह** तआ़ला की नाफ़रमानी है, लिहाज़ा ! अगर किसी शख़्स के ख़ौफ़ या त़बई नुक़्सान की वजह से किसी गुनाह को तर्क किया मषलन जिगर के अमराज़ की वजह से शराब नोशी तर्क की या बदनामी के ख़ौफ़ से ज़िना करना छोड़ दिया तो ऐसा शख़्स ताइब नहीं कहलाएगा और न ही उसे तौबा का षवाब और फ़ज़ाइल ह़ासिल होंगे अगर्चे **गुनाह को छोड़ना भी एक सआ़दत है।**

अब रहा येह सुवाल कि नदामते क़ल्बी किस त़रह़ ह़ासिल हो क्यूंकि क़ल्बी जज़्बात पर तो इन्सान का इख़्तियार नहीं ? इस के लिये दर्जे ज़ैल गुज़ारिशात पर अ़मल करें,.....

(1) **अल्लाह** तआ़ला की ने'मतों पर इस त़रह़ ग़ौरो फ़िक्र करें कि "उस ने मुझे करोड़हा ने'मतों से नवाज़ा मषलन मुझे पैदा किया,.... मुझे ज़िन्दगी बाक़ी रखने के लिये सांसें अ़त़ा फ़रमाईं,.... चलने के लिये पाऊं दिये..... छूने के लिये हाथ दिये..... देखने के लिये आंखें अ़त़ा फरमाईं..... सुनने के लिये कान दिये..... सूंघने के लिये नाक दी....., बोलने के लिये ज़बान अ़त़ा की और करोड़हा ऐसी ने'मतें अ़त़ा फ़रमाईं जिन पर आज तक मैं ने कभी ग़ौर नहीं किया।" फिर अपने आप से यूं सुवाल करे : "क्या इतने एह़सानात करने वाले रब्ब तआ़ला की नाफ़रमानी करना मुझे ज़ैब देता है ?"

(2) गुनाहों के अन्जाम के त़ौर पर जहन्नम में दिये जाने वाले अ़ज़ाबे इलाही की शिद्दत को अपने दिलो दिमाग़ में ह़ाज़िर करें मषलन सरवरे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि

"दोज़ख़ियों में सब से हलका अ़ज़ाब जिस को होगा उसे आग के जूते पहनाए जाएंगे जिन से उस का दिमाग़ खोलने लगेगा।"

(صحیح مسلم، کتاب الایمان، باب اھون اھل النار عذابا، رقم ۴۶۷، ص ۱۳۴)

"अगर उस ज़र्द पानी का एक डोल जो दोज़ख़ियों के ज़ख़्मों से जारी होगा दुन्या में डाल दिया जाए तो दुन्या वाले बदबूदार हो जाएं।"

(جامع الترمذی، کتاب صفۃ جھنم، باب ماجاء فی صفۃ شراب اھل النار، رقم ۲۵۹۳، ج ۴، ص ۲۶۳)

"दोज़ख़ में बख़्ती ऊंट के बराबर सांप हैं, येह सांप एक मरतबा किसी को काटे तो उस का दर्द और ज़हर चालीस बरस तक रहेगा और दोज़ख़ में पालान बन्धे हुए ख़च्चरों के मिष्ल बिच्छू हैं तो इन के एक मरतबा काटने का दर्द चालीस साल तक रहेगा।"

(المسند للامام احمد بن حنبل، حدیث عبداللہ بن الحارث بن جزء الزبیدی، رقم ۱۷۷۲۹، ج ۶، ص ۲۱۷)

"तुम्हारी येह आग जिसे इब्ने आदम रोशन करता है, जहन्नम की आग से सत्तर दर्जे कम है।" येह सुन कर सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! जलाने के लिये तो येही काफ़ी है?" इरशाद फ़रमाया "वोह इस से उन्हत्तर (69) दर्जे ज़ियादा है, हर दर्जे में यहां की आग के बराबर गर्मी है।"

(صحیح مسلم، کتاب الجنۃ وصفۃ نعیمھا واھلھا، باب فی شدۃ حر نار جھنم، رقم ۲۸۴۳، ص ۱۵۲۳)

फिर अपने आप से यूं मुख़ातिब हों : "अगर मुझे जहन्नम में डाल दिया गया तो मेरा येह नर्मो नाज़ुक बदन उस के हौलनाक अ़ज़ाबात को किस त़रह़ बर्दाश्त कर पाएगा? जब कि जहन्नम में पहुंचने वाली तक्लीफ़ की शिद्दत के सबब इन्सान पर न तो बेहोशी त़ारी होगी और न ही उसे मौत आएगी। आह! वोह वक़्त कितनी बेबसी का होगा जिस के तसव्वुर से ही दिल कांप उठता है। क्या येह रोने का मक़ाम नहीं? क्या अब भी गुनाहों से वह़शत मह़सूस नहीं होगी और दिल में नेकियों की मह़ब्बत नहीं बढ़ेगी? क्या अब भी बारगाहे ख़ुदावन्दी عَزَّوَجَلَّ में सच्ची तौबा पर दिल माइल नहीं होगा?"

उम्मीद है कि बार बार इस अन्दाज़ से फ़िक्रे मदीना करने की बरकत से दिल में नदामत पैदा हो जाएगी और सच्ची तौबा की तौफ़ीक़ मिल जाएगी। اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ

﴾3﴿ गुनाह को आयन्दा न करने का पुख़्ता इरादा किया जाए :

या'नी अपने दिल में इस बात का पुख़्ता और मज़बूत इरादा करे कि आयन्दा कभी इन गुनाहों का इर्तिकाब नहीं करूंगा। चुनान्चे अगर कोई शख़्स फ़िलहाल तो गुनाह छोड़ दे लेकिन दिल में हो कि दोबारा अगर मौक़अ़ मिला तो कर लूंगा या सिरे से इस गुनाह को छोड़ने का इरादा मुतज़लज़िल हो तो ऐसा शख़्स वक़्ती तौ़र पर गुनाहों से रुक जाने के बावुजूद ताइब नहीं कहलाएगा बल्कि गुनाह पर क़ाइम रहते हुए तौबा करने वालों को सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपने रब्ब عَزَّوَجَلَّ से मज़ाक़ करने वाला क़रार दिया है चुनान्चे ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है कि गुनाह पर क़ाइम रह कर तौबा करने वाला अपने रब्ब عَزَّوَجَلَّ का मज़ाक़ उड़ाने वाले की त़रह़ है।"

(شعب الایمان، باب فی معالجۃ کل ذنب بالتوبۃ، رقم ۷۱۷۸، ج ۵، ص ۴۳۶)

﴾4﴿ गुनाहों की तलाफ़ी करे :

इस सिलसिले में इन्सान को चाहिये कि बालिग़ होने से ले कर अब तक अपनी तमाम साबिक़ा ज़िन्दगी के हर लम्ह़े, हर घड़ी, हर दिन, हर साल का तफ़्सीली मुह़ासबा करे कि वोह किन किन गुनाहों और कोताहियों में मुलव्विष रहा है? उस के कानों, आंखों, हाथ पाऊं, पेट, ज़बान, दिल, शर्मगाह और दीगर आ'ज़ा से कौन कौन से गुनाह सरज़द हुए हैं? इस ग़ौरो फ़िक्र के नतीजे में सामने आने वाले गुनाहों की मुमकिना तौ़र पर छे (6) क़िस्में बन सकती हैं,....

(1) बा'ज़ गुनाह वोह होंगे जिन का तअ़ल्लुक़ हुक़ूक़ुल्लाह (عَزَّوَجَلَّ) से होता है। जैसे नमाज़, रोज़ा, ह़ज, क़ुरबानी और ज़कात वग़ैरा की अदाएगी में सुस्ती करना, बद निगाही करना, क़ुरआने पाक को बे वुज़ू हाथ लगाना, शराब नोशी करना, फ़ोह़्श गाने सुनना वग़ैरह।

(2) बा'ज़ ऐसे होंगे जिन का तअ़ल्लुक़ बन्दों के हुक़ूक़ से होता है। जैसे चोरी, ग़ीबत, चुग़ली, अज़िय्यत देना, मां बाप को सताना, अमानत में ख़ियानत करना, क़र्ज़ ले कर दबा लेना वग़ैरहा।

(3) इन में से बा'ज़ गुनाह वोह होंगे जिन का तअ़ल्लुक़ इन्सान के ज़ाहिर से होता है, मषलन क़त्ल करना वग़ैरा और बा'ज़ वोह होंगे जिन का तअ़ल्लुक़ इन्सान के बातिन से होता है मषलन बदगुमानी करना, किसी से ह़सद करना, तक़ब्बुर में मुब्तला होना वग़ैरा।

(4) बा'ज़ गुनाह वोह होंगे जो सिर्फ़ तौबा करने वाले की ज़ात तक मह़दूद होंगे, मषलन ख़ुद शराब पीना और बा'ज़ ऐसे होंगे जिन की त़रफ़ इस शख़्स ने किसी दूसरे को राग़िब किया होगा, उसे गुनाहे जारिया भी कहते हैं। मषलन किसी को शराब नोशी की तरग़ीब देना या फ़ोह़ूश वेब साइट देखने की तरग़ीब देना वग़ैरा।

(5) बा'ज़ गुनाह ऐसे होंगे जो पोशीदा त़ौर पर किये होंगे मषलन अपने कमरे में फ़ोह़ूश फ़िल्में देखना जब कि कुछ गुनाह वोह होंगे जो ए'लानिया किये होंगे मषलन दाढ़ी मुन्डाना, सरे आ़म शराब पीना वग़ैरा

(6) कुछ गुनाह ऐसे होंगे जिन के इर्तिकाब पर आदमी दाइरए इस्लाम से ख़ारिज हो कर काफ़िर हो जाता है। मषलन **अल्लाह** तआ़ला को ज़ालिम कहना, सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की शान में गुस्ताख़ी करना।

इस तक़्सीम की बिना पर तौबा भी मुख़्तलिफ़ नौइय्यत की होगी। चुनान्चे

(1) हुक़ूक़ुल्लाह (عَزَّوَجَلَّ) से तअ़ल्लुक़ रखने वाले गुनाह अगर किसी इबादत में कोताही की वजह से सरज़द हों तो तौबा करने के साथ साथ इन इबादात की क़ज़ा भी वाजिब है मषलन अगर नमाज़ें फ़ौत हुई हों या रमज़ान के रोज़े छूटे हों तो इन का ह़िसाब लगाए और इन की क़ज़ा करे, अगर ज़कात की अदाएगी में कोताही हुई हो तो ह़िसाब लगा कर अदाएगी करे, अगर ह़ज फ़र्ज़ हो जाने के बा वुजूद

अदा नहीं किया था तो अब अदा करे, कभी क़ुरबानी वाजिब हुई लेकिन नहीं की तो क़ुरबानी के जानवर की क़ीमत सदक़ा करे।

(बहारे शरीअ़त, हिस्सा. 15, स. 138)

और अगर गुनाहों का तअ़ल्लुक़ इबादात में कोताही से न हो मषलन बदनिगाही करना, शराब नोशी करना वग़ैरा, तो इन पर नदामत व ह़सरत का इज़हार करते हुए बारगाहे इलाही عَزَّوَجَلَّ में तौबा करे और नेकियां करने में मश्ग़ूल हो जाए।

(2) बन्दों के हुक़ूक़ से मुतअ़ल्लिक़ गुनाह अगर उन की इ़ज़्ज़त व आबरू में दस्त अन्दाज़ी की वजह से सरज़द हुए हों मषलन किसी को गाली बकी थी या तोहमत लगाई थी या डराया धमकाया था,..... तो तौबा की तक्मील **अल्लाह** तआ़ला और उस मज़्लूम से मुआ़फ़ी त़लब करने से होगी। और अगर माली मुआ़मले में शरीअ़त की ख़िलाफ़वरज़ी की वजह से गुनाह वाक़ेअ़ हुवा था मषलन अमानत में ख़यानत की थी या क़र्ज़ ले कर दबा लिया था तो **अल्लाह** तआ़ला और उस मज़्लूम से मुआ़फ़ी त़लब करने के साथ साथ उसे उस का माल भी लौटाए और अगर वोह शख़्स इन्तिक़ाल कर गया हो तो उस के वुरषा को दे दे या फिर उस शख़्स या उस के वुरषा से मुआ़फ़ करवा ले, अगर येह भी न कर सके तो इतना माल उस मज़्लूम की त़रफ़ से इस निय्यत के साथ सदक़ा कर दे कि अगर वोह शख़्स या उस के वुरषा बा'द में मिल गए और उन्हों ने अपने ह़क़ का मुत़ालबा किया तो मैं उन्हें उन का ह़क़ लौटा दूंगा और उन के लिये दुआ़ए मग़्फ़िरत करता रहे।

(3) ज़ाहिरी गुनाहों से तौबा का त़रीक़ा तो ऊपर गुज़र चुका लेकिन बात़िनी गुनाहों से भी तौबा करने से हरगिज़ ग़फ़्लत न करे। चुनान्चे अपने दिल पर ग़ौर करे और अगर ह़सद, तकब्बुर, रियाकारी, बुग़्ज़, कीना, ग़ुरूर, शुमातत, अपनी ज़ात के लिये ग़ुस्सा करना और बद गुमानी जैसे गुनाह दिखाई दें तो नादिम व शर्मसार हो कर बारगाहे इलाही عَزَّوَجَلَّ में मुआ़फ़ी त़लब करे।

(4) जो गुनाह उस की ज़ात तक महदूद हों उन से मज़कूरा त़रीक़े के मुत़ाबिक़ तौबा करे और अगर गुनाहे जारिया का इर्तिकाब किया हो तो जिस त़रह़ उस गुनाह से खुद ताइब हुवा है उस की तरग़ीब देने से भी तौबा करे और दूसरे शख़्स को जिस त़रह़ गुनाह की रग़बत दी थी अब तौबा की तरग़ीब दे, जहां तक मुमकिन हो नर्मी या सख़्ती से समझाए, अगर वोह मान जाए तो फ़बिहा वरना येह बरियुज़्ज़िम्मा हो जाएगा। (फ़तावा रज़विय्या, जि.10 निस्फ़ अव्वल, स. 97)

(5) जो गुनाह बन्दे और उस के रब्ब عَزَّوَجَلَّ के दरमियान हो या'नी किसी पर ज़ाहिर न हुवा हो तो उस की तौबा पोशीदा त़ौर पर करे या'नी अपना गुनाह किसी पर ज़ाहिर न करे और अगर गुनाह ए'लानिया किया हो तो उस की तौबा भी ए'लानिया करे या'नी जिन लोगों के सामने गुनाह किया था उन के सामने तौबा करे या इतनी ता'दाद में दूसरे लोगों के सामने तौबा कर ले या किसी ह़रज की बिना पर कम अज़ कम दो अफ़राद के सामने तौबा कर ले तो उस की तौबा सह़ीह़ मानी जाएगी। (फ़तावा रज़विय्या, जि.10 निस्फ़ अव्वल, स. 255)

ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि मैं ने अ़र्ज़ किया : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मुझे कोई नसीह़त फ़रमाइयें।" आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जहां तक मुमकिन हो अपने ऊपर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ख़ौफ़ लाज़िम कर लो, हर शजर के पास **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र करते रहो और जब कोई बुरा काम कर बैठो तो हर बुरे काम के लिये नई तौबा करो, अगर गुनाह खुफ़्या किया हो तो तौबा भी खुफ़्या करो और अगर गुनाह ए'लानिया है तो तौबा भी ए'लानिया करो।" (المعجم الکبیر، رقم ۳۳۱، ج ۲۰، ص ۱۵۹)

कन्जुल उ़म्माल में है कि सरवरे कौनैन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : " जब तुझ से नया गुनाह हो फ़ौरन नई तौबा कर, पोशीदा की पोशीदा और ए'लानिया की ए'लानिया।" (کنز العمال، کتاب التوبۃ، الفصل الاول فی فضلہا ...، رقم ۱۰۳۴۴، ج ۴، ص ۹۱)

(6) अगर مَعَاذَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ कलिमए कुफ़्र या कोई ऐसा फ़े'ल सादिर हो जाए जिस से इन्सान काफ़िर हो जाता है तो फ़ौरन तौबा कर के तजदीदे ईमान कर लेनी चाहिये जिस का त़रीक़ा नीचे दिया गया है,

तजदीदे ईमान का त़रीक़ा

(अज़ : बानिये दा'वते इस्लामी मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी مَدَّظِلُّهُ الْعَالِی)

दिल की तस्दीक़ के बिग़ैर सिर्फ़ ज़बानी तौबा काफ़ी नहीं होती। मषलन किसी ने कुफ़्र बक दिया, उस को दूसरे ने बहला फुसला कर इस त़रह़ तौबा करवा दी कि कुफ़्र बकने वाले को मा'लूम तक नहीं हुवा कि मैं ने फुलां कुफ़्र किया था, यूं तौबा नहीं हो सकती, उस का कुफ़्र ब दस्तूर बाक़ी है। लिहाज़ा जिस कुफ़्र से तौबा मक़्सूद हो वोह उसी वक़्त मक़बूल होगी जब कि वोह इस कुफ़्र को कुफ़्र तस्लीम करता हो और दिल में उस कुफ़्र से नफ़रत व बेज़ारी भी हो जो कुफ़्र सरज़द हुवा तौबा में इस का तज़किरा भी हो। मषलन जिस ने वीज़ा फ़ार्म पर अपने आप को ईसाई लिख दिया वोह इस त़रह़ कहे : "या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मैं ने जो वीज़ा फ़ार्म में अपने आप को ईसाई ज़ाहिर किया है उस कुफ़्र से तौबा करता हूं। لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ (**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई इबादत के लाइक़ नहीं और मुह़म्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के रसूल हैं)।" इस त़रह़ मख़्सूस कुफ़्र से तौबा भी हो गई और तजदीदे ईमान भी। अगर مَعَاذَاللّٰه कई कुफ़्रियात बके हों और याद न हो कि क्या क्या बका है तो यूं कहे : "या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुझ से जो जो कुफ़्रियात सादिर हुए हैं मैं इन से तौबा करता हूं "फिर कलिमा पढ़ले" (अगर कलिमा शरीफ़ का तर्जमा मा'लूम है तो ज़बान से तर्जमा दोहराने की ह़ाजत नहीं) अगर येह मा'लूम ही नहीं कि कुफ़्र बका भी है या नहीं तब भी अगर एह़तियात़न तौबा करना चाहे तो इस त़रह़ करें : "या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अगर मुझ से कोई कुफ़्र हो गया हो तो मैं उस से तौबा करता हूं" येह कहने के बा'द कलिमा पढ़ लें। (रिसाला "28 कलिमाते कुफ़्र," स. 7,9)

तौबा करने का एक तरीक़ा

तौबा करने का एक तरीक़ा येह भी है कि तन्हाई में दो रक्अ़त सलातुत्तौबा पढ़े फिर अपनी नाफ़रमानियों और रब्ब तआ़ला के एह़सानात, अपनी नातुवानी और जहन्नम के अ़ज़ाबात को याद कर के आंसू बहाए, अगर रोना न आए तो रोने जैसी सूरत ही बना ले। इस के बा'द तौबा की शराइत़ को मद्दे नज़र रखते हुए रब्ब तआ़ला की बारगाह में मुआ़फ़ी त़लब करे और कुछ इस त़रह़ से दुआ़ करे :

"ऐ मेरे मालिक عَزَّوَجَلَّ तेरा येह नाफ़रमान बन्दा जिस का रुवां रुवां गुनाहों के समुन्दर में डूबा हुवा है, तेरी पाक बारगाह में ह़ाज़िर है, या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ में इक़रार करता हूं कि मैं ने दिन के उजाले में रात के अन्धेरे में, पोशीदा और ए'लानिया, दानिस्ता और नादानिस्ता त़ौर पर तेरी नाफ़रमानियां की हैं, यक़ीनन मैं ने तुझे नाराज़ करने में कोई कसर नहीं छोड़ी लेकिन ऐ मौला عَزَّوَجَلَّ तू ग़फ़ूर व रह़ीम है, तू बन्दे पर इस से ज़ियादा मेहरबान है जितना कि एक मां अपने बच्चे पर शफ़्क़त करती है, ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अगर तू ने मेरे गुनाहों पर पकड़ फ़रमाई तो मुझे नारे जहन्नम में जलना पड़ेगा जिस का अ़ज़ाब लम्ह़ा भर के लिये भी सहने की मुझ में त़ाक़त नहीं, ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मैं सिद्क़े दिल से तेरी बारगाह में अपने गुनाहों से तौबा करता हूं, या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मेरी ना तुवानी पर रह़म फ़रमा, ऐ मेरे परवर दगार عَزَّوَجَلَّ मेरे गुनाहों को मुआ़फ़ फ़रमा दे, ऐ मेरे परवर दगार عَزَّوَجَلَّ मेरे गुनाहों को मुआ़फ़ फ़रमा दे, ऐ मेरे परवर दगार عَزَّوَجَلَّ मेरे गुनाहों को मुआ़फ़ फ़रमा दे, ऐ मेरे मौला عَزَّوَجَلَّ मुझे सच्ची तौबा की तौफ़ीक़ दे, जो इबादात अदा होने से रह गईं उन्हें अदा करने की हिम्मत दे दे,

जिन बन्दों के हुक़ूक़ मैं ने तलफ़ किये उन से भी मुआ़फ़ी मांगने का हौसला अ़ता फ़रमा, ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तू हर शै पर क़ादिर है, तू उन्हें मुझ से राज़ी फ़रमा दे, या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुझे आयन्दा ज़िन्दगी में गुनाहों से बचने पर इस्तिक़ामत अ़ता फ़रमा, ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुझे अपने ख़ौफ़ से मा'मूर दिल, रोने वाली आंख और लरज़ने वाला बदन अ़ता फ़रमा।'' اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

या रब्ब عَزَّوَجَلَّ ***मैं तेरे ख़ौफ़ से रोता रहूं हर दम***
दीवाना शहनशाहे मदीना صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ***का बना दे***

इस के बा'द उस जगह से इस यक़ीन से उठे कि रहीमो करीम परवर दगार عَزَّوَجَلَّ ने उस की तौबा क़बूल फ़रमा ली है। फिर एक नए अ़ज़्म के साथ नई और पाकीज़ा ज़िन्दगी का आग़ाज़ करे और साबिक़ा गुनाहों की तलाफ़ी में मसरूफ़ हो जाए। **अल्लाह** तआ़ला हमारा हामी व नासिर हो اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

तौबा की क़बूलिय्यत कैसे मा'लूम हो ?

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحْمَۃ लिखते हैं कि एक आ़लिम से पूछा गया : एक आदमी तौबा करे, तो क्या उसे मा'लूम हो सकता है कि उस की तौबा क़बूल हुई है या नहीं ? फ़रमाया : ''इस में हुक्म तो नहीं दिया जा सकता, अलबत्ता इस की अ़लामत है, अगर अपने आप को आयन्दा गुनाह से बचता देखे और येह देखे कि दिल ख़ुशी से ख़ाली है और रब्ब तआ़ला के सामने नेक लोगों से क़रीब हो, बुरों से दूर रहे थोड़ी दुन्या को बहुत समझे और आख़िरत के बहुत अ़मल को थोड़ा जाने, दिल हर वक़्त **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के फ़राइज़ में मुन्हमिक रहे, ज़बान की ह़िफ़ाज़त करे, हर वक़्त ग़ौरो फ़िक्र करे, जो

गुनाह कर चुका है उस पर ग़म व गुस्सा और शर्मिन्दगी महसूस करे (तो समझ लो कि तौबा क़बूल हो गई)।" (مکاشفۃ القلوب، الباب الثامن فی التوبۃ، ص۲۹)

तौबा के बा'द क्या करे ?

सब से पहला काम येह करे कि किसी त़रह़ गुनाहों की मा'रिफ़त ह़ासिल करे ताकि मुस्तक़बिल में किसी क़िस्म के गुनाह के इर्तिकाब से बच सके। फिर इन गुनाहों से मुकम्मल परहेज़ करे और हर उस काम से बचे जो गुनाह की त़रफ़ ले जाने वाला हो। इस के इ़लावा कषरत से नेकियां करने में मश़ग़ूल हो जाए कि नेकियों के नूर से गुनाहों की तारीकी जाती रहती है। अल्लाह तआ़ला ने इरशाद फ़रमाया :

اِنَّ الْحَسَنٰتِ یُذْهِبْنَ السَّیِّاٰتِ

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक नेकियां बुराइयों को मिटा देती हैं। (پ۱۲، ھود:۱۱۴)

मदनी आक़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने भी इसी त़रफ़ इशारा करते हुए फ़रमाया : "गुनाह के पीछे नेकी लाओ वोह उस को मिटा देगी।"

(المسند للامام احمد بن حنبل، حدیث ابی ذر الغفاری، رقم ۲۱۴۶۰، ج۸، ص۹۲)

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़क़बा बिन आ़मिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "उस आदमी की मिषाल जो पहले बुराइयों में मश़ग़ूल था फिर नेक आ'माल करने लगा, उस शख़्स की त़रह़ है कि जिस के बदन पर तंग ज़िर्रा हो जो उस की गर्दन घोंट रही हो। फिर उस ने एक नेक अ़मल किया तो उस ज़िर्रा का एक ह़ल्क़ा खुल गया। फिर दूसरा नेक काम किया तो दूसरा ह़ल्क़ा खुल गया (और फिर नेक अ़मल करता चला गया) ह़त्ता कि वोह तंग ज़िर्रा खुल कर ज़मीन पर आ गिरी।" (المعجم الکبیر، رقم ۷۸۳، ج۱۷، ص۲۸۴)

अगर दिल दोबारा गुनाहों की त़रफ़ माइल हो तो?

प्यारे इस्लामी भाइयो ! तौबा के बा'द गुनाहों की त़रफ़ मैलान होना यक़ीनन बहुत बड़ी आज़माइश है। इन्सान को चाहिये कि इस मैलान पर क़ाबू पाने के लिये अपने गुनाहों को पेशे नज़र रखे और दिल में नदामत की आग को जलाए रखे, इस की तपिश नफ़्स की ख़्वाहिशात का क़ल्अ़ क़म्अ़ कर देगी, اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ इस सिलसिले में अकाबिरीन का त़र्ज़े अ़मल मुलाह़ज़ा हो,....

ह़ज़रते सय्यिदुना बायज़ीद बिस्त़ामी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ एक रात अपने घर की छत पर पहुंचे और दीवार को थाम कर पूरी रात ख़ामोश खड़े रहे जिस की वजह से आप के पेशाब में ख़ून आने लगा। जब लोगों ने इस की वजह पूछी तो इरशाद फ़रमाया : "दो चीज़ों की वजह से, एक येह कि आज मैं ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत न कर सका, दूसरी येह कि बचपन में मुझ से एक गुनाह सरज़द हो गया था, चुनान्चे मैं इन दोनों चीज़ों से इस क़दर ख़ौफ़ज़दा था कि मेरा दिल ख़ून हो गया और पेशाब के रास्ते से ख़ून आने लगा।"

(تذکرۃ الاولیاء، باب چہاردہم ذکر بایزید بسطامی، ج۱، ص۱۳۳)

मन्क़ूल है कि ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से बचपन में एक गुनाह सरज़द हो गया था। आप जब भी कोई नया लिबास सिलवाते तो उस के गिरेबान पर वोह गुनाह दर्ज कर देते और अकषर इस को देख कर इस क़दर गिर्या व ज़ारी करते कि आप पर ग़शी त़ारी हो जाती। (تذکرۃ الاولیاء، باب سوم، ذکر حسن بصری، ج۱، ص۳۹)

ह़ज़रते सय्यिदुना कहमस बिन हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : "मुझ से एक गुनाह सरज़द हो गया तो मैं चालीस बरस तक रोता रहा।" लोगों ने पूछा : "अबू अ़ब्दुल्लाह ! वोह कौन सा गुनाह था?" तो आप ने फ़रमाया : "एक दफ़्आ़ मेरा दोस्त मुझ से मिलने आया तो मैं ने उस

के लिये मछली पकाई और जब वोह खाना खा चुका तो मैं ने अपने पड़ोसी की दीवार से मिट्टी ले कर अपने मेहमान के हाथ धुलाए थे।''

(منہاج العابدین الی جنۃ رب العالمین، العقبۃ الثانیۃ، ص ۳۵۔۳۶)

तौबा के बा'द गुनाह सरज़द हो जाए तो क्या करे?

जिस शख़्स ने सिद्क़े दिल से तौबा कर ली हो फिर वोह दानिस्ता या ना दानिस्ता तौ़र पर ग़लबए शहवत वग़ैरा की वजह से किसी गुनाह का मुर्तकिब हो जाए तो उसे चाहिये कि दोबारा तौबा करने में देर न करे क्यूंकि बा'दे तौबा गुनाह का सुदूर एक मुसीबत है तो दोबारा तौबा न करना इस से कहीं ज़ियादा नुक़्सान देह है। ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमान है कि ''जब कोई बन्दए मोमिन गुनाह कर लेता है, तो उस के क़ल्ब पर एक सियाह नुक्ता लग जाता है, लेकिन जब वोह तौबा कर लेता है और **अल्लाह** तआ़ला से त़लबे मग़्फ़िरत करता है, तो उस का क़ल्ब साफ़ कर दिया जाता है और अगर वोह गुनाह करता रहे (या'नी दरमियान में तौबा न करे) तो येह सियाही बढ़ती रहती है, यहां तक कि उस का दिल सियाह पड़ जाता है। पस येह वोही ज़ंग है जिस का ज़िक्र **अल्लाह** तआ़ला ने भी इस त़रह़ फ़रमाया है :

''كَلَّا بَلْ رَانَ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ مَّا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ۝

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : कोई नहीं बल्कि उन के दिलों पर ज़ंग चढ़ा दिया है उन की कमाइयों ने।'' (پ۳۰، المطففین: ۱۴)

(جامع الترمذی، کتاب التفسیر، باب ومن سورۃ ویل للمطففین، رقم ۳۳۴۵، ج ۵، ص ۲۲۰)

एक बुज़ुर्ग के बारे में मन्क़ूल है कि वोह कीचड़ में कपड़ों को बचाते हुए कीचड़ में चल रहे थे ताकि पाऊं फिसल न जाए। लेकिन फिर भी उन का पाऊं फिसल गया और वोह गिर गए। वोह खड़े हुए और रोते रोते कीचड़ के दरमियान चलने लगे, वोह कह रहे थे कि :

"बन्दे की येह ही मिषाल है वोह गुनाह से बचता और कनारा कश रहता है ह़त्ता कि वोह एक या दो गुनाहों में जा पड़ता है, उस वक़्त वोह गुनाहों में डूब जाता है येह इस बात की त़रफ़ इशारा है कि गुनाह की फ़ौरी सज़ा येह है कि वोह दूसरे गुनाह की त़रफ़ ले जाता है।"

(احیاء علوم الدین، کتاب التوبۃ، الرکن الرابع فی دواء التوبۃ وطریق العلاج، ج۴، ص۶۷)

तौबा पर इस्तिक़ामत कैसे पाएं?

इबादत की अदाएगी और इर्तिकाबे गुनाह से बचने पर इस्तिक़ामत इख़्तियार करना उ़मूमन दुशवार महसूस होता है। लेकिन येह दुशवारी उस वक़्त तक महसूस होती है जब तक हमारे सामने कोई शख़्स इन्हें इस्तिक़ामत से अपनाए हुए न हो। लिहाज़ा ! अगर हम तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** के मदनी माह़ोल से वाबस्ता हो जाएंगे तो हमें कषीर इस्लामी भाई इजतिमाई त़ौर पर इबादात पर इस्तिक़ामत पज़ीर दिखाई देंगे जिस की बरकत से ह़ैरत अंगेज़ त़ौर पर हम भी किसी क़िस्म की मशक़्क़त के एह़सास के बिग़ैर इबादात और परहेज़े गुनाह पर इस्तिक़ामत ह़ासिल करने में कामयाब हो जाएंगे। اِنْ شَآءَاللّٰہ عزوجل

चुनान्चे हमें चाहिये कि तौबा पर इस्तिक़ामत पाने के लिये बानिये दा'वते इस्लामी, शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी مَدَّظِلُّہُ الْعَالِی के अ़त़ा कर्दा मदनी इन्आ़मात पर अ़मल करें और बा किरदार मुसलमान बनने के लिये मक्तबतुल मदीना की किसी भी शाख़ से मदनी इन्आ़मात का कार्ड ह़ासिल करें और रोज़ाना फ़िक्रे मदीना या'नी अपने मुह़ासबे के ज़रीए़ कार्ड पुर कर के हर मदनी या'नी क़मरी माह के इब्तिदाई दस दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के मदनी इन्आ़मात के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लें। اِنْ شَآءَاللّٰہ عزوجل हमारी ज़िन्दगी में ह़ैरत अंगेज़ त़ौर पर मदनी इन्क़िलाब बर्पा होगा।

प्यारे इस्लामी भाइयो ! दा'वते इस्लामी के सुन्नतों की तर्बिय्यत के लिये आ़शिक़ाने रसूल के बे शुमार मदनी क़ाफ़िले 12 माह, 30 दिन, 12 दिन और 3 दिन के लिये शहर ब शहर गाउं ब गाउं सफ़र करते रहेते हैं, आप भी राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में सफ़र कर के अपनी आख़िरत के लिये नेकियों का ज़ख़ीरा इकठ्ठा कीजिये। अपनी रोज़ मर्रा की दुन्यावी मसरूफ़िय्यात तर्क कर के अपने घर वालों और दोस्तों की सोह़बत छोड़ कर जब हम इन मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र करेंगे तो सफ़र के दौरान हमें अपने त़र्ज़े ज़िन्दगी पर दियानत दाराना ग़ौरो फ़िक्र का मौक़अ़ मुयस्सर आएगा, अपनी आख़िरत को बेहतर से बेहतर बनाने की ख़्वाहिश दिल में पैदा होगी, जिस के नतीजे में अब तक किये जाने वाले गुनाहों के इर्तिकाब पर नदामत महसूस होगी, इन गुनाहों की मिलने वाली सज़ाओं का तसव्वुर कर के रोंगटे खड़े हो जाएंगे, दूसरी त़रफ़ अपनी ना तुवानी व बेकसी का एह़सास दामनगीर होगा और अगर दिल ज़िन्दा हुवा तो ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ के सबब आंखों से बे इख़्तियार आंसू छलक कर रुख़्सारों पर बहने लगेंगे।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयों ! इन मदनी क़ाफ़िलों में मुसलसल सफ़र करने के नतीजे में फ़ोह़्श कलामी और फ़ुज़ूल गोई की जगह ज़बान से दुरूदे पाक जारी हो जाएगा, येह तिलावते क़ुरआन, ह़म्दे इलाही और ना'ते रसूल (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की आ़दी बन जाएगी, दुन्या की मह़ब्बत से डूबा हुवा दिल आख़िरत की बेहतरी के लिये बे चैन हो जाएगा। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ

इस के इ़लावा अपने अपने शहरों में होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में पाबन्दिये वक़्त के साथ शिर्कत फ़रमा कर ख़ूब ख़ूब सुन्नतों की बहारें लूटियें।

तौबा करने वालों के वाक़िआत

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !

बत़ौरे तरग़ीब तौबा करने वालों के चन्द मुन्तख़ब वाक़िआत मुलाह़ज़ा हों कि किस त़रह़ रह़मते इलाही عَزَّوَجَلَّ ने ताइबीन (या'नी तौबा करने वालों) को अपनी आग़ोश में ले लिया।

﴾1﴿ एक ह़ब्शी की तौबा

एक ह़ब्शी ने सरकारे मदीना, सुरूरे क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! मेरे गुनाह बे शुमार हैं, क्या मेरी तौबा बारगाहे इलाही عَزَّوَجَلَّ में क़बूल हो सकती है ?" आप ने इरशाद फ़रमाया : "क्यूं नहीं।" उस ने अ़र्ज़ की, "क्या वोह मुझे गुनाह करते हुए देखता भी रहा है ?" इरशाद फ़रमाया, "हां ! वोह सब कुछ देखता रहा है।" येह सुन कर ह़ब्शी ने एक चीख़ मारी और ज़मीन पर गिरते ही दम तोड़ गया।

(کیمیائے سعادت، رکن چہارم مخیات، اصل ششم مقام دوم در مراقبت، ج۲، ص۸۸۶)

﴾2﴿ एक ज़ानिया की तौबा

ह़ज़रते सय्यिदुना इमरान बिन ह़सीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि एक औ़रत **अल्लाह** के रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुई, उसे ज़िना का ह़म्ल था। वोह अ़र्ज़ करने लगी : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم मैं वोह काम (या'नी ज़िना) कर बैठी हूं जिस पर ह़द वाजिब होती है, आप मुझ पर ह़द क़ाइम फ़रमा दें।" रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने उस के वली को बुला कर इरशाद फ़रमाया : "इस के साथ अच्छा सुलूक करो और जब वज़्ए ह़म्ल हो जाए तो इसे मेरे पास ले आना।"

फिर ऐसा ही हुवा (या'नी वज़ए हम्ल के बा'द वली उसे ले कर हाज़िरे ख़िदमत हो गया) तो रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने हुक्म दिया कि : "इसे इस के कपड़ों के साथ बान्ध दिया जाए।" फिर उसे रजम कर दिया गया। फिर सरवरे दो आलम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने उस पर नमाज़े जनाज़ा पढ़ी तो हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ अर्ज़ गुज़ार हुए : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم आप ने इस पर नमाज़े जनाज़ा पढ़ दी हालांकि इस ने ज़िना का इर्तिकाब किया था ?" इस पर हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "यक़ीनन इस ने ऐसी तौबा की है कि अगर इस की येह तौबा अहले मदीना के सत्तर अफ़राद पर तक़्सीम कर दी जाए तो उन्हें काफ़ी हो जाए (या'नी उन की मग़फ़िरत हो जाए) और क्या तुम इस से अफ़्ज़ल कोई अमल पाते हो कि इस ने अपनी जान ख़ुद **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये पेश कर दी।" (صحیح مسلم، کتاب الحدود، باب من اعترف علی نفسہ بالزنی، رقم ۱۶۹۶، ص ۹۳۳)

3 एक ग़ुलूकार की तौबा

हज़रते अब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ एक दिन मज़ाफ़ाते कूफ़ा से गुज़र रहे थे। उन का गुज़र फ़ासिक़ीन के एक गुरौह पर हुवा, जो शराब पी रहे थे। ज़ाज़ान नामी एक गवय्या ढोल पर हाथ मार मार कर इन्तिहाई ख़ूबसूरत आवाज़ में गा रहा था। आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने सुन कर कहा : "कितनी ख़ूबसूरत आवाज़ है, काश ! कि येह कुरआने करीम की तिलावत में इस्ति'माल होती" और सर पर चादर डाल कर वहां से रवाना हो गए। ज़ाज़ान ने जब आप को देखा तो लोगों से पूछा : "येह कौन हैं ?" लोगों ने बताया : "हुज़ूर नबिय्ये रह़मत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के सह़ाबी ह़ज़रते अब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ।" इस ने पूछा : इन्हों ने क्या कहा। बताया गया कि इन्हों ने कहा है कि : "कितनी मीठी आवाज़ है, काश कि क़िराअते कुरआन के लिये होती।" येह बात सुनते ही उस के दिल पर रो'ब

सा छा गया। अपने बरबत़ को ज़मीन पर पटख कर तोड़ दिया। खड़ा हुवा और जल्दी से उन्हें जा लिया। अपनी गर्दन में रूमाल डाला और ह़ज़रते इब्ने मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ के सामने रोने लग गया।

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने उसे गले से लगाया और दोनों रोना शुरूअ़ हो गए और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने फ़रमाया : "मैं ऐसे शख़्स को क्यूं न मह़बूब समझूं जिसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मह़बूब बना लिया हो।" सय्यिदुना ज़ाज़ान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने गुनाहों से तौबा की और ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ की सोह़बत इख़्तियार कर ली। कुरआने करीम और दीगर उ़लूम सीखे। ह़त्ता कि इ़ल्म में इमाम बन गए। ह़ज़रते इब्ने मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ की कई रिवायात ह़ज़रते ज़ाज़ान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से मरवी है। (تنبیہ الغافلین، باب آخر من التوبۃ، ص۶۳)

﴾4﴿ ह़रामी बच्चे को मारने वाली औ़रत की तौबा

ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ फ़रमाते हैं कि एक रात मैं सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मइ़य्यत में नमाज़े इ़शा पढ़ कर जा रहा था कि रास्ते में नक़ाब ओढ़े एक औ़रत खड़ी थी। कहने लगी "ऐ अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ मैं ने गुनाह किया है, क्या तौबा हो सकती है?" मैं ने पूछा : "क्या गुनाह किया है?" कहने लगी : "मैं ने ज़िना करवाया और ह़रामी बच्चे को क़त्ल कर डाला।" येह सुन कर मैं ने कहा कि : "तू ख़ुद भी हलाक हो गई और एक जान को भी हलाक कर दिया, तेरे लिये कोई तौबा नहीं।" येह सुन कर उस ने एक चीख़ मारी और बेहोश हो गई।

मैं चल पड़ा रास्ते में ख़याल आया कि सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के होते हुए इस त़रह़ मस्अला बताना अच्छा नहीं। मैं ने सुब्ह़ ही सुब्ह़ सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में पहुंच कर रात वाला वाक़िआ़

गोश गुज़ार किया। आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़ौरन "اِنَّا لِلّٰہِ" पढ़ी और फ़रमाया : "क़सम ब ख़ुदा ! ऐ अबू हुरैरा ! तू ख़ुद भी हलाक हो गया और एक नफ़्स को भी हलाक कर डाला। शरई हुक्म बताते हुए येह आयत तेरे सामने न थी :

وَالَّذِیْنَ لَا یَدْعُوْنَ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ وَلَا یَقْتُلُوْنَ النَّفْسَ الَّتِیْ حَرَّمَ اللّٰهُ اِلَّا بِالْحَقِّ وَلَا یَزْنُوْنَ ۚ

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और वोह जो **अल्लाह** के साथ किसी दूसरे मा'बूद को नहीं पूजते और उस जान को जिस की **अल्लाह** ने हुर्मत रखी नाहक़ नहीं मारते और बदकारी नहीं करते। (پ۱۹، الفرقان:۶۸)

"فَاُولٰٓئِكَ یُبَدِّلُ اللّٰهُ سَیِّاٰتِهِمْ حَسَنٰتٍ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِیْمًا ۝

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तो ऐसों की बुराइयों को **अल्लाह** भलाइयों से बदल देगा और **अल्लाह** बख़्शने वाला मेहरबान है। (پ۱۹، الفرقان:۷۰)

येह सुन कर मैं आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह से निकल कर मदीना शरीफ़ की गलियों में दौड़ दौड़ कर कहता था कि है कोई जो मुझे फुलां फुलां औसाफ़ वाली औरत के बारे में बताए। हत्ता कि रात के वक़्त मुझे वोह औरत उसी जगह मिली। मैं ने उसे बताया कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया है कि "उस की तौबा क़बूल हो सकती है" अब उस ने ख़ुशी से चीख़ मारी और कहने लगी : "मेरा एक बाग़ीचा है जिसे मैं अपने गुनाह के कफ़्फ़ारे के तौर पर मसाकीन के लिये सदक़ा करती हूं। (تنبیہ الغافلین، باب آخر من التوبۃ، ص۶۰۔۶۱)

﴿5﴾ शराबी नौजवान की तौबा

हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ एक बार मदीनए मुनव्वरा की एक गली से गुज़र रहे थे कि एक नौजवान सामने आया। उस ने कपड़ों के नीचे एक बोतल छुपा रखी थी। हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने पूछा : "ऐ नौजवान येह कपड़ो के नीचे क्या उठा रखा है ?" उस बोतल में शराब थी, नौजवान ने उसे शराब कहने

में शर्मिन्दगी महसूस की। उस ने दिल में दुआ की : "या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुझे हज़रते उमर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के सामने शर्मिन्दा और रुसवा न फ़रमाना, इन के हां मेरी पर्दापोशी फ़रमाना, मैं कभी शराब नहीं पियूंगा।" इस के बा'द नौजवान ने अ़र्ज़ किया : "ऐ अमीरल मोअमिनीन ! मैं सिर्के (की बोतल) उठाए हुए हूं।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : मुझे दिखाओ ! जब उस ने वोह बोतल आप के सामने की और हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने उसे देखा तो वोह सिर्का था। (مکاشفۃ القلوب، الباب الثامن فی التوبۃ، ص ۲۷۔۲۸)

﴿6﴾ रियाकारी से तौबा

हज़रते मालिक बिन दीनार عَلَیْہِ رَحْمَۃُ दिमिश्क़ में सुकूनत पज़ीर थे और हज़रते अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की तय्यार कर्दा मस्जिद में ए'तिकाफ़ किया करते थे। एक मरतबा उन के दिल में ख़याल आया कि कोई ऐसी सूरत पैदा हो जाए कि मुझे इस मस्जिद का मुतवल्ली बना दिया जाए। चुनान्चे आप ने ए'तिकाफ़ में इज़ाफ़ा कर दिया और इतनी कषरत से नमाज़ें पढ़ीं कि हर शख़्स आप को हमा वक़्त नमाज़ में मश्ग़ूल देखता। लेकिन किसी ने आप की त़रफ़ तवज्जोह नहीं की। एक साल इसी त़रह़ गुज़र गया। एक मरतबा आप मस्जिद से बाहर आए तो निदाए ग़ैबी आई : "ऐ मालिक ! तुझे अब तौबा करनी चाहिये।"

येह सुन कर आप को एक साल तक अपनी ख़ुद ग़रज़ाना इ़बादत पर शदीद रन्ज व शर्मिन्दगी हुई और आप अपने क़ल्ब को रिया से ख़ाली कर के ख़ुलूसे निय्यत के साथ सारी रात इ़बादत में मश्ग़ूल रहे। सुब्ह़ के वक़्त मस्जिद के दरवाज़े पर लोगों का एक मजमअ़ मौजूद था, और लोग आपस में कह रहे थे कि "मस्जिद का इन्तिज़ाम ठीक नहीं है लिहाज़ा इसी शख़्स को मुतवल्लिये मस्जिद बना दिया जाए और तमाम इन्तिज़ामी उमूर इस के सिपुर्द कर दिये

जाएं।" सारा मजमअ़ इस बात पर मुत्तफ़िक़ हो कर आप के पास पहुंचा और आप के नमाज़ से फ़ारिग़ होने के बा'द उन्हों ने आप से अ़र्ज़ की, कि "हम बाहमी तौ़र पर किये गए मुत्तफ़िक़ा फ़ैसले से आप को मस्जिद का मुतवल्ली बनाना चाहते हैं।" आप ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में अ़र्ज़ की : "ऐ **अल्लाह** ! मैं एक साल तक रियाकाराना इ़बादत में इस लिये मश्ग़ूल रहा कि मुझे मस्जिद की तौलियत ह़ासिल हो जाए मगर ऐसा न हुवा अब जब कि मैं सिदक़े दिल से तेरी इ़बादत में मश्ग़ूल हुवा तो तेरे हुक्म से तमाम लोग मुझे मुतवल्ली बनाने आ पहुंचे और मेरे ऊपर येह बार डालना चाहते हैं, लेकिन मैं तेरी अ़ज़्मत की क़सम खाता हूं कि मैं न तो अब तौलियत क़बूल करूंगा और न मस्जिद से बाहर निकलूंगा।" येह कह कर फिर इ़बादत में मश्ग़ूल हो गए। (تذکرۃ الاولیاء، باب چہارم، ذکر مالک دینار رحمۃ اللہ، ج۱، ص۴۸، ۴۹)

﴾7﴿ एक डाकू की तौबा

ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ुज़ैल बिन इयाज़ عَلَيْهِ رَحْمَة बहुत नामवर मुह़द्दिष और मश्हूर औलियाए किराम में से हैं। येह पहले ज़बरदस्त डाकू थे। एक मरतबा डाका डालने की ग़रज़ से किसी मकान की दीवार पर चढ़ रहे थे कि इत्तिफ़ाक़न उस वक़्त मालिके मकान क़ुरआने मजीद की तिलावत में मश्ग़ूल था। उस ने येह आयत पढ़ी :

"اَلَمْ یَاْنِ لِلَّذِیْنَ اٰمَنُوْۤا اَنْ تَخْشَعَ قُلُوْبُهُمْ لِذِكْرِ اللّٰهِ

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : क्या ईमान वालों को अभी वोह वक़्त न आया कि उन के दिल झुक जाएं **अल्लाह** की याद (के लिये)। (پ۲۷، الحدید:۱۶)

जूंही येह आयत आप की समाअ़त से टकराई, गोया ताषीरे रब्बानी का तीर बन कर दिल में पैवस्त हो गई और इस का इतना अषर हुवा कि आप ख़ौफ़े ख़ुदा (عَزَّوَجَلَّ) से कांपने लगे और बे इख़्तियार आप के मुंह से निकला : "क्यूं नहीं मेरे परवर दगार عَزَّوَجَلَّ

अब उस का वक़्त आ गया है।" चुनान्चे आप रोते हुए दीवार से उतर पड़े और रात को एक सुनसान और बे आबाद खंडर नुमा मकान में जा कर बैठ गए। थोड़ी देर बा'द वहां एक क़ाफ़िला पहुंचा तो शुरकाए क़ाफ़िला आपस में कहने लगे कि, "रात को सफ़र मत करो, यहां रुक जाओ कि फ़ुज़ैल बिन इयाज़ डाकू इसी अत़राफ़ में रहता है।" आप ने काफ़िले वालों की बातें सुनीं तो और ज़ियादा रोने लगे कि, "अफ़्सोस ! मैं कितना गुनहगार हूं कि मेरे ख़ौफ़ से उम्मते रसूल के क़ाफ़िले रात में सफ़र नहीं करते और घरों में औ़रतें मेरा नाम ले कर बच्चों को डराती हैं।"

आप मुसलसल रोते रहे यहां तक कि सुब्ह़ हो गई और आप ने सच्ची तौबा कर के येह इरादा किया कि अब सारी ज़िन्दगी का'बतुल्लाह की मुजावरी और **अल्लाह** तआ़ला की इ़बादत में गुज़ारूंगा। चुनान्चे आप ने पहले इ़ल्मे ह़दीष पढ़ना शुरूअ़ किया और थोड़े ही अ़र्से में एक साहिबे फ़ज़ीलत मुह़द्दिष हो गए और ह़दीष का दर्स देना भी शुरूअ़ कर दिया। (اولیائے رجال الحدیث ص ۲۰۶)

﴿8﴾ तीस साल तक सच्ची तौबा की दुआ़ करने वाला

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू इस्ह़ाक़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ فरमाते हैं कि "मैं ने तीस साल तक **अल्लाह** तआ़ला की बारगाह में दुआ़ मांगी कि ऐ **अल्लाह** रब्बल इ़ज़्ज़त ! तू मुझे सच्ची और ख़ालिस तौबा की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमा।" तीस बरस गुज़र जाने के बा'द मैं अपने दिल में तअ़ज्जुब करने लगा और बारगाहे ईज़दी में अ़र्ज़ किया : "ऐ **अल्लाह** तू पाक और बे ऐ़ब है, मैं ने तीस बरस तक तेरी बारगाह में एक ह़ाजत की इल्तिजा की लेकिन तू ने अब तक मेरी ह़ाजत पूरी नहीं की।"

जब मैं सो गया तो ख़्वाब में देखा कि एक शख़्स मुझ से कह रहा था : "तुम अपनी तीस साला दुआ़ पर तअ़ज्जुब और ह़ैरत करते हो, क्या तुम्हें येह नहीं मा'लूम कि तुम **अल्लाह** से कितनी बड़ी चीज़

मांग रहे हो ? तुम इस बात का सुवाल कर रहे हो कि **अल्लाह** तआ़ला तुम्हें अपना दोस्त और महबूब बना ले, क्या तुम ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का येह फ़रमान नहीं सुना : ''اِنَّ اللّٰهَ یُحِبُّ التَّوَّابِیْنَ وَیُحِبُّ الْمُتَطَهِّرِیْن **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** बेशक **अल्लाह** पसन्द रखता है बहुत तौबा करने वालों को और पसन्द रखता है सुथरों को।'' (پ۲،البقرہ:۲۲۲)

तो क्या तुम इस महब्बत को मा'मूली समझते हो ?

(منہاج العابدین،الی جنۃ رب العالمین العقبۃ الثانیۃ عقبۃ التوبۃ،ص۳۵)

﴿9﴾ खुरासानी आ़लिम की तौबा

एक मरतबा कोई खुरासानी आ़लिम साहिब, हज़रते कुत़बुद्दीन औलिया अबू इस्हाक़ इब्राहीम عَلَیْہِ رَحْمَۃُ के बयान में शरीक थे। पूरे मजमअ़ में आप के पुर अषर वा'ज़ से एक वजदानी कैफ़िय्यत त़ारी थी। उस वक़्त खुरासानी आ़लिम साहिब के दिल में येह बात आई कि मेरा इ़ल्म शैख़ से कहीं ज़ाइद है लेकिन जो मक़बूलिय्यत इन्हें ह़ासिल है वोह मुझे तमाम उ़लूम पर दस्तरस के बा वुजूद भी ह़ासिल नहीं।

सय्यिदुना अबू इस्हाक़ इब्राहीम عَلَیْہِ رَحْمَۃُ ने उसी वक़्त अपने नूरे बात़िन से उस आ़लिम की निय्यत को भांप कर इजतिमाअ़ को मुख़ात़ब कर के फ़रमाया : ''इस क़िन्दील की त़रफ़ देखो, आज क़िन्दील का तेल और पानी आपस में बातें कर रहे हैं। पानी का कहना है कि खुदा عَزَّوَجَلَّ ने मुझे हर शै पर फ़ौक़िय्यत अ़त़ा की है क्यूंकि अगर मेरा वुजूद न होता तो लोग शदीद प्यास से मर जाते और येह मरतबा तुझे ह़ासिल नहीं, इस के बा वुजूद तू मेरे ऊपर आ जाता है। इस के जवाब में तेल ने कहा कि मैं मुन्कसिरुल मिज़ाज हूं और तुझ में गुरूर व तकब्बुर है क्यूंकि मेरा बीज पहेले ज़मीन में डाला गया फिर पौदा निकलने के बा'द मुझे काट कर कोहलो में पीला गया, इस के बा'द मैं ने खुद को जला जला कर दुन्या को रोशनी अ़त़ा की और जिस

क़दर अज़िय्यत मुझे पहुंचाई गईं मैं ने इन सब को नज़र अन्दाज़ कर दिया।" इस के बा'द आप ने वा'ज़ ख़त्म कर दिया और वोह ख़ुरासानी आ़लिम आप के मक़्सद को समझ कर आप के क़दमों पर गिर पड़े और ताइब हो गए। (تذکرۃ الاولیاء، باب نودم ذکر شیخ ابو اسحاق شہریار، ج ۲، ص ۲۴۶)

﴾10﴿ शहज़ादे की तौबा

एक नेक शख़्स के घर की दीवार अचानक गिर गई। उसे बड़ी परेशानी लाहि़क़ हुई और वोह उसे दोबारा बनवाने के लिये किसी मज़दूर की तलाश में घर से निकला और चौराहे पर जा पहुंचा। वहां उस ने मुख़्तलिफ़ मज़दूरों को देखा जो काम के इन्तिज़ार में बैठे थे। इन में एक नौजवान भी था जो सब से अलग थलग खड़ा था, उस के एक हाथ में थैला और दूसरे हाथ में तीशा था।

उस शख़्स का कहना है कि,

"मैं ने उस नौजवान से पूछा," "क्या तुम मज़दूरी करोगे?" नौजवान ने जवाब दिया, "हां!" मैं ने कहा, "गारे का काम करना होगा।" नौजवान कहने लगा, "ठीक है! लेकिन मेरी तीन शर्तें हैं अगर तुम्हें मन्ज़ूर हों तो मैं काम करने के लिये तय्यार हूं, पहली शर्त़ येह है कि तुम मेरी मज़दूरी पूरी अदा करोगे, दूसरी शर्त़ येह है कि मुझ से मेरी ता़क़त और सिह़्ह़त के मुता़बिक़ काम लोगे और तीसरी शर्त़ येह है कि नमाज़ के वक़्त मुझे नमाज़ अदा करने से नहीं रोकोगे।" मैं ने येह तीनों शर्तें क़बूल कर लीं और उसे साथ ले कर घर आ गया, जहां मैं ने उसे काम बताया और किसी ज़रूरी काम से बाहर चला गया। जब मैं शाम के वक़्त वापस आया तो देखा कि उस ने आ़म मज़दूरों से दुगना काम किया था। मैं ने ब ख़ुशी उस की उजरत अदा की और वोह चला गया।

दूसरे दिन मैं उस नौजवान की तलाश मैं दोबारा उस चौराहे पर गया लेकिन वोह मुझे नज़र नहीं आया। मैं ने दूसरे मज़दूरों से उस के बारे में दरयाफ़्त किया तो उन्हों ने बताया कि वोह हफ़्ते में सिर्फ़ एक दिन मज़दूरी करता है। येह सुन कर मैं समझ गया कि वोह आ़म मज़दूर नहीं बल्कि कोई बड़ा आदमी है। मैं ने उन से उस का पता मा'लूम किया और उस जगह पहुंचा तो देखा कि वोह नौजवान ज़मीन पर लैटा हुवा था और उसे सख़्त बुख़ार था। मैं ने उस से कहा, "मेरे भाई ! तू यहां अजनबी है, तन्हा है और फिर बीमार भी है, अगर पसन्द करो तो मेरे साथ मेरे घर चलो और मुझे अपनी ख़िदमत का मौक़अ़ दो।" उस ने इन्कार कर दिया लेकिन मेरे मुसलसल इसरार पर मान गया लेकिन एक शर्त़ रखी कि वोह मुझ से खाने की कोई शै नहीं लेगा, मैं ने उस की येह शर्त़ मन्ज़ूर कर ली और उसे अपने घर ले आया।

वोह तीन दिन मेरे घर क़ियाम पज़ीर रहा लेकिन उस ने न तो किसी चीज़ का मुत़ालबा किया और न ही कोई चीज़ ले कर खाई। चौथे रोज़ उस के बुख़ार में शिद्दत आ गई तो उस ने मुझे अपने पास बुलाया और कहने लगा, "मेरे भाई ! लगता है कि अब मेरा आख़िरी वक़्त क़रीब आ गया है लिहाज़ा जब मैं मर जाऊं तो मेरी इस वसिय्यत पर अ़मल करना कि, जब मेरी रूह़ जिस्म से निकल जाए तो मेरे गले में रस्सी डालना और घसीटते हुए बाहर ले जाना और अपने घर के इर्द गिर्द चक्कर लगवाना और येह सदा देना कि लोगो ! देख लो अपने रब्ब तआ़ला की नाफ़रमानी करने वालों का येह ह़श्र होता है।" शायद इस त़रह़ मेरा रब्ब عَزَّوَجَلَّ मुझे मुआ़फ़ कर दे। जब तुम मुझे ग़ुस्ल दे चुको तो मुझे इन्ही कपड़ों में दफ़्न कर देना फिर बग़दाद में ख़लीफ़ा हारून रशीद के पास जाना और येह क़ुरआने मजीद और अंगूठी उन्हें देना और मेरा येह पैग़ाम भी देना कि, "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ

से डरो ! कहीं ऐसा न हो कि ग़फ़्लत और नशे की हालत में मौत आ जाए और बा'द में पछताना पड़े, लेकिन फिर उस से कुछ हासिल न होगा।''

वोह नौजवान मुझे येह वसिय्यत करने के बा'द इन्तिक़ाल कर गया। मैं उस की मौत के बा'द काफ़ी देर तक आंसू बहाता रहा और ग़मज़दा रहा। फिर (न चाहते हुए भी) मैं ने उस की वसिय्यत पूरी करने के लिये एक रस्सी ली और उस की गर्दन में डालने का क़स्द किया तो कमरे के एक कोने से निदा आई कि, ''इस के गले में रस्सी मत डालना, क्या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के औलिया से ऐसा सुलूक किया जाता है ?'' येह आवाज़ सुन कर मेरे बदन पर कपकपी तारी हो गई। येह सुनने के बा'द मैं ने उस के पाऊं को बोसा दिया और उस के कफ़न व दफ़्न का इन्तिज़ाम करने चला गया।

उस की तदफ़ीन से फ़ारिग़ होने के बा'द मैं उस का क़ुरआने पाक और अंगूठी ले कर ख़लीफ़ा के महल की जानिब रवाना हो गया। वहां जा कर मैं ने उस नौजवान का वाक़िआ एक काग़ज़ पर लिखा और महल के दारोग़ा से इस सिलसिले में बात करना चाही तो उस ने मुझे झिड़क दिया और अन्दर जाने की इजाज़त देने की बजाए अपने पास बिठा लिया। आख़िरे कार ! ख़लीफ़ा ने मुझे अपने दरबार में तलब किया और कहने लगा, ''क्या मैं इतना ज़ालिम हूं कि मुझ से बराहे रास्त बात करने की बजाए रुक़ए का सहारा लिया ?'' मैं ने अ़र्ज़ की, '**अल्लाह** तआ़ला आप का इक़्बाल बुलन्द करे, मैं किसी ज़ालिम की फ़रयाद ले कर नहीं आया बल्कि एक पैग़ाम ले कर हाज़िर हुवा हूं।'' ख़लीफ़ा ने उस पैग़ाम के बारे में दरयाफ़्त किया तो मैं ने वोह क़ुरआने मजीद और अंगूठी निकाल कर उस के सामने रख दी। ख़लीफ़ा ने उन चीज़ों को देखते ही कहा, ''येह चीज़ें तुझे किस ने दी हैं ?'' मैं ने अ़र्ज़ की, ''एक गारा बनाने वाले मज़दूर ने.....।'' ख़लीफ़ा ने इन अल्फ़ाज़ को तीन बार दोहराया, ''गारा बनाने वाला.....।''

"गारा बनाने वाला.....।" "गारा बनाने वाला.....।"और रो पड़ा। काफ़ी देर रोने के बा'द मुझ से पूछा, "वोह गारा बनाने वाला अब कहां है?" मैं ने जवाब दिया, "वोह मज़दूर फ़ौत हो चुका है।" येह सुन कर ख़लीफ़ा बे होश हो कर गिर गया और अ़स्र तक बेहोश रहा। मैं उस दौरान हैरान व परेशान वहीं मौजूद रहा। फिर जब ख़लीफ़ा को कुछ इफ़ाक़ा हुवा तो मुझ से दरयाफ़्त किया, "उस की वफ़ात के वक़्त तुम उस के पास थे?" मैं ने इषबात में सर हिला दिया तो कहने लगा : "उस ने तुझे कोई वसिय्यत भी की थी?" मैं ने उसे नौजवान की वसिय्यत बताई और वोह पैग़ाम भी दे दिया जो उस नौजवान ने ख़लीफ़ा के लिये छोड़ा था।

जब ख़लीफ़ा ने येह सारी बातें सुनीं तो मज़ीद ग़मगीन हो गया और अपने सर से इमामा उतार दिया, अपने कपड़े चाक कर डाले और कहने लगा, "ऐ मुझे नसीह़त करने वाले! ऐ मेरे ज़ाहिद व पारसा! ऐ मेरे शफ़ीक़!....." इस त़रह़ के बहुत से अलक़ाबात ख़लीफ़ा ने उस मरने वाले नौजवान को दिये और मुसलसल आंसू भी बहाता रहा। येह सारा मुआ़मला देख कर मेरी हैरानी और परेशानी में मज़ीद इज़ाफ़ा हो गया कि ख़लीफ़ा एक आ़म से मज़दूर के लिये इस क़दर ग़मज़दा क्यूं है? जब रात हुई तो ख़लीफ़ा ने मुझ से उस की क़ब्र पर ले जाने की ख़्वाहिश ज़ाहिर की तो मैं उस के साथ हो लिया। ख़लीफ़ा चादर में मुंह छुपाए मेरे पीछे पीछे चलने लगा। जब हम क़ब्रिस्तान में पहुंचे तो मैं ने एक क़ब्र की त़रफ़ इशारा कर के कहा, "आ़ली जाह! येह उस नौजवान की क़ब्र है।"

ख़लीफ़ा उस की क़ब्र से लिपट कर रोने लगा। फिर कुछ देर रोने के बा'द उस की क़ब्र के सिरहाने खड़ा हो गया और मुझ से कहने लगा : येह नौजवान मेरा बेटा था, मेरी आंखों की ठंडक और मेरे

जिगर का टुकड़ा था, एक दिन येह रक़्सो सुरूर की महफ़िल में गुम था कि मक्तब में किसी बच्चे ने येह आयते करीमा तिलावत की,

اَلَمْ یَاْنِ لِلَّذِیْنَ اٰمَنُوْۤا اَنْ تَخْشَعَ قُلُوْبُهُمْ لِذِكْرِ اللّٰهِ ۔

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : क्या ईमान वालों को अभी वोह वक़्त न आया कि उन के दिल झुक जाएं **अल्लाह** की याद (के लिये)। (پ۲۷،الحدید:۱۶)

जब इस ने येह आयत सुनी तो **अल्लाह** तआ़ला के ख़ौफ़ से थर थर कांपने लगा और इस की आंखों से आंसूओं की झड़ी लग गई और येह पुकार पुकार कर कहने लगा, "क्यूं नहीं ? क्यूं नहीं ? और येह कहते हुए महल के दरवाज़े से बाहर निकल गया। उस दिन से हमें इस के बारे में कोई ख़बर न मिली यहां तक कि आज तुम ने इस की वफ़ात की ख़बर दी।" (हिकायातुस्सालिहीन, स. 67)

﴾11﴿ बादशाह के बेटे की तौबा

एक रोज़ ह़ज़रते सय्यिदुना मन्सूर बिन अ़म्मार عَلَیْهِ رَحْمَةُ बसरा की गलियों में से गुज़र रहे थे। आप ने एक जगह एक महल नुमा इमारत देखी जिस की दीवारें नक़्शो निगार से मुज़य्यन थीं और उस के अन्दर ख़ुद्दाम व ह़शम का एक हुजूम था जो इधर उधर भाग दौड़ कर मुख़्तलिफ़ कामों को सर अन्जाम देने में मसरूफ़ था। उस में बे शुमार ख़ैमे भी लगे हुए थे और महल के दरवाज़े पर दरबान बिल्कुल इसी त़रह़ से बैठे थे जिस त़रह़ बादशाह के महल के बाहर बैठे होते हैं। उस महल नुमा इमारत के मुनक़्क़श दीवान ख़ाने में सोने चांदी का जड़ा हुवा तख़्त रखा हुवा था। आप عَلَیْهِ رَحْمَةُ ने एक इन्तिहाई ख़ूब सूरत नौजवान को उस पर बैठे हुए देखा जिस के गिर्द नोकर और ख़ादिम हाथ बांधे किसी इशारे के मुन्तज़िर थे।

आप फ़रमाते हैं कि मैं ने इस महल नुमा ख़ूब सूरत इमारत में दाख़िल होना चाहा तो दरबानों ने मुझे डांट दिया और अन्दर दाख़िल

होने से मन्अ़ कर दिया। मैं ने सोचा कि "इस वक़्त येह नौजवान दुन्या का बादशाह बना बैठा है लेकिन इसे भी मौत तो आनी है जब मौत आएगी तो इस की बनावटी बादशाही का ख़ातिमा हो जाएगा जो कुछ इस के पास कल तक था वोह अगले दिन तक नहीं रहेगा लिहाज़ा मुझे डरना नहीं चाहिये और इस के पास जा कर ह़क़ बात की नसीह़त करनी चाहिये शायद **अल्लाह** तआ़ला इस पर अपनी रह़मत के दरवाज़े खोल दे। चुनान्चे मैं मौक़अ़ की तलाश में रहा। जूंही दरबान ज़रा मश्ग़ूल हुए मैं आंख बचा कर अन्दर दाख़िल हो गया। मैं ने देखा कि उस नौजवान ने किसी औ़रत को पुकारा। "ऐ निस्वां।" उस के बुलाने पर एक कनीज़ ह़ाज़िर हो गई।"

मुझे यूं लगा जैसे अचानक दिन चढ़ आया हो। उस के साथ और भी बहुत सी कनीज़ें थीं जिन के हाथों में ख़ुश्बूदार मशरूब से भरे हुए बरतन थे। उस मशरूब के साथ उस नौजवान के दोस्तों की ख़िदमत की गई। मशरूब से लुत़्फ़ अन्दोज़ होने के बा'द उस के तमाम अह़बाब यके बा'द दीगरे उस को सलाम कर के रुख़्सत होने लगे। जब वोह दरवाज़े तक पहुंचे तो उन्हों ने मुझे देख लिया और मुझे डांटना शुरूअ़ कर दिया। मैं ने उन से ख़ौफ़ज़दा होने के बजाए पूछा कि "येह नौजवान कौन है?" उन्हों ने बताया : "येह बादशाह का बेटा है।" मैं येह सुन कर तेज़ी से उस नौजवान की त़रफ़ बढ़ा और उस के सामने जा कर रुक गया। जब बादशाह के बेटे ने मुझ जैसे फ़क़ीर को बिल्कुल अपने सामने खड़ा पाया तो सख़्त ग़ुस्से में आ गया और कहने लगा : "अरे पागल ! तू कौन है? तुझे किस ने अन्दर दाख़िल होने दिया? और तू मेरी इजाज़त के बिग़ैर यहां कैसे आया?"

मैं ने कहा : "ऐ शहज़ादे ! ज़रा ठहर जाइये और मेरी ला इ़ल्मी को अपने ह़िल्म और मेरी ख़त़ा को अपने करम से दरगुज़र

कीजिये, मैं एक त़बीब हूं। मेरे इतना कहने से उस का गुस्सा ठंडा पड़ गया और कहने लगा :" "ठीक है, ज़रा हमें भी बताइये कि आप कैसे त़बीब हैं ?" मैं ने कहा : "मैं गुनाहों के दर्द और नाफ़रमानियों के ज़ख़्मों का इलाज करता हूं।" उस ने कहा : "अपना इलाज बयान करो।" मैं ने कहा : "ऐ शहज़ादे ! तू अपने घर में आराम से तख़्त पर तकया लगाए बैठा है और लह्व व लअ़ब में मसरूफ़ जब कि तेरे कारनदे बाहर लोगों पर ज़ुल्मो सितम के पहाड़ तोड़ रहे हैं, क्या तुझे **अल्लाह** से ख़ौफ़ नही आता ? उस के दर्दनाक अ़ज़ाब का तुझे कोई डर नहीं ? तुझे उस दिन का कोई लिह़ाज़ नहीं जिस दिन तमाम बादशाहों और हुक्मरानों को उन की बादशाहियों और हुक्मरानियों से मा'ज़ूल कर दिया जाएगा और तमाम सरकश ज़ालिमों के हाथ बांध दिये जाएंगे, याद कर उस अन्धेरी रात को जो यौमे क़ियामत के बा'द आने वाली है और जहन्नम की आग जो गुस्से की वजह से फटने वाली है और ग़ैज़ व ग़ज़ब से चिंघाड़ रही है, सब लोग उस के ख़ौफ़ से ह़वास बाख़्ता हो जाते हैं। अ़क़्ल मन्द आदमी को दुन्या की फ़ानी ने'मतों, छिन जाने वाली हुकूमतों और औ़रतों के इन ख़ूब सूरत बदनों से धोका नहीं खाना चाहिये जो मरने के बा'द सिर्फ़ तीन दिन में ख़ून पीप और बदबू दार लोथड़ों में तब्दील हो जाते हैं बल्कि अ़क़्ल मन्द आदमी तो जन्नत की उन औ़रतों (या'नी हूरों) का त़ालिब होता है जिन का ख़मीर कस्तूरी अ़म्बर और काफ़ूर से उठाया गया है, जो इतनी ह़सीनो जमील हैं कि आज तक किसी ने इन जैसी ह़सीनो जमील औ़रत न देखी है और न ही सुनी है। **अल्लाह** तआ़ला ने इन्हीं के मुतअ़ल्लिक़ फ़रमाया है :

فِيْهِنَّ قٰصِرٰتُ الطَّرْفِ لَمْ يَطْمِثْهُنَّ اِنْسٌ قَبْلَهُمْ وَلَا جَآنٌّ ۝ فَبِاَيِّ
اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝ كَاَنَّهُنَّ الْيَاقُوْتُ وَالْمَرْجَانُ ۝

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : उन बिछौनों पर वोह औ़रतें हैं कि शोहर के सिवा किसी को आंख उठा कर नहीं देखतीं उन से पहले उन्हें न छुवा किसी आदमी और न जिन्न ने, तो अपने रब्ब की कौन सी ने'मते झुटलाओगे, गोया वोह लअ्ल और याक़ूत और मूंगा हैं। (پ۲۷، الرحمٰن: ۵۶۔۵۸)"

लिहाज़ा ! दाना वोही है जो जन्नत की ने'मतों की ख़्वाहिश रखे और अ़ज़ाबे जहन्नम से बचने की कोशिश करे।"

मेरी येह बातें सुन कर बादशाह के बेटे ने एक ठंडी आह भरी और कहने लगा : "ऐ त़बीब ! तूने तो किसी अस्लहे़ के बिग़ैर ही मुझे क़त्ल कर डाला है, मुझे बताओ क्या हमारा रब्ब عَزَّوَجَلَّ अपने नाफ़रमान भगोड़े बन्दों को क़बूल कर लेता है क्या वोह मुझ जैसे गुनहगार की तौबा क़बूल फ़रमाएगा ?" मैं ने कहा : "क्यूं नहीं ! वोह बड़ा ग़फ़ूरो रह़ीम और करीम है।" मेरा येह कहना था कि उस ने अपनी क़ीमती अ़बा चाक कर डाली और मह़ल के दरवाज़े से बाहर निकल गया। चन्द सालों बा'द जब मैं ह़ज के लिये बैतुल्लाह शरीफ़ गया तो देखा कि वहां एक नौजवान त़वाफ़े का'बा में मसरूफ़ है। उस ने मुझे सलाम किया और कहने लगा : "आप ने मुझे पहचाना नहीं, मैं वोही बादशाह का बेटा हूं जिस ने आप की बातें सुन कर तौबा की थी।" (ह़िकायातुस्सालिह़ीन, स. 72)

﴾12﴿ डाकूओं के सरदार की तौबा

एक क़ाफ़िला गीलान से बग़दाद की त़रफ़ रवां दवां था। जब येह क़ाफ़िला हमदान शहर से रवाना हुवा तो जैसे ही जंगल शुरूअ़ हुवा डाकूओं का एक गुरौह नुमूदार हुवा और क़ाफ़िले वालों से माल व अस्बाब लूटना शुरूअ़ कर दिया। उस क़ाफ़िले में एक नौजवान भी था जिस की उ़म्र अठ्ठारह (18) साल के लगभग थी। एक राहज़न उस नौजवान के पास आया और कहने लगा : "साहि़ब ज़ादे ! तुम्हारे पास भी कुछ है ?" नौजवान बोला : "मेरे पास चालीस दीनार हैं जो कपड़ों में सिले हुए हैं।" राहज़न ने कहा कि "साहि़ब ज़ादे ! मज़ाक़ न करो,

सच सच बताओ।" नौजवान ने बताया : "मेरे पास वाक़ेई चालीस दीनार हैं, येह देखो मेरी बग़ल के नीचे दीनारों वाली थेली कपड़ों में सिली हुई है" राहज़न ने देखा तो हैरान रह गया और नौजवान को अपने सरदार के पास ले गया और सारा वाक़िआ़ बयान किया। सरदार ने कहा : "नौजवान ! क्या बात है ! लोग तो डाकूओं से अपनी दौलत छुपाते हैं मगर तुम ने सख़्ती किये बिग़ैर अपनी दौलत ज़ाहिर कर दी ?" नौजवान ने कहा : "मेरी मां ने घर से चलते वक़्त मुझे नसीह़त फ़रमाई थी कि बेटा ! हर ह़ाल में सच बोलना।" बस मैं अपनी वालिदा के साथ किया हुवा वा'दा निभा रहा हूं।"

नौजवान का येह बयान ताषीर का तीर बन कर डाकूओं के सरदार के दिल में पैवस्त हो गया, उस की आंखों से आंसूओं का दरिया छलकने लगा। उस का सोया हुवा मुक़द्दर जाग उठा, वोह कहने लगा : "साह़िबज़ादे ! तुम किस क़दर ख़ुश नसीब हो कि दौलत लुटने की परवाह किये बिग़ैर अपनी वालिदा के साथ किये हुए वा'दे को निभा रहे हो और मैं किस क़दर ज़ालिम हूं कि अपने ख़ालिक़ व मालिक के साथ किये हुए वा'दे को पामाल कर रहा हूं और मख़्लूक़े ख़ुदा का दिल दुखा रहा हूं।" येह कहने के बा'द वोह साथियों समेत सच्चे दिल से ताइब हो गया और लूटा हुवा सारा माल वापस कर दिया। (तारीख़े मशाइख़े क़ादिरिय्या, स. 66)

﴾13﴿ एक क़स्साब की तौबा

ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अबू बक्र बिन अ़ब्दुल्लाह हुज़्नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ कहते हैं कि एक क़स्साब अपने पड़ोसी की लौंडी पर आ़शिक़ था। एक दिन वोह लौंडी किसी काम से दूसरे गाऊं को जा रही थी, क़स्साब ने मौक़अ़ ग़नीमत जान कर उस का पीछा किया और कुछ दूर जा कर उसे पकड़ लिया। तब कनीज़ ने कहा कि "ऐ नौजवान ! मेरा दिल भी तेरी त़रफ़ माइल है लेकिन मैं अपने रब्ब عَزَّوَجَلَّ से डरती

हूं।" जब उस क़स्साब ने येह सुना तो बोला, "जब तू **अल्लाह** तआ़ला से डरती है तो क्या मैं उस ज़ाते पाक से न डरूं?" येह कह कर उस ने तौबा कर ली और वहां से पलट पड़ा। रास्ते में प्यास के मारे दम लबों पर आ गया। इत्तिफ़ाक़न उस की मुलाक़ात एक शख़्स से हो गई जो कि किसी नबी عَلَيْهِ السَّلَام का क़ासिद था। उस मर्दे क़ासिद ने पूछा, "ऐ जवान क्या ह़ाल है?" क़स्साब ने जवाब दिया, "प्यास से निढ़ाल हूं।" क़ासिद ने कहा कि "आओ हम दोनों मिल कर ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ से दुआ़ करें ताकि **अल्लाह** तआ़ला अब्र के फ़िरिश्ते को भेज दे और वोह शहर पहुंचने तक हम पर अपना साया किये रखे।" नौजवान ने कहा कि "मैं ने तो ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की कोई क़ाबिले ज़िक्र इ़बादत भी नहीं की है, मैं किस त़रह़ दुआ़ करूं? तुम दुआ़ करो, मैं आमीन कहूंगा।" उस शख़्स ने दुआ़ की, बादल का एक टुकड़ा उन के सरों पर साया फ़िगन हो गया।

जब येह दोनों रास्ता त़ै करते हुए एक दूसरे से जुदा हुए तो वोह बादल क़स्साब के सर पर आ गया और क़ासिद धूप में हो गया। क़ासिद ने कहा, "ऐ जवान ! तू ने तो कहा था कि तूने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की कुछ भी इ़बादत नहीं की, फिर येह बादल तेरे सर पर किस त़रह़ साया फ़िगन हो गया? तू मुझे अपना ह़ाल सुना।" नौजवान ने कहा, "और तो मुझे कुछ मा'लूम नहीं लेकिन एक कनीज़ से ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की बात सुन कर मैं ने तौबा ज़रूर की थी।" क़ासिद बोला, तूने सच कहा, **अल्लाह** तआ़ला के हुज़ूर में जो मर्तबा व दर्जा ताइब (तौबा करने वाले) का है वोह किसी दूसरे का नहीं है।"

(کتاب التوابین، توبۃ القصاب والجاریۃ، ص ۷۵)

﴾14﴿ बेहोश होने वाले शराबी की तौबा

ह़ज़रते सिरी सक़त़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ ने एक शराबी को देखा जो मदहोश ज़मीन पर गिरा हुवा था और अपने शराब आलूदा मुंह से "**अल्लाह अल्लाह**" कह रहा था। आप ने वहीं बैठ कर उस

का मुंह पानी से धोया और फ़रमाया : "इस बे ख़बर को क्या ख़बर ? कि नापाक मुंह से किस पाक ज़ात का नाम ले रहा है !" मुंह धो कर आप चले गए। जब शराबी को होश आया तो लोगों ने उसे बताया कि तुम्हारी बेहोशी के आ़लम में ह़ज़रते सिरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ यहां आए थे और तुम्हारा मुंह धो कर गए हैं। शराबी येह सुन कर बड़ा पशेमान व नादिम हुवा और रोने लगा और नफ़्स को मुख़ातब कर के बोला : "बे शर्म ! अब तो सिरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ भी तुझे इस ह़ाल में देख गए हैं, ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ से डर और आयन्दा के लिये तौबा कर।"

रात को ह़ज़रते सिरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ ने ख़्वाब में किसी कहने वाले को येह कहते सुना : "ऐ सिरी ! तुम ने शराबी का हमारी ख़ातिर मुंह धोया, हम ने तुम्हारी ख़ातिर उस का दिल धो दिया।" ह़ज़रते सिरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ तहज्जुद के वक़्त मस्जिद में गए तो उसी शराबी को तहज्जुद पढ़ते हुए पाया। आप ने उस से पूछा : "तुम में येह इन्क़िलाब कैसे आ गया ?" तो वोह बोला : "आप मुझ से क्यूं पूछते हैं जब कि **अल्लाह** ने आप को बता दिया है।" (फ़ैज़ाने सुन्नत ब ह़वाला रौज़ुल फ़ाइक़, स. 317)

﴾15﴿ गुनाहों की दलदल में फंसने वाले नौजवान की तौबा

एक बुज़ुर्ग عَلَيْهِ رَحْمَةُ फ़रमाते हैं कि एक बार निस्फ़ रात गुज़र जाने के बा'द मैं जंगल की त़रफ़ निकल खड़ा हुवा। रास्ते में मैं ने देखा कि चार आदमी एक जनाज़ा उठाए जा रहे हैं। मैं समझा कि शायद इन्हों ने इसे क़त्ल किया है और लाश ठिकाने लगाने के लिये कहीं ले जा रहे हैं। जब वोह मेरे नज़दीक आए तो मैं ने हिम्मत कर के उन से पूछा : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का जो ह़क़ तुम पर है उस को सामने रखते हुए मेरे सुवाल का जवाब दो, क्या तुम ने ख़ुद इसे क़त्ल किया है या किसी और ने और अब तुम इसे ठिकाने लगाने के लिये कहां ले जा रहे हो ?" उन्हों ने जवाब दिया : "हम ने न तो इसे क़त्ल

किया है और न ही येह मक़तूल है बल्कि हम मज़दूर हैं और इस की मां ने हमें मज़दूरी देनी है, वोह इस की क़ब्र के पास हमारा इन्तिज़ार कर रही है, आओ तुम भी हमारे साथ आ जाओ।" मैं तजस्सुस की वजह से उन के साथ हो लिया। हम क़ब्रिस्तान में पहुंचे तो देखा कि वाक़ेई एक ताज़ा खुदी हुई क़ब्र के पास एक बुढ़्ढी ख़ातून खड़ी थीं।

मैं उन के क़रीब गया और पूछा : "अम्मां जान ! आप अपने बेटे के जनाज़े को दिन के वक़्त यहां क्यूं नहीं लाईं ? ताकि और लोग भी इस के कफ़न दफ़न में शरीक हो जाते ?" उन्हों ने कहा : "येह जनाज़ा मेरे लख़्ते जिगर का है, मेरा येह बेटा बड़ा शराबी और गुनाहगार था, हर वक़्त शराब के नशे और गुनाह की दलदल में गर्क़ रहता था। जब इस की मौत का वक़्त क़रीब आया तो इस ने मुझे बुला कर तीन चीज़ों की वसिय्यत की :

(1) जब मैं मर जाऊं तो मेरी गर्दन में रस्सी डाल कर घर के इर्द गिर्द घसीटना और लोगों को कहना कि गुनहगारों और नाफ़रमानों की येही सज़ा होती है।

(2) मुझे रात के वक़्त दफ़न करना क्यूंकि दिन के वक़्त जो भी मेरे जनाज़े को देखेगा मुझे ला'न त़ा'न करेगा।

(3) जब मुझे क़ब्र में रखने लगो तो मेरे साथ अपना एक सफ़ेद बाल भी रख देना क्यूंकि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ सफ़ेद बालों से ह़या फ़रमाता है, हो सकता है कि वोह मुझे इस की वजह से अ़ज़ाब से बचा ले।"

जब येह फ़ौत हो गया तो मैं ने इस की पहली वसिय्यत के मुत़ाबिक़ जब इस के गले में रस्सी डाली और इसे घसीटने लगी तो हातिफ़े ग़ैबी से आवाज़ आई : "ऐ बुढ़िया ! इसे यूं मत घसीटो, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इसे अपने गुनाहों पर शर्मिन्दगी (या'नी तौबा) की

वजह से मुआ़फ़ फ़रमा दिया है।" जब मैं ने उस बुढ़्ढी औ़रत की येह बात सुनी तो मैं उस जनाज़े के पास गया, उस पर नमाज़े जनाज़ा पढ़ी फिर उसे क़ब्र में दफ़्न कर दिया। मैं ने उस की बुढ़्ढी मां के सर का एक सफ़ेद बाल भी उस के साथ क़ब्र में रख दिया। इस काम से फ़ारिग़ हो कर जब हम उस की क़ब्र को बन्द करने लगे तो उस के जिस्म में ह़रकत पैदा हुई और उस ने अपना हाथ कफ़्न से बाहर निकाल कर बुलन्द किया और आंखें खोल दीं। मैं येह देख कर घबरा गया लेकिन उस ने हमें मुख़ातब कर के मुस्कुराते हुए कहा : "ऐ शैख़ ! हमारा रब्ब عَزَّوَجَلَّ बड़ा ग़फ़ूर व रह़ीम है, वोह एह़सान करने वालों को भी बख़्श देता है और गुनहगारों को भी मुआ़फ़ फ़रमा देता है।" येह कह कर उस ने हमेशा के लिये आंखें बन्द कर लीं। हम सब ने मिल कर उस की क़ब्र को बन्द कर दिया और उस पर मिट्टी दुरुस्त कर के वापस आ गए।" (ह़िकायातुस्सालिह़ीन, स. 78)

﴾16﴿ एक अमीर नौजवान की तौबा

ह़ज़रते सय्यिदुना सालेह़ मुर्री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ एक मह़फ़िल में वा'ज़ फ़रमा रहे थे। उन्हों ने अपने सामने बैठने वाले एक नौजवान को कहा, "कोई आयत पढ़ो।" तो उस ने येह आयत पढ़ दी :

"وَاَنْذِرْهُمْ يَوْمَ الْاٰزِفَةِ اِذِ الْقُلُوْبُ لَدَى الْحَنَاجِرِ كٰظِمِيْنَ ط
مَا لِلظّٰلِمِيْنَ مِنْ حَمِيْمٍ وَّلَا شَفِيْعٍ يُّطَاعُ 0

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और उन्हें डराओ उस नज़्दीक आने वाली आफ़त के दिन से जब दिल गलों के पास आ जाएंगे ग़म में भरे और ज़ालिमों का न कोई दोस्त न कोई सिफ़ारिशी जिस का कहा माना जाए।" (پ۲۴، المؤمن ۱۸)

येह आयत सुन कर आप ने फ़रमाया : "कोई कैसे ज़ालिम का दोस्त या मददगार हो सकता है ? क्यूंकि वोह तो **अल्लाह**

तआ़ला की गिरिफ़्त में होगा। बेशक तुम सरकशी करने वाले गुनहगारों को देखोगे कि उन्हें ज़न्जीरों में जकड़ कर जहन्नम की त़रफ़ ले जाया जा रहा होगा और वोह बरह्ना पाऊं होंगे, उन के जिस्म बोझल, चेहरे सियाह और आंखें ख़ौफ़ से नीली होंगी।" वोह पुकार कर कहेंगे, "हम हलाक हो गए ! हम बरबाद हो गए ! हमें क्यूं जकड़ा गया है, हमे कहां ले जाया जा रहा है और हमारे साथ क्या सुलूक किया जाएगा ?" फ़िरिश्ते उन्हें आग के कोड़ों से हांकेंगे, कभी वोह मुंह के बल गिरेंगे और कभी उन्हें घसीट कर ले जाया जाएगा। जब रो रो कर उन के आंसू ख़ुश्क हो जाएंगे तो ख़ून के आंसू रोना शुरूअ़ कर देंगे, उन के दिल दहल जाएंगे और ह़ैरान व परेशान होंगे। अगर कोई उन्हें देख ले तो उन पर निगाह न जमा सकेगा, न दिल को संभाल सकेगा और येह होलनाक मन्ज़र देखने वाले के बदन पर लर्ज़ा त़ारी हो जाएगा।"

येह कहने के बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना सालेह़ मुर्री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ बहुत रोए और आह भर कर कहने लगे, "अफ़्सोस ! कैसा ख़ौफ़नाक मन्ज़र होगा।" येह कह कर फिर रोने लगे और उन को रोता देख कर लोग भी रोने लगे। इतने में एक नौजवान खड़ा हो गया और कहने लगा, "हुज़ूर ! क्या येह सारा मन्ज़र बरोज़े क़ियामत होगा ?" आप ने जवाब दिया, हां ! और येह मन्ज़र ज़ियादा त़वील नहीं होगा क्यूंकि जब उन्हें जहन्नम में डाल दिया जाएगा तो उन की आवाज़ें आना बन्द हो जाएंगी।" येह सुन कर नौजवान ने एक चीख़ मारी और कहा, "अफ़्सोस ! मैं अपने परवर दगार عَزَّوَجَلَّ की इत़ाअ़त में सुस्ती करता रहा, आह ! मैं ने अपनी ज़िन्दगी ज़ाएअ़ कर दी" और रोने लगा। कुछ देर बा'द वोह कहने लगा : "ऐ मेरे रब्ब عَزَّوَجَلَّ मैं अपने गुनाहों से तौबा करने के लिये तेरी बारगाह में ह़ाज़िर हूं, मुझे तेरे सिवा किसी से ग़रज़

नहीं, मुझ में जो बुराइयां हैं उन्हें मुआफ़ फ़रमा कर मुझे क़बूल कर ले, मेरे गुनाह मुआफ़ कर दे, मुझ समेत तमाम हाज़िरीन पर अपना करम व फ़ज़्ल फ़रमा और हमें अपनी सख़ावत से माला माल कर दे, या अरहमर्राहिमीन ! मैं ने गुनाहों की गठड़ी तेरे सामने रख दी है और सिद्क़े दिल से तेरे सामने हाज़िर हूं, अगर तू मुझे क़बूल नहीं करेगा तो मैं हलाक हो जाऊंगा।" इतना कह कर वोह नौजवान ग़श खा कर गिरा और बेहोश हो गया और चन्द दिन बिस्तरे अ़लालत पर गुज़ार कर इन्तिक़ाल कर गया।

उस के जनाज़े में कषीर लोग शामिल हुए और रो रो कर उस के लिये दुआ़एं की गईं। ह़ज़रते सय्यिदुना सालेह़ मुर्री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ अकषर उस का ज़िक्र अपने वा'ज़ में किया करते। एक दिन किसी ने उस नौजवान को ख़्वाब में देखा तो पूछा, "तुम्हारे साथ क्या मुआ़मला हुवा?" तो उस ने जवाब दिया, मुझे ह़ज़रते सालेह़ मुर्री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की मह़फ़िल से बरकतें मिलीं और मुझे जन्नत में दाख़िल कर दिया गया।

(كتاب التوابين، توبة فتى من الازدان، ص ۲۵۰ ـ ۲۵۲)

﴾17﴿ एक गाइका की तौबा

बसरा में एक इन्तिहाई ह़सीनो जमील औ़रत रहा करती थी। लोग उसे शा'वाना के नाम से जानते थे। ज़ाहिरी हुस्नो जमाल के साथ साथ उस की आवाज़ भी बहुत ख़ूबसूरत थी। अपनी ख़ूबसूरत आवाज़ की वजह से वोह गाईकी और नौह़ागिरी में मश्हूर थी। बसरा शहर में खुशी और ग़मी की कोई मजलिस उस के बिग़ैर अधूरी तसव्वुर की जाती थी। येही वजह थी कि उस के पास बहुत सा मालो दौलत जम्अ़ हो गया था। बसरा शहर में फ़िस्क़ो फ़ुजूर के ह़वाले से उस की मिषाल दी जाती थी। उस का रहन सहन अमीराना था, वोह बेश क़ीमत लिबास ज़ैबे तन करती और गिरां बहा ज़ेवरात से बनी संवरी रहती थी।

एक दिन वोह अपनी रूमी और तुर्की कनीज़ों के साथ कहीं जा रही थी। रास्ते में उस का गुज़र ह़ज़रते सालेहुल मुर्री عَلَيْهِ رَحْمَةُ के घर के क़रीब से हुवा। आप **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के बरगुज़ीदा बन्दों में से थे। आप बा अ़मल आ़लिमे दीन और आ़बिदो ज़ाहिद थे। आप अपने घर में लोगों को वा'ज़ इरशाद फ़रमाया करते थे। आप के वा'ज़ की ताषीर से लोगों पर रिक़्क़त त़ारी हो जाती और वोह बड़ी ज़ोर ज़ोर से आहो बुका शुरूअ़ कर देते और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ख़ौफ़ से उन की आंखों से आंसूओं की झडियां लग जातीं। जब शा'वाना नामी वोह औ़रत वहां से गुज़रने लगी तो उस ने घर से आहो फ़ुग़ां की आवाज़ें सुनीं। आवाज़ें सुन कर उसे बहुत ग़ुस्सा आया। वोह अपनी कनीज़ों से कहने लगी : "तअ़ज्जुब की बात है कि यहां नौह़ा किया जा रहा है और मुझे इस की ख़बर तक नहीं दी गई।" फिर उस ने एक ख़ादिमा को घर के ह़ालात मा'लूम करने के लिये अन्दर भेज दिया। वोह लौंडी अन्दर गई और अन्दर के ह़ालात देख कर उस पर भी ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ का ख़ौफ़ त़ारी हो गया और वोह वहीं बैठ गई। जब वोह वापस न आई तो शा'वाना ने काफ़ी इन्तिज़ार के बा'द दूसरी और फिर तीसरी लौंडी को अन्दर भेजा मगर वोह भी वापस न लौटीं। फिर उस ने चौथी ख़ादिमा को अन्दर भेजा जो थोड़ी देर बा'द वापस लौट आई और उस ने बताया कि घर में किसी के मरने पर मातम नहीं हो रहा बल्कि अपने गुनाहों पर आहो बुका की जा रही है, लोग अपने गुनाहों की वजह से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ख़ौफ़ से रो रहे हैं।"

शा'वाना ने येह सुना तो हंस दी और उन का मज़ाक़ उड़ाने की निय्यत से घर के अन्दर दाख़िल हो गई। लेकिन क़ुदरत को कुछ और ही मन्ज़ूर था। जूंही वोह अन्दर दाख़िल हुई **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उस के दिल को फैर दिया। जब उस ने ह़ज़रते सालेहुल मुर्री عَلَيْهِ رَحْمَةُ को देखा तो दिल में कहने लगी : "अफ़्सोस ! मेरी तो सारी उ़म्र ज़ाएअ़

हो गई, मैं ने अनमोल ज़िन्दगी गुनाहों में अकारत कर दी, वोह मेरे गुनाहों को क्यूंकर मुआ़फ़ फ़रमाएगा ?" इन्ही ख़यालात से परेशान हो कर उस ने ह़ज़रते सालेहुल मुर्री عَلَيْهِ رَحْمَةُ से पूछा : "ऐ इमामुल मुस्लिमीन ! क्या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ नाफ़रमानों और सरकशों के गुनाह भी मुआ़फ़ फ़रमा देता है ?" आप ने फ़रमाया : "हां ! येह वा'ज़ व नसीह़त और वा'दे वईदें सब उन्ही के लिये तो हैं ताकि वोह सीधे रास्ते पर आ जाएं ।" इस पर भी उस की तसल्ली न हुई तो वोह कहने लगी : "मेरे गुनाह तो आस्मान के सितारों और समुन्दर की झाग से भी ज़ियादा हैं ।" आप ने फ़रमाया : कोई बात नहीं ! अगर तेरे गुनाह शा'वाना से भी ज़ियादा हों तो भी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुआ़फ़ फ़रमा देगा ।" येह सुन कर वोह चीख़ पड़ी और रोना शरूअ़ कर दिया और इतना रोई कि उस पर बेहोशी त़ारी हो गई ।

थोड़ी देर बा'द जब उसे होश आया तो कहने लगी : "ह़ज़रत ! मैं ही वोह शा'वाना हूं जिस के गुनाहों की मिषालें दी जाती हैं ।" फिर उस ने अपना क़ीमती लिबास और गिरां क़दर ज़ेवर उतार कर पुराना सा लिबास पहन लिया और गुनाहों से कमाया हुवा सारा माल ग़ुरबा में तक़्सीम कर दिया और अपने तमाम ग़ुलाम और ख़ादिमाएं भी आज़ाद कर दीं । फिर अपने घर में मुक़य्यद हो कर बैठ गई । इस के बा'द वोह शबो रोज़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इबादत में मसरूफ़ रहती और अपने गुनाहों पर रोती रहती और इन की मुआ़फ़ी मांगती रहती । रो रो कर रब्ब عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में इल्तिजाएं करती : "ऐ तौबा करने वालों को मह़बूब रखने वाले और गुनहगारों को मुआ़फ़ फ़रमाने वाले ! मुझ पर रह़्म फ़रमा, मैं कमज़ोर हूं तेरे अ़ज़ाब की सख़्तियों को बरदाश्त नहीं कर सकती, तू मुझे अपने अ़ज़ाब से बचा ले और मुझे अपनी ज़ियारत से मुशर्रफ़ फ़रमा ।" उस ने इसी ह़ालत में चालीस साल ज़िन्दगी बसर की और इन्तिक़ाल कर गई । (ह़िकायातुस्सालिह़ीन, स. 74)

﴾18﴿ एक वज़ीर की तौबा

ह़ज़रते सय्यिदुना जा'फ़र बिन ह़र्ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ पहले पहल बहुत मालदार शख़्स थे और इसी के बल बूते पर बादशाह के वज़ीर भी बन गए और लोगों पर ज़ुल्मो सितम ढाना शुरूअ़ कर दिया। एक दिन आप ने किसी को येह आयत पढ़ते हुए सुना,

اَلَمْ یَاْنِ لِلَّذِیْنَ اٰمَنُوْۤا اَنْ تَخْشَعَ قُلُوْبُهُمْ لِذِكْرِ اللّٰهِ ؕ

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : क्या ईमान वालों को अभी वोह वक़्त न आया कि उन के दिल झुक जाएं **अल्लाह** की याद (के लिये)। (پ۲۷،الحدید۱۶)

येह सुन कर आप ने एक चीख़ मारी और कहा, "ऐ मेरे रब्ब عَزَّوَجَلَّ क्यूं नहीं?" आप बार बार येही कहते जाते और रोते जाते। फिर अपनी सुवारी से उतर कर अपने कपड़े उतारे और दरियाए दिजला में छुप गए। एक शख़्स जो आप के ह़ालात से वाक़िफ़ था, दरियाए दिजला के क़रीब से गुज़रा तो आप को पानी में खड़े हुए पाया। चुनान्चे उस ने आप को एक क़मीज़ और तहबन्द भिजवाया। आप ने उन कपड़ों से अपना बदन ढांपा और पानी से बाहर निकल आए। लोगों से ज़ुल्मन लिया गया माल वापस कर दिया और बच रहने वाला माल सदक़ा कर दिया। इस के बा'द आप तह़सीले इ़ल्म और इ़बादत में मश्ग़ूल हो गए, ह़त्ता कि इन्तिक़ाल कर गए।

(किताबुत्तव्वाबीन, जा'फ़र बिन ह़र्ब, स. 163)

﴾19﴿ अज़्दहे से बचने वाले की तौबा

ह़ज़रते ज़ुन्नून मिस्री عَلَیْہِ رَحْمَۃُ एक रोज़ नील के साह़िल की त़रफ़ तशरीफ़ ले गए। उस वक़्त आप किसी गहरी सोच में मगन थे। अचानक आप ने एक बहुत बड़े बिच्छू को तेज़ी के साथ साह़िल की त़रफ़ जाते देखा। आप उस की त़रफ़ मुतवज्जेह हो गए और उस के पीछे पीछे पानी के कनारे जा पहुंचे। आप ने देखा कि दरिया में से एक मेंडक निकला, बिच्छू उस की पीठ पर सुवार हुवा और वोह मेंडक

उसे ले कर दरिया में तैरने लगा और दरिया पार कर गया। ह़ज़रते जुन्नून मिस्री भी उन के पीछे पीछे दरिया के पार चले गए। आप जब दूसरे कनारे पर पहुंचे तो बिच्छू मेंडक की पीठ से उतर कर एक त़रफ़ को चलने लगा। थोड़ी देर चलने के बा'द वोह एक दरख़्त के नीचे जा पहुंचा। आप ने देखा कि वहां एक नौजवान ज़मीन पर मदहोश पड़ा हुवा था और उस के सीने पर एक अज़दहा उसे डंसने के लिये अपना फन फैलाए झूम रहा था। वोही बिच्छू तेज़ी के साथ आया और उस अज़दहे को डंक मार दिया और वापस चला गया। उस के डंक से वोह अज़दहा मर गया।

ह़ज़रते जुन्नून मिस्री عَلَيْهِ رَحْمَةُ ने सोचा कि येह नौजवान कोई आ़म आदमी नहीं है बल्कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का कोई ख़ास बन्दा है लिहाज़ा इस की क़दम बोसी करनी चाहिये। आप उस की क़दम बोसी के लिये उस के क़रीब हुए तो उस के पास से शराब की बड़ी सख़्त बदबू आई। आप ह़ैरान हो गए क्यूंकि वोह एक शराबी आदमी था। इतने में ग़ैब से आवाज़ आई : "ऐ जुन्नून ! ह़ैरान क्यूं होता है, येह भी हमारा ही बन्दा है, अगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ सिर्फ़ नेकोकारों ही की ह़िफ़ाज़त फ़रमाएगा तो गुनहगारों की ह़िफ़ाज़त कौन करेगा ?" आप इस बात से वज्द में आ गए और काफ़ी देर तक वज्द की कैफ़िय्यत में येह शे'र पढ़ते रहे।

तर्जमा : ऐ ख़ुश नसीब सोने वाले ! जिस की ख़ुद रब्बे जहां हर त़रफ़ से ह़िफ़ाज़त फ़रमा रहा है और तू तारीकी में गुनाहों में मुतह़र्रिक रहता है। उस बादशाह की त़रफ़ से आंखें क्यूंकर ग़ाफ़िल हो जातीं जो तुझे हर त़रह़ की ने'मतों के फ़वाइद अ़त़ा फ़रमा रहा है।

जब सूरज ग़ुरूब होने लगा और साह़िल पर ठन्डी ठन्डी हवा चलने लगी तो उस नौजवान के बदन में ह़रकत पैदा हुई। जब उस का नशा उतरा तो उसे कुछ होश आ गया। थोड़ी देर बा'द उस ने आंखें खोल दीं और अपने सामने ह़ज़रते जुन्नून मिस्री عَلَيْهِ رَحْمَةُ को देख कर

शर्मिन्दा हो गया और ख़जालत से पूछने लगा : "ऐ क़िब्लए आ़लम ! आप यहां कैसे ?" आप ने फ़रमाया "इसे छोड़ो, अपने बारे में बताओ, तुम कौन हो ?' उस ने कहा : "आप देख ही रहे हैं मैं शराबी आदमी हूं।" आप ने फ़रमाया : "उधर देखो।" जब उस ने मरे हुए अज़दहे को देखा तो उस के बदन पर लर्ज़ा त़ारी हो गया और वोह ख़ौफ़ से कांपने लगा। आप ने उसे इब्तिदा से ले कर इन्तिहा तक सारा वाक़िआ़ सुनाया तो वोह रो पड़ा और अपने मुंह पर मिट्टी मलने लगा और कहने लगा : "अगर वोह ज़ात अपने गुनाहगारों के साथ ऐसा सुलूक करती है तो नेकोकारों को कितना नवाज़ती होगी।"

येह कह कर जंगल की त़रफ़ चला गया और सख़्त मुजाहदों में मसरूफ़ हो गया। आख़िरे कार एक वक़्त ऐसा आया कि उस का शुमार **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मक़्बूल बन्दों में होने लगा। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उस पर इतना करम फ़रमाया कि अगर वोह दूर से भी किसी बीमार को दम कर देता तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे शिफ़ा अ़त़ा फ़रमा देता। (हिकायातुस्सालिह़ीन, स. 72)

﴾20﴿ एक आ़शिक़ की तौबा

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक عَلَيْهِ رَحْمَةُ की तौबा के बारे में मन्क़ूल है कि "आप एक औ़रत पर इस क़दर फ़रेफ़्ता हो गए कि किसी पल चैन ही न आता था। एक मरतबा सर्दियों की एक त़वील रात में सुब्ह़ तक उस के मकान के सामने इन्तिज़ार में खड़े रहे। ह़त्ता कि फ़ज्र का वक़्त हो गया तो आप को शदीद नदामत हुई कि "मैं मुफ़्त में एक मख़्लूक़ की ख़ातिर इतना इन्तिज़ार करता रहा, अगर मैं येह रात इबादत में गुज़ारता तो इस से लाख दर्जे अच्छा था।" चुनान्चे आप ने फ़ौरन तौबा की और इबादते इलाही عَزَّوَجَلَّ में मसरूफ़ हो गए।

(तज़किरतुल औलिया, जि. 1 स. 166)

﴾21﴿ एक रईस की तौबा

एक रईस, ह़ज़रते सय्यिदुना उ़षमाने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से क़ल्बी इ़नाद रखता था और (مَعَاذَاللّٰہِ عَزَّوَجَلَّ) आप को यहूदी तक कह जाया करता था। इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा عَلَیْہِ رَحْمَۃُ ने एक मरतबा उस से फ़रमाया, "मैं तेरी बेटी की शादी एक यहूदी के साथ करना चाहता हूं।" येह सुन कर उस ने ग़ुस्से से कहा, "आप मुसलमानों के इमाम हो कर ऐसी बात करते हैं? मैं तो ऐसी शादी को क़त्अ़न ह़राम तसव्वुर करता हूं।" आप ने फ़रमाया, "तेरे ह़राम जानने से क्या फ़र्क़ पड़ता है जब कि हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपनी दो साह़िबज़ादियां (مَعَاذَاللّٰہِ عَزَّوَجَلَّ) एक "यहूदी" के निकाह़ में दे दीं?" वोह रईस आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का इशारा समझ गया और तौबा कर के अपने बुरे ख़यालात से बाज़ आ गया। (تذکرۃ الاولیاء، باب ہیجدہم، ذکر ابوحنیفہ، ص۱۸۹)

﴾22﴿ एक पड़ोसी की तौबा

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन रजाआ़ عَلَیْہِ رَحْمَۃُ बयान करते हैं कि कूफ़ा में इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा عَلَیْہِ رَحْمَۃُ के पड़ोस में एक मोची रहता था जो तमाम दिन तो मेह़नत मज़दूरी करता और रात गए घर में मछली या गोश्त ले कर आता फिर उसे भून कर खाता। इस के बा'द शराब पीता जब शराब के नशे में धुत हो जाता तो ख़ूब ऊधम मचाता और शोर करता। इस त़रह़ रात गए तक सिलसिला रहता यहां तक कि उसे नींद घेर लेती।

करोड़ों ह़नफ़ियों के अ़ज़ीम पेशवा ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा عَلَیْہِ رَحْمَۃُ को इस शोरो ग़ुल से बेह़द तक्लीफ़ होती लेकिन आप तमाम रात नमाज़ में मश्ग़ूल रहते। एक रात उस हमसाये मोची की आवाज़ न सुनी। सुब्ह़ को उस के बारे में इस्तिफ़्सार फ़रमाया तो आप को बताया गया कि कल रात उस को सिपाहियों ने पकड़ लिया है और वोह क़ैद में है। इमामे आ'ज़म عَلَیْہِ رَحْمَۃُ ने नमाज़े

फ़ज्र अदा की और अपनी सुवारी पर सुवार हो कर ख़लीफ़ा के पास पहुंचे और अपने आने की ख़लीफ़ा को इत्तिलाअ़ भिजवाई। ख़लीफ़ा ने हुक्म दिया, आप عَلَيْهِ رَحْمَةُ की सुवारी की लगाम थाम कर निहायत ही एह़तिराम के साथ फ़र्शे शाही तक ले आओ और आप عَلَيْهِ رَحْمَةُ को सुवारी से न उतरने दिया जाए। सिपाहियों ने ऐसा ही किया। ख़लीफ़ा ने दरयाफ़्त किया : "क्या हुक्म है ?" आप عَلَيْهِ رَحْمَةُ ने फ़रमाया : "मेरा एक हमसाया मोची था जिसे कल रात सिपाहियों ने पकड़ लिया है उस की आज़ादी का हुक्म फ़रमाइये।" ख़लीफ़ा ने फ़रमान जारी कर दिया कि उस मोची को फ़ौरन रिहा कर दो और हर उस क़ैदी को भी रिहा कर दो जो आज के दिन पकड़ा गया है। चुनान्चे सब को आज़ाद कर दिया गया।

फिर इमामे आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ सुवारी पर सुवार हो कर चल दिये, वोह हमसाया उन के पीछे पीछे चलने लगा तो इमामे आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ ने पूछा : "ऐ नौजवान ! क्या हम ने तुम्हें कोई तक्लीफ़ दी ?" उस ने अ़र्ज़ की : "नहीं बल्कि आप ने तो मेरी मदद फ़रमाई और मेरी सिफ़ारिश फ़रमाई, **अल्लाह** तआ़ला आप को इस की बेहतर जज़ा अ़ता फ़रमाए कि आप ने हमसाये कि हुर्मत और ह़क़ की रिआ़यत फ़रमाई।" इस के बा'द उस शख़्स ने तौबा कर ली और गुनाहों से बाज़ आ गया।

(फ़ैज़ाने सुन्नत, स. 360 ब ह़वाला मनाक़िबे सय्यिदुना इमामे आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ)

﴾23﴿ अपनी जान पर ज़ुल्म करने वाले नौजवान की तौबा

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम عَلَيْهِ رَحْمَةُ की ख़िदमत में एक नौजवान ह़ाज़िर हुवा और कहने लगा, "मैं ने अपनी जान पर बहुत ज़ुल्म किया है, मुझे कुछ नसीह़त इरशाद फ़रमाएं जो मुझे गुनाहों को छोड़ने में मुआ़विन हो।" आप ने इरशाद फ़रमाया कि, "अगर तुम पांच ख़स्लतों को अपना लो तो गुनाह तुम्हें कोई नुक़्सान न देंगे और इन की लज़्ज़त ख़त्म हो जाएगी।" उस ने आमादगी का इज़्हार किया तो आप عَلَيْهِ رَحْمَةُ ने फ़रमाया,

"पहली बात येह है कि जब तुम गुनाह का इरादा करो तो **अल्लाह** तआ़ला का रिज़्क़ मत खाओ।" वोह नौजवान बोला, "फिर मैं खाऊंगा कहां से? क्यूंकि दुन्या में तो हर शै **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की अ़ता कर्दा है।" आप ने फ़रमाया, "क्या येह अच्छा लगेगा कि तुम रब्ब तआ़ला का रिज़्क़ भी खाओ और उस की नाफ़रमानी भी करो?" उस नौजवान ने कहा, "नहीं और क्या, दूसरी बात बयान फ़रमाएं।"

आपने फ़रमाया, "दूसरी बात येह है कि जब तुम कोई गुनाह करने लगो तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मुल्क से बाहर निकल जाओ।" वोह कहने लगा, "येह तो पहली बात से भी मुश्किल है कि मशरिक़ से मग़रिब तक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही की ममलुकत है।" आप ने इरशाद फ़रमाया, "तो क्या येह मुनासिब है कि जिस का रिज़्क़ खाओ या जिस के मुल्क में रहो, उस की नाफ़रमानी भी करो?" नौजवान ने नफ़ी में सर हिलाया और कहा : "तीसरी बात बयान फ़रमाएं।"

आप ने इरशाद फ़रमाया, "तीसरी बात येह है कि जब तुम कोई गुनाह करो तो ऐसी जगह करो जहां तुम्हें कोई न देख रहा हो।" उस ने कहा, "हुज़ूर! येह कैसे हो सकता है **अल्लाह** तआ़ला तो हर बात का जानने वाला है कोई उस से कैसे छुप सकता है?" तो आप ने फ़रमाया, "तो क्या येह अच्छा लगेगा कि तुम उस का रिज़्क़ भी खाओ, उस की ममलुकत में भी रहो और फिर उसी के सामने उस की नाफ़रमानी भी करो?" नौजवान ने कहा, नहीं, चौथी बात बयान फ़रमाएं।"

आप ने फ़रमाया, "चौथी बात येह है कि जब मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام तुम्हारी रूह़ क़ब्ज़ करने तशरीफ़ लाएं तो उन से कहना : "कुछ देर के लिये ठहर जाएं ताकि मैं तौबा कर के चन्द अच्छे आ'माल कर लूं।" उस ने कहा, "येह तो मुमकिन ही नहीं है कि वोह इस मुत़ालबे को मान लें।" तो आप ने इरशाद फ़रमाया, " जब तुम जानते हो कि मौत यक़ीनी है और इस से बचना मुमकिन नहीं तो छुटकारे की तवक़्क़ोअ़ कैसे कर सकते हो?" उस ने अ़र्ज़ की : "पांचवीं बात इरशाद फ़रमाएं।"

आप ने फ़रमाया, "पांचवीं बात येह है कि जब ज़बानिया आए और तुझे जहन्नम की त़रफ़ ले जाया जाए तो मत जाना।" उस ने अ़र्ज़ की, "वोह नहीं मानेंगे और न मुझे छोड़ेंगे।" तो आप ने इरशाद फ़रमाया, "तो फिर तुम नजात की उम्मीद कैसे रख सकते हो ?"

वोह नौजवान पुकार उठा, "मुझे येह नसीह़त काफ़ी है, अब मैं अल्लाह तआ़ला से मुआ़फ़ी मांगता हूं और तौबा करता हूं।" इस के बा'द वोह नौजवान मरते दम तक इ़बादत में मश्ग़ूल रहा।

(کتاب التوابین، توبۃ شاب مسرف علی نفسہ، ص ۲۸۵)

«24» फ़ाहि़शा औ़रत के इ़श्क़ में मुब्तला नौजवान की तौबा

मरवी है कि बनी इसराईल में दो दोस्त थे। येह दोनों एक पहाड़ पर अल्लाह तआ़ला की इ़बादत में मश्ग़ूल रहा करते थे। एक मरतबा इन में से एक शहर में कुछ ख़रीदने आया तो उस की निगाह एक फ़ाहि़शा औ़रत पर पड़ गई और वोह उस के इ़श्क़ में गिरिफ़्तार हो गया और उस की मजलिस इख़्तियार कर ली। जब कुछ रोज़ गुज़र गए और वोह वापस न आया तो दूसरा दोस्त उसे तलाश करता हुवा शहर में पहुंचा, मा'लूमात करने पर उस के बारे में सब कुछ जान गया।

येह उस से मिलने पहुंचा तो आ़शिक़ दोस्त ने शर्मिन्दा हो कर कहा कि "मैं तो तुझे जानता ही नहीं।" उस ने इस बात को नज़र अन्दाज़ करते हुए कहा, "प्यारे भाई ! दिल को इस काम में मश्ग़ूल न कर, मेरे दिल में जिस क़दर शफ़्क़त आज पैदा हुई है पहले कभी न हुई थी।" येह कह कर उसे अपने सीने से लगा लिया। गुनाहगार दोस्त ने जब उस की त़रफ़ से मह़ब्बत का येह मुज़ाहिरा देखा तो जान लिया कि "मैं इस की निगाहों से गिरा नहीं हूं।" पस फ़ौरन त़वाइफ़ की मह़फ़िल से उठा, तौबा की और उस के साथ वापस आ गया।

(کیمیائے سعادت، رکن دوم۔ درمعاملات اصل چہارم، پیدا کردن حقوق دوستی، ج ۱، ص ۳۸۱)

﴾25﴿ एक हाशिमी नौजवान की तौबा

बनू उमय्या का हसीनो जमील नौजवान मूसा बिन मुहम्मद बिन सुलैमान हाशिमी अपने ऐशो इशरत, खुश लिबासी और खूब सूरत कनीज़ों और गुलामों के झुरमुट में ज़िन्दगी बसर करने का आदी था। अनवाओ अक़साम के खानों से उस का दस्तरख्वान हमा वक़्त लबरेज़ रहता। ज़रक़ बरक़ मल्बूसात में लपटा, मजलिसे तरब सजाए, सारी सारी रात ग़म व आलामे दुन्या से बे ख़बर पड़ा रहता। एक साल में तीन लाख तीन हज़ार दीनार की आमदनी थी, जिसे मुकम्मल तौर पर अपनी अय्याशियों में खर्च कर देता। उस ने शारेअ आम पर निहायत बुलन्दो बाला खूबसूरत महल बनवा रखा था। अपने महल में बैठा कभी तो वसीअ गुज़रगाहों की रौनकों से महजूज़ होता और कभी पिछली जानिब वाक़ेअ शानदार बाग़ में मजलिसे तरब सजाता। महल में हाथी दांत का बना हुवा एक कुब्बा था, जिस में चांदी की कीलें थीं। इस के बीच में एक क़ीमती तख़्त ख़ास शहज़ादे के बैठने के लिये बनाया गया था। मूसा इस पर शानो शौकत के साथ बैठता, इर्द गिर्द दोस्त अहबाब की निशस्तें होतीं। पुश्त पर खुद्दाम व गुलाम बा अदब खड़े होते। कुब्बे के बाहर गाने वालों के बैठने की जगह थी, जहां से वोह नग़मा व सुरूर के ज़रीए उस का और उस के दोस्तों का दिल बहलाते। कभी खूबसूरत गाने वालियां भी रौनक़े मजलिस बढ़ातीं। रात ढले ऐशो इशरत से थक कर कनीज़ों में से जिस के हमराह चाहता शब बाशी करता। दिन को शतरंज की बसातें जमतीं। कभी भूले से भी उस की मजलिस में मौत या ग़म व आलाम का तज़किरा न छिड़ता। इसी आलमे सरमस्ती व शबाब में सत्ताईस साल गुज़र गए।

एक रात वोह इसी तरह ऐशो इशरत में महव था कि यका यक एक दर्दनाक चीख़ की आवाज़ भरी, जो गाने वालों की आवाज़ के मुशाबेह थी। इस आवाज़ का कानों से टकराना था कि महफ़िल पर

सन्नाटा छा गया। मूसा ने कुब्बे से सर निकाला और आवाज़ का तआ़कुब करने लगा। शराब व शबाब का येह रसिया, इस कर्बनाक आवाज़ की तल्ख़ी को बरदाश्त न कर सका। गुलामों को हुक्म दिया कि उस शख़्स को तलाश करो और मेरे पास लाओ। ग़ुलाम व ख़ुद्दाम मह़ल से बाहर निकले, उन्हें क़रीबी मस्जिद में एक कमज़ोर, लाग़र और नह़ीफ़ व नाज़ार नौजवान मिला, जिस का बदन हड्डियों का पिन्जर बन चुका था, रंग ज़र्द, लब ख़ुश्क, बाल परेशां, दो फटी चादरों में लिपटा रब्बे काइनात के हुज़ूर मुनाजात कर रहा था। ख़ादिमों ने उसे हाथ पाऊं से पकड़ा और मूसा के सामने ह़ाज़िर कर दिया। मूसा ने उस से तक्लीफ़ का सबब पूछा। नौजवान ने कहा दर अस्ल मैं कुरआने पाक की तिलावत कर रहा था, दौराने तिलावत एक मक़ाम ऐसा आया कि उस ने मुझे बेह़ाल कर दिया। मूसा ने कहा "वोह कौन सी आयात थीं मैं भी तो सुनूं।" नौजवान ने तअ़व्वुज़ व तस्मिया के बा'द येह आयात तिलावत कीं,

"اِنَّ الْاَبْـرَارَ لَفِیْ نَعِیْمٍ 0 عَـلَی الْاَرَآئِکِ یَنْظُرُوْنَ 0

تَـعْـرِفُ فِیْ وُجُوْهِهِمْ نَضْرَةَ النَّعِیْمِ 0 یُسْـقَوْنَ مِنْ رَّحِیْقٍ مَّخْتُوْمٍ 0 خِتٰمُهٗ مِسْکٌ وَّ فِیْ

ذٰلِکَ فَلْیَتَنَافَسِ الْمُتَنَافِسُوْنَ 0 وَ مِزَاجُهٗ مِنْ تَسْنِیْمٍ 0 عَیْنًا یَّشْرَبُ بِهَا الْمُقَرَّبُوْنَ 0

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक नेकोकार ज़रूर चैन में हैं तख़्तों पर देखते हैं तो उन के चेहरों में चैन की ताज़गी पहचाने, निथरी शराब पिलाए जाएंगे जो मुहर की हुई रखी है उस की मुहर मुश्क पर है और इसी पर चाहिये कि ललचाएं ललचाने वाले और इस की मिलोनी तस्नीम से है वोह चश्मा जिस से मुक़र्रबाने बारगाह पीते हैं। (پ۳۰، المطففین: ۲۲_۲۸)

तिलावत करने के बा'द नौजवान ने कहा : "ऐ फ़रैब ख़ुरदा ! भला वोह ने'मतें कहां और तेरी येह मजलिस कहां ? जन्नती तख़्त कुछ और ही होगा, उस पर नर्म व नाज़ुक बिस्तर होंगे, जिन के अस्तर

अस्तब्रक़ के होंगे। सब्ज़ क़ालिनों और बिस्तरों पर टेक लगाए लोग आराम करते होंगे। वहां दो नहरें साथ साथ बहती हैं, वहां हर फल की दो क़िस्में हैं। वहां के मेवे कभी ख़त्म न होंगे और न उन से जन्नतियों को कोई रोकने वाला होगा। अहले जन्नत, जन्नत के पसन्दीदा ऐश में हमेशा रहेंगे, वहां उन्हें कोई ना गवार बात सुनाई न देगी। वहां ऊंचे ऊंचे तख़्तों के इर्द गिर्द चमक दार आबख़ूरे क़िता़र से रखे होंगे। येह तमाम ने'मतें **अल्लाह** तआ़ला के फ़रमां बरदार बन्दों के लिये होंगी और काफ़िरों के लिये क्या होगा? उन के लिये आग ही आग होगी, आग भी ऐसी कि कभी सर्द न होने वाली, काफ़िर इस में हमेशा रहेंगे उन का अ़ज़ाब कभी मौक़ूफ़ न होगा, वोह इस में औंधे मुंह पड़े होंगे और जब उन्हें सर के बल घसीटा जाएगा तो कहा जाएगा "लो येह अ़ज़ाब चखो।"

इन पुर अषर कलिमात के बाइ़ष मूसा के दिल की दुन्या में इन्क़िलाब बर्पा हो गया, बे इख़्तियारी में तख़्त से उतरा और उस नौजवान से लिपट कर रो पड़ा फिर तमाम ख़ुद्दाम व ग़ुलाम व कनीज़ो को रुख़्सत कर के नौजवान को साथ लिये घर के अन्दरूनी हिस्से में चला गया और एक बोरिये पर बैठ कर अपनी जवानी के ज़ाएअ़ होने पर ख़ुद को मलामत करने लगा। नौजवान उसे दिलासा देता और **अल्लाह** तआ़ला की सत्तारी व ग़फ़्फ़ारी याद दिलाता रहा। इसी आ़लम में पूरी रात गुज़र गई। जब सुब्ह़ हुई तो मूसा ने सच्ची तौबा की, ताज़ा ग़ुस्ल किया और नौजवान के साथ मस्जिद में दाख़िल हुवा, इबादते इलाहिया को अपना मक़्सद बना लिया। (روض الریاحین، ص۱۲۲)

26 लह्व लअ़ब में मश्ग़ूल शख़्स की तौबा

ह़ज़रते अबू हाशिम सूफ़ी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ فरमाते हैं कि एक मरतबा मैं ने बसरा जाने का इरादा किया और एक किश्ती में सुवार होने के लिये बढ़ा। उस किश्ती में एक मर्द था जिस के हमराह उस की कनीज़ थी। उस मर्द ने मुझ से कहा : "किश्ती में जगह नहीं है।" कनीज़ ने उस से

मेरी सिफ़ारिश की तो उस ने मुझे भी किश्ती में सुवार कर लिया। जब हम कुछ आगे बढ़े तो मर्द ने खाना मंगवाया और अपने सामने रख लिया। कनीज़ ने उस से कहा : "इस मिस्कीन को भी अपने खाने में शरीक कर लो।" चुनान्चे उस ने मुझे भी खाने में शरीक कर लिया। जब हम खाना खा चुके तो वोह कनीज़ से कहने लगा "शराब लाओ"। जब वोह शराब लाई तो वोह उसे पीने लगा। उस ने कनीज़ से मुझे भी शराब पिलाने को कहा लेकिन मैं ने मन्अ़ कर दिया। जब वोह शख़्स नशे से चूर हो गया तो उस ने कनीज़ से कहा : "अपने साज़ ले आओ।" कनीज़ ने साज़ संभाला और गाना गाने लगी। फिर वोह शख़्स मेरी त़रफ़ मुतवज्जेह हुवा और कहा : "क्या तुम्हारे पास इस (गाने) जैसा कुछ है?" मैं ने जवाब दिया : हां ! मेरे पास वोह है जो इस से कहीं ज़ियादा बेहतर और भला है।" उस ने कहा : "सुनाओ।" मैं ने "اَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْم" पढ़ने के बा'द येह आयात तिलावत कीं :

"اِذَا الشَّمْسُ كُوِّرَتْ0 وَاِذَا النُّجُوْمُ انْكَدَرَتْ0 وَاِذَا الْجِبَالُ سُيِّرَتْ0

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : जब धूप लपेटी जाए और जब तारे झड़ पड़ें और जब पहाड़ चलाए जाएं। (پ۳۰، التکویر: ۱تا۳)

इन आयात को सुन कर वोह शख़्स रोने लगा जब मैं وَاِذَا الصُّحُفُ نُشِرَتْ 0 **अल्लाह** तआ़ला के इस फ़रमान पर पहुंचा। (**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और जब नामए आ'माल खोले जाएं (پ۳۰، التکویر: ۱۰)" तो वोह कहने लगा : "ऐ कनीज़ ! मैं तुझे **अल्लाह** तआ़ला की रिज़ा के लिये आज़ाद करता हूं, इस शराब को बहा दो और साज़ तोड़ डालो।" फिर उस ने मुझे क़रीब बुलाया और कहने लगा : "मेरे भाई ! तुम क्या कहते हो, क्या **अल्लाह** तआ़ला मेरी तौबा क़बूल फ़रमा लेगा?" मैं ने जवाब में येह आयत पढ़ दी : "اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ التَّوَّابِيْنَ وَيُحِبُّ الْمُتَطَهِّرِيْنَ 0 **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** बेशक **अल्लाह** पसन्द करता है बहुत तौबा करने वालों को और पसन्द रखता है सुथरों को। (پ۲، البقرۃ: ۲۲۲)" (येह सुन कर उस ने तौबा कर ली)। (درۃ الناصحین، المجلس الخامس والثمانون فی فضیلۃ التوبۃ، ص ۲۱۶۔۲۱۷)

﴾27﴿ नसरानी तबीब की तौबा

हज़रते सय्यिदुना शैख़ शिब्ली رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه एक मरतबा बहुत बीमार हो गए। लोग आप को इलाज के लिये एक शिफ़ा ख़ाने ले गए। शिफ़ा ख़ाने में बग़दाद के वज़ीर अ़ली बिन ईसा ने आप की हालत देखी तो फ़ौरन बादशाह से राबिता किया कि कोई तजरिबा कार मुआ़लिज भेजिये। बादशाह ने एक तबीबे हाज़िक़ को भेज दिया जो अपने फ़न में बहुत माहिर था लेकिन उस का मज़्हब नसरानी था। उस ने शैख़ के इलाज के लिये सर तोड़ कोशिशें कीं लेकिन आप को शिफ़ा न हुई। एक दिन तबीब कहने लगा, " अगर मुझे मा'लूम हो जाए कि मेरे पारए गोश्त से आप को शिफ़ा मिल जाएगी तो अपने बदन का गोश्त काट कर देना भी मुझ पर कुछ गिरां न होता।"

येह सुन कर शैख़ शिब्ली عَلَيْهِ رَحْمَة ने फ़रमाया, "मेरा इलाज इस से भी कम में हो सकता है।" तबीब ने दरयाफ़्त किया, 'वोह क्या?" इरशाद फ़रमाया, "ज़ुन्नार (ईसाइयों की मज़्हबी अ़लामत) तोड़ दे और मुसलमान हो जा।" येह सुन कर उस ने ईसाइय्यत से तौबा कर ली और मुसलमान हो गया और उस के मुसलमान होने पर शैख़ शिब्ली عَلَيْهِ رَحْمَة भी तन्दुरुस्त हो गए। (روض الریاحین، ص۱۲۷)

﴾28﴿ एक आ़शिक़ की तौबा

हज़रते सय्यिदुना अबू हफ़्स हद्दाद عَلَيْهِ رَحْمَة इब्तिदा में एक लौंडी पर आ़शिक़ हो कर अपने सब्रो क़रार को खो बैठे। किसी ने आप को बताया कि "फ़ुलां अ़लाक़े में एक यहूदी रहता है, वोह बेहतरीन जादू जानता है, वोह यक़ीनन तुम को तुम्हारी महबूबा से मिला देगा।" आप फ़ौरन उस यहूदी के पास पहुंचे और उस से अपना तमाम हाल बयान किया। उस यहूदी ने कहा कि "तुम्हारा काम हो

जाएगा लेकिन इस की शर्त़ येह है कि चालीस दिन तक किसी भी क़िस्म का नेक अ़मल नहीं करोगे, पहले इस पर अ़मल करो फिर मेरे पास आना।''

आप ने इस शर्त़ को क़बूल कर लिया और चालीस दिन ह़स्बे शर्त़ गुज़ारने के बा'द आप उस के पास पहुंच गए। उस ने जादू करना शुरूअ़ किया, लेकिन उस का कोई अषर मुरत्तब न हुवा। कई मरतबा कोशिश करने के बा'द उस ने कहा कि ''हो न हो, तुम ने इन चालीस दिनों में कोई न कोई नेकी ज़रूर की है, वरना मेरा जादू कभी नाकाम न जाता।'' आप ने फ़रमाया ''वैसे तो मुझे कोई क़ाबिले ज़िक्र चीज़ याद नहीं, हां एक दिन रास्ते में पड़े हुए पथ्थर को इस ख़याल से एक त़रफ़ कर दिया था कि कोई मुसलमान भाई इस से टकरा कर ज़ख़्मी न हो जाए।'' येह सुन कर उस जादूगर ने कहा : ''किस क़दर अफ़्सोस की बात है कि आप उस परवर दगार की इबादत को छोड़ बैठे हैं कि जिस ने आप के एक मा'मूली से अ़मल को वोह शरफ़े क़बूलिय्यत बख़्शा कि मेरा जादू मुकम्मल त़ौर पर नाकाम हो गया?'' इस बात से आप के दिल में एक आग सी लग गई, फ़ौरन तौबा की और **अल्लाह** तआ़ला की इबादत में मश्ग़ूल हो कर कुछ ही अ़र्से में दर्जए विलायत पर फ़ाइज़ हो गए। (تذکرۃ الاولیاء، باب سی و ھشتم، ذکر ابو حفص حداد، ج۱، ص۲۷۶)

﴾29﴿ साज़ बजाने वाले नौजवान की तौबा

एक मरतबा ह़ज़रते सय्यिदुना बायज़ीद बिस्त़ामी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ क़ब्रिस्तान में ह़ाज़िरी दे कर वापस लौट रहे थे कि रास्ते में एक नौजवान पर नज़र पड़ी जो बरबत़ (साज़ का आला) बजा रहा था। आप ने उसे देख कर ''لاحول ولا قوۃ الا باللہ العلی العظیم'' पढ़ा तो वोह नौजवान त़ैश में आ गया और बरबत़ को इस ज़ोर से आप के सर पर दे मारा कि आप का सर मुबारक ज़ख़्मी हो गया और वोह बरबत़ भी टूट गया। आप उस नौजवान को कुछ कहे बिग़ैर वहां से चले आए।

घर पहुंच कर आप ने अपने गुलाम के ज़रीए बरबत की क़ीमत और ह़ल्वा भेजा और साथ ही येह पैग़ाम भी दिया कि इस रक़म से दूसरा बरबत ख़रीद लो और चूंकि मेरी वजह से तुम्हारा बरबत टूट गया था जिस से तुम्हारा दिल रन्जीदा हुवा हो तो ह़ल्वा खा लो ताकि तुम्हारा सदमा ख़त्म हो जाए। वोह नौजवान आप के इस हुस्ने अख़्लाक़ से ऐसा मुतअष्षिर हुवा कि आप की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो कर ताइब हो गया। (تذکرۃ الاولیاء، باب چہاردہم، باب یزید بسطامی، ج۱، ص ۱۳۷۔۱۳۸)

﴾30﴿ औ़रत से ज़ियादती करने वाले की तौबा

मरवी है कि एक शख़्स का गुज़र किसी ह़सीन तरीन औ़रत के पास से हुवा। उस पर निगाह पड़ते ही उस के दिल में बुराई का इरादा पैदा हो गया वोह उस के पास गया और अपने इरादे का इज़्हार किया। औ़रत ने कहा, जो कुछ तूने देखा है उस के धोके में न पड़, ऐसा कभी नहीं हो सकता।" लेकिन मर्द पर शैत़ान सुवार रहा ह़त्ता कि उस ने ज़बरदस्ती औ़रत पर क़ाबू पा लिया। औ़रत के एक त़रफ़ आग के अंगारे पड़े हुए थे उस ने उन पर अपना हाथ रख दिया ह़त्ता कि वोह जल कर कोइला हो गया। जब मर्द गुनाह से फ़ारिग़ हुवा तो उस ने ह़ैरत व तअ़ज्जुब से पूछा : "येह तूने अपना हाथ किस लिये जला डाला ?" औ़रत ने कहा : " जब तूने ज़बरदस्ती मुझ पर क़ाबू पा लिया तो मैं डर गई कि लज़्ज़ते गुनाह में कहीं मैं भी तेरी शरीक न हो जाऊं और इस की वजह से मुझे भी गुनहगार ठहरा दिया जाए, पस इसी वजह से मैं ने अपना हाथ जलाना मुनासिब ख़याल किया।"

मर्द येह बात सुन कर शर्म से पानी पानी हो गया और उस ने इन्तिहाई नदामत में मुब्तला होते हुए कहा, "अगर येह बात है तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं भी आयन्दा कभी भी अपने रब्ब عَزَّوَجَلَّ की नाफ़रमानी नहीं करूंगा।" फिर उस ने अपने तमाम गुनाहों से तौबा की और **अल्लाह** तआ़ला की इ़बादत में मशग़ूल हो गया। (ذم الھوی، ص ۳۱۹)

﴾31﴿ एक फ़ासिक़ो फ़ाजिर शख़्स की तौबा

ह़ज़रते उ़त्बा नौजवान थे और (तौबा से पहले) फ़िस्क़ो फ़ुजूर और शराब नोशी में मश्हूर थे। एक दिन ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ की मजलिस में आए। ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ इस आयत की तफ़्सीर कर रहे थे :

''اَلَمْ يَاْنِ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اَنْ تَخْشَعَ قُلُوْبُهُمْ لِذِكْرِ اللّٰهِ ؕ

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : क्या ईमान वालों को अभी वोह वक़्त न आया कि उन के दिल झुक जाएं **अल्लाह** की याद (के लिये)। (پ۲۷،الحدید۱۶)

आप ने इस क़दर मुअष्षिर वा'ज़ फ़रमाया कि लोगों पर गिरया त़ारी हो गया। एक नौजवान खड़ा हुवा और येह कहने लगा : ''ऐ नेक आदमी ! क्या **अल्लाह** तआ़ला मुझ जैसे फ़ासिक़ो फ़ाजिर की तौबा क़बूल करेगा जब मैं तौबा करूं।'' शैख़ ने फ़रमाया : तेरे फ़िस्क़ो फ़ुजूर के बा वुजूद **अल्लाह** तआ़ला तेरी तौबा क़बूल करेगा। जब उ़त्बा ने येह बात सुनी तो उस का चेहरा ज़र्द पड़ गया और सारा बदन कांपने लगा, चिल्लाया और ग़श खा कर गिर पड़ा और येह अश्आ़र पढ़े

اَيَا شَابًا لِرَبِّ الْعَرْشِ عَاصِيْ

اَتَدْرِيْ مَاجَزَاءُ ذِوِى الْمَعَاصِيْ

ऐ अ़र्श वाले की नाफ़रमानी करने वाले नौजवान क्या तू जानता है कि गुनहगारों की सज़ा क्या है ?

سَعِيْرٌ لِلْعُصَاةِ لَهَا زَفِيْرٌ

وَغَيْظٌ يَوْمِ يُؤْخَذُ بِالنَّوَاصِيْ

नाफ़रमानों के लिये जहन्नम है जिस में गरज होगी और जिस दिन पेशानियों से पकड़े जाएंगे, उस दिन ग़ज़ब होगा।

فَاِنْ تَصْبِرْ عَلَى النَّيْرَانِ فَاَعْصِهُ

وَاِلَّا كُنْ عَنِ الْعِصْيَانِ قَاصِيْ

पस अगर तू आग पर सब्र कर सके, तो नाफ़रमानी कर, वरना नाफ़रमानी से दूर हो जा।

وَفِيْمَا قَدْ كَسَبْتَ مِنَ الْخَطَايَا

رَهِنْتَ النَّفْسَ فَاجْهَدْ فِي الْخَلَاصِيْ

तूने गुनाह किस लिये किये हैं, तूने अपने आप को फंसा दिया, अब नजात के लिये कोशिश कर।

उ़त्बा की चीख़ निकल गई और ग़श खा कर गिर पड़ा। जब इफ़ाक़ा हुवा तो कहने लगा : "ऐ शैख़ ! क्या मेरे जैसे कमीने की तौबा भी रब्बे रह़ीम क़बूल फ़रमाएगा।" शैख़ ने फ़रमाया : बद नसीब बन्दे की तौबा और मुआ़फ़ी रब्ब तआ़ला क़बूल फ़रमाता है।" फिर ह़ज़रते उ़त्बा عَلَيْهِ رَحْمَةُ ने सर उठाया और तीन दुआ़एं कीं :

(1) ऐ मेरे **अल्लाह** ! अगर तूने मेरी तौबा क़बूल कर ली और मेरे गुनाह मुआ़फ़ फ़रमा दिये तो मुझे फ़हम व याद दाश्त अ़ता कर, मुझे इ़ज़्ज़त अ़ता फ़रमा कि उ़लूमे दीन और क़ुरआने मजीद से जो सुनूं ह़िफ़्ज़ कर लूं।

(2) ऐ **अल्लाह** ! मुझे हुस्ने आवाज़ का ए'ज़ाज़ अ़ता फ़रमा, जो भी मेरी क़िराअत सुने अगर वोह संग दिल हो तो उस का दिल नर्म हो जाए।

(3) ऐ **अल्लाह** ! रिज़्क़े ह़लाल का ए'ज़ाज़ अ़ता फ़रमा, वहां से रोज़ी अ़ता फ़रमा कि मुझे उस का गुमान भी न हो।

अल्लाह तआ़ला ने उन की तमाम दुआ़एं क़बूल फ़रमाई । इन का फ़हम तेज़ हो गया, जब वोह कुरआने मजीद की तिलावत करते, तो हर सुनने वाला ताइब हो जाता, उन के घर में रोज़ाना सालन का एक प्याला और दो रोटियां रखी होतीं और पता नहीं चलता था कि कौन रख जाता है । इसी ह़ालत में आप का इन्तिक़ाल हो गया ।

(مکاشفۃ القلوب، الباب الثامن فی التوبۃ، ص ۲۸۔۲۹)

﴾32﴿ बनी इसराईल के नौजवान की तौबा

बनी इसराईल में एक जवान था जिस ने बीस साल तक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इबादत की, फिर बीस साल तक नाफ़रमानी की । फिर आईना देखा तो दाढ़ी में बाल सफ़ेद थे । वोह ग़मज़दा हो गया और कहने लगा : "ऐ मेरे ख़ुदा ! मैं ने बीस साल तक तेरी इबादत की और बीस साल तक तेरी नाफ़रमानी की अगर मैं तेरी त़रफ़ आऊं तो क्या मेरी तौबा क़बूल होगी ?" उस ने किसी कहने वाले की आवाज़ सुनी : "तुम ने हम से मह़ब्बत की हम ने तुम से मह़ब्बत की, फिर तू ने हमें छोड़ दिया और हम ने भी तुझे छोड़ दिया तू ने हमारी नाफ़रमानी की और हम ने तुझे मोहलत दी और अगर तू तौबा कर के हमारी त़रफ़ आएगा तो हम तेरी तौबा क़बूल करेंगे ।"

(مکاشفۃ القلوب، الباب السابع عشر فی بیان الامانۃ والتوبۃ، ص ۶۲)

﴾33﴿ तौबा पर क़ाइम न रहने वाले की तौबा

ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلَيْهِ السَّلَام के ज़माने में एक आदमी तौबा पर पुख़्ता नहीं रहता था, जब भी तौबा करता तोड़ डालता । बीस साल तक उस की येही ह़ालत रही । **अल्लाह** तआ़ला ने ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام की त़रफ़ वह़्य की, कि मेरे बन्दे से कहो कि मैं उस पर ग़ज़बनाक हूं । ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلَيْهِ السَّلَام ने उस आदमी तक येह पैग़ाम पहुंचा दिया । वोह बड़ा

ग़मगीन हुवा और सह़रा की त़रफ़ चल पड़ा। वोह कह रहा था : "ऐ मेरे खुदा ! क्या तेरी रह़मत ख़त्म हो गई या तुझे मेरी नाफ़रमानी ने नुक़्सान दिया ? या तेरी मुआ़फ़ी के ख़ज़ाने ख़त्म हो गए ? कौन सा गुनाह तेरी क़दीम सिफ़ात अ़फ़्वो करम से बड़ा है ? जब तू अपने बन्दों पर रह़मत बन्द कर देगा तो वोह किस से उम्मीद रखेंगे ? अगर तूने उन्हें रद कर दिया तो वोह किस के पास जाएंगे ? अगर तेरी रह़मत ख़त्म हो गई और मुझे अ़ज़ाब देना लाज़िम हो गया तो फिर अपने तमाम बन्दों का अ़ज़ाब मुझ पर कर दे, मैं अपनी जान उन के बदले में पेश करता हूं।"

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने फ़रमाया : " ऐ मूसा (عَلَيْهِ السَّلَام) ! इस की त़रफ़ जाओ और कहो कि अगर तेरे गुनाह ज़मीन भर के बराबर हों, तब भी तुझे बख़्श दूंगा कि तूने मेरे कमाले कुदरत और कमाले अ़फ़्वो रह़मत को जान लिया।" (مکاشفۃ القلوب، الباب السابع عشر فی بیان الامانۃ والتوبۃ، ص۶۳۔۶۴)

﴾34﴿ एक नाफ़रमान शख़्स की तौबा

ह़ज़रते रबीआ़ बिन उ़षमान عَلَيْهِ رَحْمَة से मरवी है कि एक शख़्स अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बहुत नाफ़रमानी करता था फिर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उसे भलाई और तौबा की तौफ़ीक़ दी। उस ने अपनी बीवी को कहा कि मैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से शफ़ाअ़त करने वाले को तलाश करता हूं। येह कह कर वोह सह़रा में निकल गया और वहां जा कर आहो ज़ारी शुरूअ़ कर दी : "ऐ आस्मान मेरी शफ़ाअ़त कर दे, ऐ पहाड़ो मेरी शफ़ाअ़त कर दो, ऐ ज़मीन मेरी शफ़ाअ़त कर दे, ऐ फ़िरिश्तो ! मेरी सिफ़ारिश कर दो।" ह़त्ता कि येह थक गया और बेहोश हो कर ज़मीन पर गिर गया। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उस के पास एक फ़िरिश्ता भेजा और उस ने उसे उठा लिया और उस के सर पर

हाथ फेरा और कहा कि खुश ख़बरी हो : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने तेरी तौबा क़बूल फ़रमा ली है।" तो उस शख़्स ने कहा : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुझ पर रह़्म करे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से मेरी सिफ़ारिश किस ने की है?" उस ने कहा कि "मैं तेरे बारे में ख़ौफ़ज़दा हो गया तो मैं ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से तेरी सिफ़ारिश कर दी।"

(کتاب التوابین، توبۃ عاصی من العماۃ، ص۸۴)

﴾35﴿ नह्र में ग़ुस्ल करने वाले की तौबा

ह़ज़रते सय्यिदुना का'बुल अह़बार رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि बनी इसराईल का शख़्स एक फ़ाह़िशा औ़रत के पास आया और जब वोह ग़ुस्ल करने के लिये नह्र में उतरा तो पानी से आवाज़ आई : "ऐ फुला ! क्या तू ह़या नहीं करता, क्या तूने इस गुनाह से तौबा न की थी और कहा था कि अब दोबारा नहीं करेगा।" तो वोह शख़्स येह आवाज़ सुन कर येह कहते हुए नह्र से निकल गया "मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की नाफ़रमानी नहीं करूंगा।" फिर येह एक पहाड़ पर आया जहां बारह आदमी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत कर रहे थे। येह कुछ अ़र्सा इन के साथ रहा। जब वहां क़ह़त़ नाज़िल हो गया तो येह लोग वहां से उतरे और जड़ी बुटियां तलाश करने लगे। इस दौरान येह उसी नह्र के पास से गुज़रे तो इस शख़्स ने कहा : "मैं तुम्हारे साथ नहीं जाऊंगा।" इन्हों ने पूछा : "क्यूं?" इस ने कहा : "वहां कोई है जो मेरी एक ख़त़ा को जानता है और मुझे उस के सामने जाते हुए शर्म आती है।" तो येह लोग उसे छोड़ कर चले गए।

नह्र से सदा आई : "वाह ! سُبْحٰنَ اللّٰہ अगर तुम में से कोई अपने बेटे या किसी क़रीबी अ़ज़ीज़ पर ग़ुस्सा हो और वोह तौबा कर के तुम्हारी पसन्दीदा बात की त़रफ़ लौट आए तो तुम उस से मह़ब्बत करने लगो और तुम्हारे उस साथी ने तौबा कर के अपनी पसन्द से

रुजूअ़ कर लिया है लिहाज़ा मैं भी उस से महब्बत करता हूं, जाओ उस को येह बता दो और नहर के कनारे पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इबादत करो।" तो इन लोगों ने आ कर इसे बताया और येह इन के साथ वहां आ गया और इन सब ने वहां काफ़ी अ़र्से तक इबादत की।

फिर इस शख़्स का जब इन्तिक़ाल हुवा तो इस के साथियों को नहर ने आवाज़ दी कि "ऐ इबादत गुज़ार और ज़ाहिदो ! इसे मेरे पानी से ग़ुस्ल दे कर नहर के कनारे दफ़्न कर दो ताकि क़ियामत के दिन मेरे क़रीब से उठे।" इन्हों ने ऐसा ही किया और कहने लगे कि आज की रात हम इस क़ब्र के पास गुज़ारेंगे और जब सुब्ह होगी तो चले जाएंगे। चुनान्चे येह लोग रात भर इस क़ब्र पर रोते रहे। जब सुब्ह हुई तो इन पर ऊंघ त़ारी हो गई। जब इन्हें होश आया तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उस की क़ब्र के क़रीब बारह "सरव" के पौदे उगा दिये थे और येह पहली मरतबा थी कि ज़मीन पर "सरव" का दरख़्त लगा। येह लोग येह देख कर कहने लगे कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इस जगह "सरव" के पौदे सिर्फ़ इस लिये उगाए हैं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने हमारी इबादत को पसन्द किया है। फिर येह लोग उसी क़ब्र के पास **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इबादत में मसरूफ़ हो गए और जब इन में से कोई मर जाता येह उसे उस शख़्स के पहलू में दफ़्न कर देते ह़त्ता कि इन सब का इन्तिक़ाल हो गया। (کتاب التوابین، توبۃ صاحب فاحشۃ، ص۹۰)

﴾36﴿ एक बादशाह की तौबा

ह़ज़रते उ़बाद बिन उ़बाद عَلَيْهِ رَحْمَةُ फ़रमाते हैं कि अहले बसरा में एक बादशाह ने दुरवेशी इख़्तियार की मगर कुछ अ़र्से बा'द वोह दोबारा दुन्या और ममलुकत की त़रफ़ माइल हो गया। उस ने एक इमारत बनवाई और उस पर बेहतरीन काम करवाया। उस के हुक्म पर बेहतरीन क़ालीन वग़ैरा बिछाए गए। फिर उस ने आ़लीशान दा'वत का एहतिमाम

किया, तो लोग जूक़ दर जूक़ आते, खाते पीते इस इमारत को देख कर मुतअ़ज्जिब होते और चले जाते, येह सिलसिला कई दिन चलता रहा।

आ़म लोगों से फ़ारिग़ हो कर वोह अपने घर वालों और भाइयों के साथ बैठा था और कहने लगा : "तुम इस घर की वजह से मेरी ख़ुशी देख रहे हो, मैं सोच रहा हूं कि मैं अपने हर बेटे के लिये एक ऐसा ही घर बनाऊं, तुम लोग कुछ दिन मेरे पास क़ियाम करो ताकि मैं तुम से गुफ़्तोशनीद करूं और अपने मक़्सद के लिये मश्वरे कर सकूं।" तो वोह लोग कुछ दिन उस के पास रहे, खेल कूद करते और कुछ मश्वरे होते कि बेटों के लिये किस त़रह़ बनाया जाए और उस का क्या इरादा है।" एक रात उन्हों ने घर के कोने से किसी की आवाज़ सुनी, वोह कह रहा था।

یاا یھا البانی والناسی میتہ

لا تاملن فان الموت مکتوب

ऐ इमारत बनाने वाले और अपनी मौत को भूलने वाले उम्मीद न कर बेशक मौत लिखी हुई है।

علی الخلائق ان سروا وان فرحوا

فالموت حتف لذی الامال منصوب

मख़्लूक़ पर अगर वोह ख़ुश हों और फ़रह़त में हों, बस मौत उम्मीद वालों को काटने खड़ी है।

لاتبنین دیارا لست تسکنھا

وراجع النسک کیما یغفر الحوب

ऐसे घर मत बना जिस में तुझे रहना नहीं और दुरवेशी की त़रफ़ लौट जा ताकि मुआ़फ़ किया जाए।

येह आवाज़ सुन कर वोह और उस के साथ वाले बहुत ज़ियादा ख़ौफ़ज़दा हो गए और जो कुछ सुना इस से डर गए तो उस ने अपने साथियों से पूछा कि "जो आवाज़ मैं ने सुनी है तुम ने भी सुनी?" उन्हों ने कहा : "जी हां !" उस ने फिर पूछा "क्या तुम भी वोही महसूस कर रहे हो जो मैं महसूस कर रहा हूं?" उन्हों ने पूछा : "तुझे क्या महसूस हो रहा है?" उस ने कहा : "वल्लाह ! मैं दिल पर एक बोझ महसूस कर रहा हूं और मैं समझता हूं कि येह मौत की अलामत है।"

इस के बा'द वोह ख़ूब रोया और उन की तरफ़ मुतवज्जेह हो कर कहने लगा : "तुम मेरे दोस्त और भाई हो तुम्हारे पास मेरे लिये क्या है?" उन्हों ने कहा "जो तू पसन्द करे वोह हुक्म कर।" तो उस ने शराब फैंकने का हुक्म दिया, खेल कूद की चीज़ें बाहर निकलवा दीं, फिर कहने लगा "ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मैं तुझे और तेरे इन हाज़िर बन्दों को गवाह कर के कहता हूं कि मैं अपने तमाम गुनाहों से तौबा करता हूं और मोहलत के अय्याम में अपने किये पर नादिम हूं और मैं तुझ से ख़ुद पर तेरी ने'मतों का इतमाम तेरी रहमत पर रुजूअ़ के वासिते से मांगता हूं और अगर तू मुझे उठाए तो अपने फ़ज़्ल से मेरे गुनाह मुआफ़ कर के उठा।" फिर उस की तक्लीफ़ बढ़ गई और वोह बराबर येही कहता रहा : "वल्लाह ! मौत है वल्लाह येह मौत है हत्ता कि उस की जान निकल गई।" (کتاب التوابین، توبۃ ملک من ملوک البصرۃ، ص۱۴۵۔۱۴۶)

37 एक सिपाही की तौबा

हज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार से उन की तौबा का सबब पूछा गया तो उन्हों ने बताया कि "मैं पोलीस में था और बहुत शराब पीता था। मैं ने एक ख़ूबसूरत बांदी ख़रीदी जो मेरे लिये बहुत अच्छी षाबित हुई, उस से मेरे हां एक लड़की पैदा हुई, मुझे उस से बहुत महब्बत हो गई। जब वोह अपने क़दमों पर चलने लग गई तो

उस की महब्बत मेरे दिल में और बढ़ गई वोह भी मुझ से बहुत महब्बत करती थी। जब मैं शराब पीने लगता तो वोह आ कर शराब गिरा देती थी। जब उस की उम्र दो साल हुई तो उस का इन्तिक़ाल हो गया मुझे उस की मौत ने दिल का मरीज़ बना दिया। पन्दरहवीं शा'बान की रात थी और जुमुआ़ का दिन था, मैं नशे में चूर हो कर सो गया और मैं ने उस दिन इशा की नमाज़ भी नहीं पढी थी। मैं ने ख़्वाब में देखा कि''

''क़ियामत क़ाइम हो गई है और सूर फूंका जा रहा है, क़ब्रें फट रही हैं और ह़श्र क़ाइम है और मैं लोगों के साथ हूं, अचानक मैं ने अपने पीछे सर सराहट महसूस की। मैं ने पीछे मुड़ कर देखा तो एक बहुत बड़ा काला अज़दहा मेरे पीछे मुंह खोले मेरी त़रफ़ बढ़ रहा था। मैं उस से डर कर भागा। भागते हुए मैं एक साफ़ सुथरे कपड़े पहने हुए बुज़ुर्ग के पास से गुज़रा जिन के पास ख़ुश्बू फैली हुई थी। मैं ने उन्हें सलाम किया, उन्हों ने जवाब दिया तो मैं ने कहा : शैख़ ! मुझे इस अज़दहे से बचाइये **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आप को अपने हां पनाह देगा।'' वोह बुज़ुर्ग रोते हुए कहने लगे कि ''मैं कमज़ोर हूं और येह मुझ से बहुत त़ाक़तवर है मैं इस पर क़ादिर नहीं हो सकता लेकिन तुम जल्दी से भाग जाओ शायद **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ किसी को तुम से मिला दे जो तुम्हें इस से बचा ले।'' तो मैं सीधा भागने लगा और वहां क़ियामत के मनाज़िर देखने लगा। मैं एक ऊंचाई पर चढ़ा तो वहां ज़बरदस्त आग थी मैं ने उस की हौलनाकी को देखा और चाहा कि अज़दहे से बचने के लिये उस आग में कूद जाऊं मगर किसी ने चीख़ कर कहा : ''लौट आ, तू इस आग का अहल नहीं है।'' मैं मुत़मइन हो कर लौट आया लेकिन अज़दहा मेरी तलाश में था।

मैं उसी बुज़ुर्ग के पास आया और उन्हें कहा : "शैख़ ! मैं ने आप से पनाह मांगी थी लेकिन आप ने नहीं दी।" वोह बुज़ुर्ग फिर मा'ज़िरत कर के कहने लगे कि "मैं कमज़ोर आदमी हूं लेकिन तुम उस पहाड़ पर चढ़ जाओ वहां मुसलमानों की अमानतें हैं, हो सकता है कि तुम्हारी भी कोई अमानत वहां हो जो तुम्हारी मदद कर सके।" मैं उस पहाड़ पर चढ़ा जो चांदी से बना हुवा था, उस में जगह जगह सुराख़ थे और सुर्ख़ सोने से बने हुए ग़ारों पर पर्दे पड़े हुए थे, उन ग़ारों में जगह जगह याक़ूत और जवाहिरात जड़े हुए थे और सब ताक़चों पर रेशम के पर्दे पड़े हुए थे। जब मैं अज़दहे से डर कर पहाड़ की तरफ़ भागा तो किसी फ़िरिश्ते ने ज़ोर से कहा : "पर्दे हटा दो।" तो पर्दे उठ गए और ताक़ खोल दिये गए। फिर इन ताक़चों से चांदी की रंगत जैसे चेहरों वाले बच्चे निकल आए और अज़दहा भी मेरे क़रीब हो गया। अब मैं बड़ा परेशान हुवा। किसी ने चिल्ला कर कहा : तुम्हारा सत्यानास ! देख नहीं रहे कि दुश्मन इस के कितना क़रीब आ चुका है, चलो सब बाहर आओ फिर बच्चे फ़ौज दर फ़ौज निकलना शुरूअ़ हो गए। मैं ने देखा कि मेरी वोह बच्ची जो मर चुकी थी, वोह भी निकली और मुझे देखते ही रोने लगी : "वल्लाह ! मेरे वालिद।" फिर वोह तेज़ी से कूद कर एक नूर के हाले में गई और दोबारा मेरे सामने नुमूदार हो गई और अपने बाएं हाथ से मेरा दायां हाथ पकड़ा और दायां हाथ अज़दहे की तरफ़ बढ़ाया तो वोह उलटे पाऊं भाग गया।

इस के बा'द उस ने मुझे बिठाया और मेरी गोद में आ बैठी और अपना सीधा हाथ मेरी दाढ़ी में फैरते हुए कहने लगी :

"اَلَمْ یَاْنِ لِلَّذِیْنَ اٰمَنُوْۤا اَنْ تَخْشَعَ قُلُوْبُهُمْ لِذِكْرِ اللّٰهِ"

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : क्या ईमान वालों को अभी वोह वक़्त न आया कि उन के दिल झुक जाएं **अल्लाह** की याद (के लिये)। (پ۲۷،الحدید۱۶)

और रोने लगी तो मैं ने कहा : "मेरी बच्ची ! क्या तुम्हें कुरआन मा'लूम है ?" उस ने कहा : "हां ! हम लोग आप से ज़ियादा जानते हैं।" मैं ने पूछा : "मुझे इस अज़दहे के बारे में बताओ जो मुझे हलाक कर देना चाहता था ?" उस ने कहा : "वोह आप के बुरे आ'माल थे जिन्हें खुद आप ने ताक़तवर बनाया था।" मैं ने पूछा : "वोह बुज़ुर्ग कौन थे ?" उस ने बताया : "वोह आप के अच्छे आ'माल थे जिन्हें आप ने इतना कमज़ोर कर दिया था कि वोह आप के बुरे आ'माल को दूर न कर सके।" मैं ने पूछा : "मेरी बच्ची ! तुम लोग इस पहाड़ में क्या करते हो ?" उस ने कहा कि "हम मुसलमानों के बच्चे इस पहाड़ में रहते हैं और क़ियामत होने तक रहेंगे, हम मुन्तज़िर हैं कि तुम कब हमारे पास आओ और हम तुम्हारी शफ़ाअ़त करें।"

मालिक बिन दीनार कहते हैं कि मैं ख़ौफ़ज़दा हालत में बेदार हुवा और मैं ने शराब फैंक कर उस के बरतन तोड़ दिये और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से तौबा कर ली, येह मेरी तौबा का सबब बना।"

(کتاب التوابین، توبۃ مالک بن دینار، ص ۲۰۲۔۲۰۵)

﴾38﴿ बिस्मिल्लाह की ता'ज़ीम की बरक्त से तौबा नसीब हो गई

हज़रते सय्यिदुना बिशर हाफ़ी से पूछा गया था कि तुम्हारी तौबा का क्या वाक़िआ़ है ? तो उन्हों ने बताया कि "येह सब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के फ़ज़्लो करम से हुवा, मैं तुम्हें क्या बताऊं ? मैं बहुत चालाक और जथ्थे वाला इन्सान था, एक दिन मैं कहीं जा रहा था कि मुझे एक काग़ज़ रास्ते में पड़ा मिला, मैं ने उसे उठाया तो उस में बिस्मिल्लाह लिखी हुई थी। मैं ने उसे साफ़ कर के जेब में डाल लिया। मेरे पास एक दिरहम के सिवा और कोई पैसे भी नहीं थे। मैं ने उसी दिरहम की एक महंगी ख़ुश्बू ले कर उस काग़ज़ को लगाई। रात को जब मैं सोया तो मैं ने ख़्वाब में देखा कि कोई कहने वाला कह

रहा है : "ऐ बिशर बिन ह़ारिष ! तूने हमारा नाम रास्ते से उठा कर उसे ख़ुश्बू में बसाया है हम भी तेरा नाम दुन्या व आख़िरत में महका देंगे" फिर ऐसा ही हुवा। (کتاب التوابین، توبۃ بشر الحافی، ص ۲۱۰)

﴾39﴿ एक लुटेरे की तौबा

ह़ज़रते क़ा'नबी عَلَيْهِ رَحْمَةُ के एक बेटे का बयान है कि (तौबा करने से पहले) मेरे वालिद शराब पीते और नौ उ़म्र लड़कों के साथ उठना बैठना रखते थे। एक मरतबा इन्हों ने उन लड़कों को बुलाया और दरवाज़े पर उन का इन्तिज़ार करने लगे। इतने में वहां से ह़ज़रते सय्यिदुना शअ़बा عَلَيْهِ رَحْمَةُ अपनी सुवारी पर वहां से गुज़रे। उन के पीछे पीछे लोग दौड़ते जा रहे थे इन्हों ने पूछा : "येह कौन है?" लोगों ने बताया कि "येह शअ़बा है।" इन्हों ने पूछा : "येह शअ़बा कौन है? बताया गया : "मुह़द्दिष हैं।" तो मेरे वालिद उन के पीछे दौड़ते हुए पहुंचे और कहा कि मुझे ह़दीष सुनाओ। ह़ज़रते शअ़बा عَلَيْهِ رَحْمَةُ ने कहा कि तू कोई मुह़द्दिष तो नहीं कि तुझे ह़दीष सुनाऊं?

येह सुन कर मेरे वालिद ने चाक़ू निकाल लिया और कहा कि "ह़दीष सुनाओ वरना ज़ख़्मी कर दूंगा।" तो ह़ज़रते शअ़बा عَلَيْهِ رَحْمَةُ ने ह़दीष सुनाई कि हमें मन्सूर रबई ने इब्ने मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत बयान की है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया "जब तुझे ह़या न रहे तो जो चाहे कर गुज़र।"

येह सुन कर मेरे वालिद ने चाक़ू फैंक दिया और घर वापस आ गए और सारी शराब फैंक दी और मेरी वालिदा को कहा कि अभी मेरे दोस्त आने वाले हैं, जब वोह आ जाएं तो उन्हें खाना वग़ैरा खिला कर बता देना कि मैं ने शराब वग़ैरा छोड़ दी है और बरतन तोड़ दिये हैं ताकि वोह सब वापस चले जाएं।" (کتاب التوابین، توبۃ الفضیل، ص ۲۱۹)

﴾40﴿ एक रहज़न की तौबा

हज़रते बिशर हाफ़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ फ़रमाते हैं कि मैं ने अक्बर कर्दी से पूछा कि तुम्हारी तौबा का क्या सबब बना ? उस ने बताया :

"मैं एक ग़ार में रहता था और रहज़नी किया करता । वहां खजूर के तीन दरख़्त थे । एक दरख़्त पर फल न थे वहां एक चिड़या फल वाले दरख़्त से पकी हुई खजूर तोड़ती और उस दरख़्त पर ले जाती । मैं ने उसे इस त़रह़ दस चक्कर लगाते हुए देखा तो मेरे दिल में एक ख़याल आया कि उठ कर देखूं कि क्या माजरा है । जब मैं ने उठ कर देखा तो वहां एक अंधा सांप था और चिड़या उस के मुंह में वोह दाने डाल रही थी ।"

येह देख कर मैं रोने लगा और मैं ने कहा कि मेरे आक़ा ! सांप को तेरे नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने मार डालने का हुक्म दिया और तूने इस अंधे सांप पर चिड़या उस की कफ़ालत के लिये मुतअ़य्यन की हुई है और मैं तेरा बन्दा हूं तेरी वह़दानिय्यत का इक़रार करने के बा वुजूद रहज़नी करता हूं । मेरे दिल में जैसे आवाज़ गूंजने लगी : "ऐ अ़क्बर ! मेरा दरवाज़ा खुला है ।" तो मैं ने अपनी तलवार तोड़ दी और अपने सर पर ख़ाक डाली और ज़ोर ज़ोर से पुकारने लगा "ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुआ़फ़ कर दे, रह़म कर दे ।" अचानक मैं ने ग़ैबी आवाज़ सुनी : "हम ने तुझे मुआ़फ़ कर दिया ।" मेरे रुफ़क़ा को पता चल गया तो उन्हों ने मुझ से पूछा : "तुझे क्या हो गया है तूने तो हमें परेशान कर दिया है ?" मैं ने कहा कि मैं धुतकारा हुवा बन्दा था और अब नेक हो गया हूं । तो वोह लोग कहने लगे कि हम भी धुतकारे हुए हैं अब हम भी नेक बनेंगे ।

फिर हम सब तीन दिन तक आहो ज़ारी करते रहे और हम भूके प्यासे चलते हुए तीसरे दिन एक बस्ती में आए। वहां एक अन्धी औरत गाऊं के दरवाज़े पर बैठी थी उस ने पूछा : "क्या तुम में कोई अ़क्बर कर्दी भी है ?" हम ने कहा : "क्या कोई काम है ?" उस ने कहा : "हां ! मैं तीन रातों से ख़्वाब में नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को देख रही हूं वोह फ़रमा रहे हैं कि अ़क्बर कर्दी को अपने बेटे का छोड़ा हुवा माल दे दे।" फिर उस ने साठ कपड़े हमें दिये जिन में से कुछ हम ने पहन लिये और अपने घरों में आ गए।"

(کتاب التوابین، توبۃ عکبر الکردی، ص۲۲۲)

﴾41﴿ एक मजूसी की तौबा

इब्ने अबिदुन्या عَلَيْهِ رَحْمَةُ फ़रमाते हैं कि एक शख़्स ने ख़्वाब में नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को देखा, आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमा रहे थे कि बग़्दाद में फुलां मजूसी से जा कर कहो कि "तेरी दुआ क़बूल हो गई है।" तो येह शख़्स कहता है कि मैं बेदार हो कर सोचने लगा कि मैं बग़्दाद कैसे जाऊं ? इसी सोचो बिचार में पूरा दिन निकल गया और मैं सो गया। दूसरी रात भी येही ख़्वाब देखा। जब तीसरे दिन भी येही ख़्वाब नज़र आया तो मैं ने सुवारी ले कर बग़्दाद का रुख़ किया और उसी मजूसी के पास पहुंच गया और उस के पास जा कर बैठ गया। वोह बहुत मालदार था उस ने पूछा : "कोई ज़रूरत है ?" मैं ने कहा : "अकेले में बताऊंगा।" तो कुछ लोग चले गए और उस के चन्द साथी रह गए। मैं ने कहा : "इन्हें भी बाहर भेज दो" तो वोह भी बाहर चले गए तो मैं ने कहा कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का क़ासिद हूं। उन्हों ने तुम्हें पैग़ाम भेजा है कि तुम्हारी दुआ क़बूल हो गई है।" मजूसी ने हैरत से पूछा : "क्या तू मुझे जानता है ?" मैं ने कहा : "हां ! उस ने कहा कि मैं तो इस्लाम और मुहम्मद صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की रिसालत का मुन्किर हूं।" मैं ने कहा कि

"तुम इस त़रह़ कह रहे हो ह़ालांकि रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है?" उस ने कहा : "क्या मेरे पास भेजा है?" मैं ने कहा "हां !" तो उस ने कहा कि "मैं गवाही देता हूं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूद नहीं और मुह़म्मद صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के रसूल हैं।"

फिर उस ने अपने साथियों को बुलाया और कहा कि मैं गुमराही में था और अब ह़क़ की त़रफ़ लौट आया हूं तुम में से जो शख़्स इस्लाम लाएगा मेरे माल में से उस को ह़िस्सा मिलेगा और जो इस्लाम नहीं लाएगा उस को मेरा माल वापस करना होगा। तो उस के साथियों में से अकषर लोग इस्लाम ले आए। फिर उस ने अपने बेटे को बुलाया और कहा कि बेटा ! मैं गुमराही में था अब ह़क़ की त़रफ़ लौट आया हूं, अब तुम बताओ क्या चाहते हो? बेटे ने कहा : "मैं भी इस्लाम लाता हूं।" फिर उस ने अपनी बेटी को बुलाया और उसे भी दा'वते इस्लाम दी, वोह भी इस्लाम ले आई।

फिर उस ने मुझ से कहा : "क्या तुझे मा'लूम है वोह दुआ़ क्या थी जो क़बूल हो गई?" मैं ने कहा : "नहीं।" तो उस ने बताया कि "जब मैं ने अपने बेटे की शादी अपनी बेटी से की तो दा'वत का एहतिमाम किया और त़रह़ त़रह़ के खाने बनाए। मेरे पड़ोस में सादात में से कुछ ग़रीब लोग रहते थे। मैं लोगों को खिलाने के बा'द थक गया तो मैं ने ख़ादिम को कहा कि ऊपर की मंज़िल में मेरा बिस्तर लगा दो मैं सोना चाहता हूं। जब मैं सोने लगा तो मैं ने पड़ोस की एक बच्ची की आवाज़ सुनी वोह कह रही थी कि "अम्मां जान ! इस मजूसी ने अपने खाने की ख़ुश्बू से हमें तक्लीफ़ पहुंचाई है। "येह सुन कर मैं नीचे आया और उन के लिये बहुत सा खाना भेजा और साथ कुछ दीनार और कपड़े भी भेजे तो उन बच्चों में से एक ने कहा कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तेरा ह़श्र हमारे साथ करे और बाक़ी लोगों ने आमीन कही तो आज वोह दुआ़ क़बूल हो गई।" (کتاب التوابین، توبۃ مجوسی واسلامہ، ص ۳۰۵۔۳۰۶)

42 नसरानी ह़कीम की तौबा

मरवी है कि एक सूफ़ी बुज़ुर्ग अपने चालीस साथियों समेत सफ़र पर रवाना हुए। उन्हों ने एक जगह तीन दिन क़ियाम किया मगर कहीं से खाना नहीं आया तो उन्हों ने अपने साथियों से कह दिया कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने रिज़्क़ के लिये अस्बाब इख़्तियार करना मुबाह़ रखा है, लिहाज़ा कोई जाए और कुछ खाने पीने की चीज़ ले आए। उन में से एक शख़्स गया और बग़दाद के एक अ़लाक़े में जा पहुंचा। वहां एक नसरानी त़बीब का मत़ब था जो लोगों की नब्ज़ देख कर दवाई दे रहा था। जब फ़क़ीर को कोई ऐसा शख़्स न मिला जिस से येह ज़रूरत का मुत़ालबा कर सके तो येह उस के मत़ब में जा बैठा।

नसरानी ह़कीम ने पूछा : "तुझे क्या बीमारी है?" तो उस ने अपनी ह़ालत का शिकवा नसरानी से करना मुनासिब न समझा, इस लिये हाथ आगे कर दिया। त़बीब ने नब्ज़ देखी तो कहा कि मैं तुम्हारी बीमारी समझ गया हूं और दवाई भी जानता हूं। येह कह कर उस ने लड़के को आवाज़ दी और कहा कि एक रत़ल रोटी, एक रत़ल सालन और एक रत़ल ह़ल्वा ले आओ। तो फ़क़ीर ने कहा : "इस बीमारी के चालीस शिकार और भी हैं।" तो त़बीब ने आवाज़ दे कर कहा : "चालीस खाने इसी मिक़्दार के मज़ीद ले आओ।" जब खाना आ गया तो उस ने मज़दूर के ज़रीए़ वहां भिजवा दिया। जब फ़क़ीर उसे ले कर चला तो त़बीब भी उस का सच झूट जानने के लिये पीछे पीछे गया। फ़क़ीर चलता हुवा एक छोटे से घर में दाख़िल हो गया जहां शैख़ और दूसरे फ़ुक़रा बैठे थे। फ़ौरन खाना लगवाया गया और शैख़ और फ़ुक़रा खाने के गिर्द बैठ गए और येह नसरानी घर की डेवड़ी के पीछे जा छुपा। उस ने देखा की शैख़ ने लोगें को खाने से रोक दिया और अपने रफ़ीक़ से पूछा : "इतने सारे खाने का क़िस्सा क्या है? कहां से ले आया है?"

तो उस साथी ने पूरा क़िस्सा बयान किया। शैख़ ने कहा : "क्या तुम इस पर राज़ी हो कि बिग़ैर बदला दिये तुम एक नसरानी का खाना खाओ ?" तो शुरकाए क़ाफ़िला बोले : "इस का क्या बदला हो सकता है ?" शैख़ ने कहा कि "खाने से पहले **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से दुआ करो कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस नसरानी को आग से नजात अ़ता फ़रमाए।" तो उन सब ने मिल कर दुआ की।

नसरानी त़बीब जो येह माजरा देख रहा था कि इन लोगों ने बा वुजूद भूके होने के खाना नहीं खाया और वोह शैख़ की सारी बातें भी सुन चुका था तो उस ने दरवाज़ा खट-खटाया और अन्दर दाख़िल हो गया फिर सलीब तोड़ कर कहा "मैं गवाही देता हूं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूद नहीं और मुह़म्मद صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के रसूल हैं।" (کتاب التوابین، توبۃ طبیب نصرانی، ص ۳۰۷۔۳۰۸)

﴿43﴾ लह्व लअ़ब में मश्ग़ूल नौजवान की तौबा

ह़ज़रते सय्यिदुना शाह शुजाअ़ किरमानी عَلَيْهِ رَحْمَةُ के यहां लड़का तवल्लुद हुवा तो उस के सीने पर सब्ज़ हुरूफ़ में "**अल्लाह** جل شانہ" तह़रीर था लेकिन जब शुऊ़री उ़म्र को पहुंचा तो लह्व लअ़ब में मश्ग़ूल रह कर बरबत़ पर गाना गाया करता था। एक मरतबा रात के वक़्त जब वोह एक मह़ल्ले से गाता हुवा गुज़रा तो एक नई दुल्हन जो अपने शोहर के पास सोई हुई थी मुज़त़रिबाना त़ौर पर उठ कर बाहर झांकने लगी। इसी दौरान जब शोहर की आंख खुली तो बीवी को अपने पास न पा कर उठा और बीवी के पास पहुंच कर उस लड़के से मुख़ात़ब हो कर कहा कि "अभी तेरी तौबा का वक़्त नहीं आया ?" येह सुन कर लड़के ने ताषिर आमेज़ अन्दाज़ में कहा कि "यक़ीनन आ चुका है" और येह कह कर बरबत़ तोड़ दिया और उसी दिन से ज़िक्रे इलाही में मश्ग़ूल हो गया और उस दर्जए कमाल तक पहुंचा कि

इस के वालिद फ़रमाया करते कि जो मक़ाम मुझे चालीस साल में न हासिल हो सका वोह साहिबज़ादे को चालीस दिन में मिल गया ।"

(تذکرۃ الاولیاء، باب سی وششم، ذکر شاہ شجاع کرمانی، ج ۱، ص ۲۷۸)

﴾44﴿ एक बद मुआ़श की तौबा

मन्क़ूल है कि एक बद मुआ़श नौजवान ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार عَلَيْهِ رَحْمَة का हमसाया था । लोग उस से बहुत परेशान रहते । चुनान्चे एक मरतबा लोगों ने ह़ज़रते मालिक बिन दीनार عَلَيْهِ رَحْمَة से उस के मज़ालिम की शिकायत की तो आप ने उस के पास जा कर समझाया लेकिन उस ने गुस्ताख़ी के साथ पेश आते हुए कहा कि "मैं हुकूमत का आदमी हूं और किसी को मेरे कामों में दख़ील होने की ज़रूरत नहीं ।" आप ने जब उस से फ़रमाया कि "मैं बादशाह से तेरी शिकायत करूंगा ।" तो उस ने जवाब दिया : "वोह बहुत करीम है मेरे ख़िलाफ़ वोह किसी की बात नहीं सुनेगा । आप ने फ़रमाया कि "अगर वोह नहीं सुनेगा तो मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से अ़र्ज़ करूंगा ।" उसने कहा कि वोह बादशाह से भी ज़ियादा करीम है ।

येह सुन कर आप वापस आ गए लेकिन कुछ दिनों बा'द जब उस के ज़ालिमाना अफ़्आ़ल ह़द से ज़ियादा हो गए तो लोगों ने फिर आप से शिकायत की और आप फिर नसीह़त करने जा पहुंचे लेकिन ग़ैब से आवाज़ आई कि "मेरे दोस्त को मत परेशान करो ।" आप को येह आवाज़ सुन कर बहुत ह़ैरानी हुई और उस नौजवान से कहा कि मैं उस ग़ैबी आवाज़ के मुतअ़ल्लिक़ तुझ से पूछने आया हूं जो मैं ने रास्ते में सुनी है । उस ने कहा कि "अगर येह बात है तो मैं अपनी तमाम दौलत राहे खुदा عَزَّوَجَلَّ में ख़ैरात करता हूं" और पूरा सामान ख़ैरात कर के ना मा'लूम सम्त चला गया ।

इस के बा'द सिवाए ह़ज़रते मालिक बिन दीनार عَلَيْهِ رَحْمَة के किसी ने उस को नहीं देखा । आप ने भी मक्कए मुअ़ज़्ज़मा में इस

हालत में देखा कि बहुत ही कमज़ोर और मरने के क़रीब था और कह रहा था कि ख़ुदा ने मुझे अपना दोस्त फ़रमाया है, मैं उस के अहकाम पर जानो दिल से निषार हूं और मुझे इल्म है कि उस की रिज़ा सिर्फ़ इबादत ही से हासिल होती है और आज से मैं उस की रिज़ा के ख़िलाफ़ काम करने से ताइब हूं।" येह कह कर दुन्या से रुख़्सत हो गया। (تذکرۃ الاولیاء، باب چہارم، ذکر مالک دینار، ج۱، ص۵۰)

45 एक सूदख़ोर की तौबा

इब्तिदाई दौर में ह़ज़रते सय्यिदुना ह़बीब अ़जमी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ बहुत अमीर थे और अहले बसरा को सूद पर क़र्ज़ा दिया करते थे। जब मक़रूज़ से क़र्ज़ का तक़ाज़ा करने जाते तो उस वक़्त तक न टलते जब तक कि क़र्ज़ वुसूल न हो जाता और अगर किसी मजबूरी की वजह से क़र्ज़ वुसूल न होता तो मक़रूज़ से अपना वक़्त ज़ाएअ होने का हरजाना वुसूल करते और इस रक़म से ज़िन्दगी बसर करते। एक दिन किसी के यहां वुसूलयाबी के लिये पहुंचे तो वोह घर पर मौजूद न था। उस की बीवी ने कहा कि "न तो शोहर घर पर मौजूद है और न मेरे पास तुम्हारे देने के लिये कोई चीज़ है, अलबत्ता मैं ने आज एक भेड़ ज़ब्ह की है जिस का तमाम गोश्त तो ख़त्म हो चुका है अलबत्ता सर बाक़ी रह गया है, अगर तुम चाहो तो वोह मैं तुम को दे सकती हूं।"

चुनान्चे आप उस से सर ले कर घर पहुंचे और बीवी से कहा कि येह सर सूद में मिला है इसे पका डालो। बीवी ने कहा : "घर में न लकड़ी है और न आटा, भला मैं खाना किस त़रह़ तय्यार करूं?" आप ने कहा कि "इन दोनों चीज़ों का भी इन्तिज़ाम मक़रूज़ लोगों से सूद ले कर करता हूं" और सूद ही से येह दोनों चीज़ें ख़रीद कर लाए। जब खाना तय्यार हो चुका तो एक साइल ने आ कर सुवाल किया। आप ने कहा कि "तेरे देने के लिये हमारे पास कुछ नहीं है और

तुझे कुछ दे भी दें तो इस से तू दौलत मन्द न हो जाएगा लेकिन हम मुफ़्लिस हो जाएंगे।" चुनान्चे साइल मायूस हो कर वापस चला गया।

जब बीवी ने सालन निकालना चाहा लेकिन वोह हंडिया सालन की बजाए ख़ून से लबरेज़ थी। उस ने शोहर को आवाज़ दे कर कहा : "देखो, तुम्हारी कन्जूसी और बद बख़्ती से येह क्या हो गया है?" आप को येह देख कर इ़ब्रत ह़ासिल हुई और बीवी को गवाह बना कर कहा कि आज मैं हर बुरे काम से ताइब होता हूं और येह कह कर मक़रूज़ लोगों से अस्ल रक़म लेने और सूद ख़त्म करने के लिये निकले।

रास्ते में कुछ लड़के खेल रहे थे आप को देख कर कुछ लड़कों ने आवाज़े कसना शुरूअ़ किये कि "दूर हट जाओ ह़बीब सूदख़ोर आ रहा है, कहीं इस के क़दमों की ख़ाक हम पर न पड़ जाए और हम इस जैसे बद बख़्त न बन जाएं।" येह सुन कर आप बहुत रन्जीदा हुए और ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो गए उन्हों ने आप को ऐसी नसीह़त फ़रमाई कि बेचैन हो कर दोबारा तौबा की। वापसी में जब एक मक़रूज़ शख़्स आप को देख कर भागने लगा तो फ़रमाया :"तुम मुझ से मत भागो, अब तो मुझ को तुम से भागना चाहिये ताकि एक गुनहगार का साया तुम पर न पड़ जाए। जब आप आगे बढ़े तो उन्ही लड़कों ने कहना शुरूअ़ किया कि "रास्ता दे दो अब ह़बीब ताइब हो कर आ रहा है कहीं ऐसा न हो कि हमारे पैरों की गर्द इस पर पड़ जाए और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमारा नाम गुनाहगारों में दर्ज कर ले।" आप ने बच्चों का येह क़ौल सुन कर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से अ़र्ज़ की : "तेरी क़ुदरत भी अ़जीब है कि आज ही मैं ने तौबा की और आज ही तूने लोगों की ज़बान से मेरी नेक नामी का ए'लान करा दिया।"

इस के बा'द आप ने मुनादी करा दी कि जो शख़्स मेरा मक़रूज़ हो वोह अपनी तह़रीर और माल वापस ले जाए। इस के इ़लावा आप عَلَيْهِ رَحْمَةُ ने अपनी तमाम दौलत राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में लुटा

दी। फिर साहिले फुरात पर एक इबादत ख़ाना ता'मीर कर के इबादत में मश्ग़ूल रहे और येह मा'मूल बना लिया कि दिन को इल्मे दीन की तह़सील के लिये ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ की ख़िदमत में पहुंच जाते और रात भर मश्ग़ूले इबादत रहते। चूंकि कुरआने मजीद का तलफ़्फ़ुज़ सह़ीह़ मख़रज से अदा नहीं कर सकते थे इस लिये आप को अ़जमी का ख़िता़ब दे दिया गया। (تذکرۃ الاولیاء، باب ذکر حبیب عجمی، ج۱، ص۵۶۔۵۷)

﴿46﴾ ह़सीन औ़रत पर फ़रेफ़्ता होने वाले की तौबा

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़तबा बिन गुलाम عَلَيْهِ رَحْمَةُ इस त़रह़ ताइब हुए कि किसी ह़सीन औ़रत पर फ़रेफ़्ता हुए और उस से किसी न किसी त़रह़ अपने इ़श्क़ का इज़हार कर दिया। उस औ़रत ने अपनी कनीज़ के ज़रीए दरयाफ़्त कराया कि "आप ने मेरे जिस्म का कौन सा ह़िस्सा देखा है?" आप ने कहा कि "तुम्हारी आंखें देख कर आ़शिक़ हुवा हूं।" इस के जवाब में उस ने अपनी दोनों आंखें निकाल कर आप की ख़िदमत में रवाना करते हुए कनीज़ से कहलवाया : "जिस चीज़ पर आप फ़रेफ़्ता हुए थे वोह ह़ाज़िर हैं।"

येह देख कर आप के ऊपर एक अ़जीब कैफ़िय्यत त़ारी हो गई और आप ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो कर ताइब हो गए और फ़ुयूज़े बात़िनी से बहरावर हो कर मश्ग़ूले इबादत रहे, ख़ुद अपने हाथ से जव काश्त करते और ख़ुद ही अपने हाथ से आटा पीस कर पानी में तर कर के धूप में ख़ुश्क कर लिया करते और पूरे हफ़्ते में एक एक टिक्या खा कर इबादत में मश्ग़ूल रहते और फ़रमाया करते कि "रोज़ाना रफ़्ए ह़ाजत के लिये जाते हुए किरामन कातिबीन से शर्म आती है।" (تذکرۃ الاولیاء، باب ہفتم، ذکر عتبہ الغلام، ج۱، ص۶۳)

(47) ताइबीन के हालात सुन कर तौबा करने वाला

हज़रते सय्यिदुना ज़ुन्नून मिस्री عَلَيْهِ رَحْمَةُ के ताइब होने का वाक़िआ़ अ़जीबो ग़रीब है और वोह येह कि किसी शख़्स ने आप को इत्तिलाअ़ पहुंचाई कि फ़ुलां मक़ाम पर एक आ़बिद है। जब आप उस से नियाज़ हासिल करने पहुंचे तो देखा कि वोह एक दरख़्त पर उलटा लटका हुवा अपने नफ़्स से मुसलसल येह कह रहा है कि "जब तक तू इबादते इलाही عَزَّوَجَلَّ में मेरी हम नवाई नहीं करेगा मैं तुझे यूं ही अज़िय्यत देता रहूंगा हत्ता कि तेरी मौत वाक़ेअ़ हो जाए।" येह वाक़िआ़ देख कर आप को उस पर ऐसा तरस आया कि रोने लगे और जब नौजवान आ़बिद ने पूछा : "तुम कौन हो ? जो एक गुनहगार पर तरस खा कर रो रहे हो ! येह सुन कर आप ने उस के सामने जा कर सलाम किया और मिज़ाज पुर्सी की। उस ने बताया : "चूंकि येह बदन इबादते इलाही عَزَّوَجَلَّ पर आमादा नहीं है इस लिये सज़ा दे रहा हूं।" आप ने कहा कि "मुझे तो येह गुमान हुवा कि शायद तुम ने किसी को क़त्ल कर दिया है या कोई गुनाहे अ़ज़ीम सरज़द हो गया है।" उस ने जवाब दिया कि "तमाम गुनाह मख़्लूक़ से मैल जोल की वजह से पैदा होते हैं, इस लिये मैं मख़्लूक़ से रस्मो राह को बहुत बड़ी भूल तसव्वुर करता हूं।" आप ने फ़रमाया कि "तुम वाक़ेई बहुत बड़े ज़ाहिद हो।" उस ने जवाब दिया कि अगर तुम किसी बड़े ज़ाहिद को देखना चाहते हो तो सामने पहाड़ पर जा कर देखो।"

चुनान्चे जब आप वहां पहुंचे तो एक नौजवान को देखा, जिस का एक पैर बाहर कटा हुवा पड़ा था और उस का जिस्म कीड़ों की ख़ूराक बना हुवा था। जब आप ने येह सूरते हाल मा'लूम की तो उस ने बताया कि "एक दिन मैं इसी जगह मसरूफ़े इबादत था कि एक ख़ूबसूरत औ़रत सामने से गुज़री जिस को देख कर मैं फ़रेबे शैतान में मुब्तला हुवा और उस के नज़दीक पहुंच गया।" उस वक़्त निदा आई :

"ऐ बे ग़ैरत ! तीस साल खुदा عَزَّوَجَلَّ की इबादत में गुज़ार कर अब शैतान की बात मानने चला है ?" लिहाज़ा मैं ने उसी वक़्त अपना एक पाऊं काट दिया कि गुनाह के लिये पहला क़दम इसी पाऊं से बढ़ाया था।" फिर उस ने पूछा : "बताइये कि आप मुझ गुनाहगार के पास क्यूं आए और अगर वाक़ेई किसी बड़े ज़ाहिद की जुस्तजू में हैं तो उस पहाड़ की चोटी पर चले जाइये।" लेकिन जब बुलन्दी की वजह से आप का वहां पहुंचना नामुमकिन नज़र आया तो उस नौजवान ने खुद ही उन बुज़ुर्ग का क़िस्सा शुरूअ़ कर दिया। उस ने बताया कि "पहाड़ की चोटी पर जो नौजवान बुज़ुर्ग हैं उन से एक दिन किसी ने येह कह दिया कि रोज़ी मेह़नत से ह़ासिल होती है। बस उस दिन से उन्हों ने येह अ़हद कर लिया कि जिस रोज़ी में मख़्लूक़ का हाथ होगा वोह इस्ति'माल नहीं करूंगा और जब बिग़ैर कुछ खाए दिन गुज़र गए तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने शहद की मख्खियों को हुक्म दिया कि वोह उन के गिर्द रह कर उन्हें शहद मुहय्या करती रहें, चुनान्चे हमेशा वोह शहद ही इस्ति'माल करते हैं।" येह सुन कर ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुन्नून मिस्री عَلَيْهِ رَحْمَة ने दर्से इब्रत ह़ासिल किया और उसी वक़्त ताइब हो कर इबादत व रियाज़त की त़रफ़ मुतवज्जेह हो गए।

(تذکرۃ الاولیاء، باب سیزدھم، ذکر ذوالنون مصری، ج۱، ص۱۱۲۔۱۱۳)

﴾48﴿ एक ताजिर की तौबा

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अ़ली शफ़ीक़ बल्ख़ी عَلَيْهِ رَحْمَة एक ख़ास वाक़िए से मुतअष्षिर हो कर ताइब हुए। वाक़िआ कुछ इस त़रह़ है कि आप ब ग़रज़े तिजारत तुर्की पहुंचे तो वहां का एक मश्हूर बुतकदा देखने पहुंच गए और वहां एक पुजारी से फ़रमाया कि "तुझे क़ादिर व ज़िन्दा खुदा को नज़र अन्दाज़ कर के एक बे जान बुत की पूजा करते हुए नदामत नहीं होती ?" उस ने जवाब दिया कि "आप जो हुसूले रिज़्क़ के लिये दुन्या भर में तिजारत करते फिरते हैं इस से नदामत नहीं होती ? और क्या आप का ख़ालिक़ घर बैठे रोज़ी पहुंचाने पर क़ादिर नहीं है ?"

येह सुन कर उसी वक़्त वत़न वापस लौटे तो किसी ने रास्ते में पेशा दरयाफ़्त किया। आप ने फ़रमाया कि मैं तिजारत करता हूं। उस ने त़ा'ना दिया : "आप के मुक़द्दर का जो कुछ है वोह तो घर बैठे भी मुयस्सर आ सकता है लेकिन मैं समझता हूं कि शायद आप ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ के शुक्र गुज़ार नहीं हैं।" इस वाक़िए से आप और ज़ियादा मुतअस्सिर हुए। जब घर पहुंचे तो मा'लूम हुवा कि शहर के एक सरदार का कुत्ता गुम हो गया है और शुबे (शक) में आप के हमसाये को गिरिफ़्तार कर लिया गया है। आप ने सरदार को येह यक़ीन दिला कर कि तुम्हारा कुत्ता तीन दिन के अन्दर मिल जाएगा अपने हमसाये को रिहा करवाया। जिस ने कुत्ता चोरी किया था वोह तीसरे दिन आप के पास पहुंच गया और आप ने सरदार के यहां कुत्ता भिजवा कर दुन्या से कनारा कशी इख़्तियार कर ली। (تذکرۃ الاولیاء، ذکر شفیق بلخی، ج۱، ص۱۸۰۔۱۸۱)

﴾49﴿ कफ़न चोर की तौबा

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़ातिमे असम عَلَيْهِ رَحْمَةُ ने बल्ख़ में दौराने वा'ज़ फ़रमाया : "कि ऐ ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ इस मजलिस में जो सब से ज़ियादा गुनहगार हो उस की मग़्फ़िरत फ़रमा दे।" इत्तिफ़ाक़ से वहां एक कफ़न चोर भी मौजूद था। जब रात को उस ने कफ़न चोरी करने के लिये एक क़ब्र को खोला तो निदा आई कि "आज ही तो ह़ातिम عَلَيْهِ رَحْمَةُ के सदक़े में तेरी मग़्फ़िरत हुई थी और आज ही तू फिर इर्तिकाबे मा'सिय्यत के लिये आ पहुंचा ?" येह निदा सुन कर वोह हमेशा के लिये ताइब हो गया। (تذکرۃ الاولیاء، باب بیست وھفتم، ذکر حاتم اصم، ج۱، ص۲۲۲)

﴾50﴿ रक़्सो सुरूर में मसरूफ़ लोगों की तौबा

ह़ज़रते सय्यिदुना मा'रूफ़ कर्ख़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ कुछ लोगों के हमराह जा रहे थे कि रास्ते में एक मजमअ़ रक़्सो सुरूर और मयनोशी में मसरूफ़ था। जब आप के हमराहियों ने उन के ह़क़ में बद दुआ़ करने

की दरख़्वास्त की तो फ़रमाया "ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जिस त़रह़ तूने आज इन्हें बेहतर ऐ़श दे रखा है आयन्दा इस से भी बेहतर ऐ़श इन को अ़त़ा फ़रमाते रहना।" इस के साथ ही वोह मजमअ़ शराब व रबाब को फैंक कर आप के सामने आया और बैअ़त ह़ासिल कर के बुरे अफ़्आ़ल से ताइब हो गया। इस के बा'द आप ने लोगों से मुख़ात़ब हो कर फ़रमाया : "कि जो शरीनी से मर सकता हो उस को ज़ह़र देने से क्या ह़ासिल ?" (تذکرۃ الاولیاء، باب بیست وہفتم، ذکر معروف کرخی، ج۱، ص۲۴۲)

51 अ़क़्लमन्द बाप के बेटे की तौबा

मन्क़ूल है कि एक अ़क़्लमन्द शख़्स का इन्तिक़ाल होने लगा तो उस ने अपने बेटे को बुलवाया और उसे अलवदाई़ नसीह़त करते हुए कहा कि "बेटे ! अगर कभी तेरा शराब पीने को दिल करे तो पहले शराब ख़ाने जा कर किसी शराबी को देख लेना, अगर जूआ खेलने को दिल चाहे तो पहले किसी हारे हुए जूआरी का मुशाहदा कर लेना और अगर कभी ज़िना को दिल करे तो बिल्कुल सुब्ह़ के वक़्त त़वाइफ़ ख़ाने जाना।"

उस के इन्तिक़ाल के कुछ अ़र्से बा'द लड़के के दिल में शराब पीने का ख़याल पैदा हुवा, बाप की नसीह़त के मुत़ाबिक़ वोह नौजवान एक शराबी के पास पहुंचा जो नशे में धुत एक नाली में गिरा हुवा था, उस की येह इ़ब्रतनाक ह़ालत देख कर उस के दिल में ख़याल पैदा हुवा कि "अगर मैं ने भी शराब पी तो मेरा भी येह ह़श्र होगा।" येह ख़याल आते ही उस ने शराब पीने का इरादा तर्क कर दिया।

फिर एक मरतबा शैत़ान ने उसे जूए की तरग़ीब दिलाई, ह़स्बे वसिय्यत वोह पहले एक हारे हुए जूआरी के पास पहुंचा। उस ने देखा कि हार जाने के बाइ़ष वोह जूआरी शदीद रंजो ग़म में गिरिफ़्तार था और उस की ह़ालत निहायत क़ाबिले रह़म हो रही थी। उस की येह ह़ालत देख कर उसे भी अपने बारे में येही ख़ौफ़ पैदा हुवा और यूं जूए से भी बाज़ आ गया।

फिर कुछ अर्से बा'द नफ़्स ने ज़िना की ख़्वाहिश का इज़्हार किया, इस मरतबा भी वोह ह़स्बे नसीह़त सुब्ह़ के वक़्त त़वाइफ़ ख़ाने जा पहुंचा। जब दरवाज़ा बजाया तो कुछ देर बा'द एक त़वाइफ़ बाहर आई, नींद से बेदार होने की वजह से उस की आंखों में गन्दगी भरी हुई थी, बाल बिखरे हुए थे, बिग़ैर सुर्ख़ी पावडर के चेहरा बिल्कुल बे रौनक़ नज़र आ रहा था और उस पर मुर्दनी सी छाई हुई थी, तरोताज़गी नाम की भी न थी, मुंह से बदबू के भपके उड़ रहे थे, उस ने मैला कुचेला लिबास पहन रखा था जिस से पसीने की बू भी मह़सूस हो रही थी, गोया कि शाम को मलम्अ़ कारी कर के "शिकार" को अपनी जानिब राग़िब करने वाली "हूर परी" इस वक़्त ग़लाज़त का एक ढेर नज़र आ रही थी। त़वाइफ़ का येह भयानक ह़ुल्या देख कर उस नौजवान के दिल में ज़िना से कराहिय्यत पैदा हो गई और इस ने अपने इरादे से हमेशा के लिये तौबा कर ली। (माख़ूज़ अज़ "मीठा ज़ह्‌र", स. 174)

﴾52﴿ शराबी वज़ीर के मुसाह़िब की तौबा

एक मरतबा एक शराबी वज़ीर का मुसाह़िब अबुल फ़ज़्ल दैलमी जो ख़ुद भी शराब पीता था, ह़ज़रते सय्यिदुना क़ुत़बुद्दीन औलिया अबू इस्ह़ाक़ इब्राहीम عَلَيْهِ رَحْمَۃ के पास ह़ाज़िर हुवा तो आप ने फ़रमाया कि "शराब नोशी से तौबा कर ले।" उस ने जवाब दिया : "मैं ज़रूर ताइब हो जाता लेकिन जब वज़ीर की मजलिस में दौरे जाम चलता है तो मजबूरन मुझ को भी पीनी पड़ती है।" आप ने फ़रमाया "जब उस मह़फ़िल में तुझे शराब नोशी पर मजबूर किया जाए तो मेरा तसव्वुर कर लिया करो।" चुनान्चे जब वोह तौबा कर के घर पहुंचा तो देखा कि तमाम जाम शिकस्ता पड़े हैं और शराब ज़मीन पर बह रही है। येह करामत देख कर वोह बहुत मुतअष्षिर हुवा और वज़ीर के पूछने पर पूरा वाक़िआ़ बयान कर दिया इस के बा'द से वज़ीर ने कभी उस को शराब नोशी पर मजबूर नहीं किया। (تذکرۃ الاولیاء، باب نود م، ذکر شیخ ابو اسحٰق شہریار، ج ۲، ص ۲۴۷)

53 संगीन जराइम में मुलव्विष शख़्स की तौबा

एक मरतबा कोई इस्लामी भाई ऐसे शख़्स को अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी مَدَّظِلُّهُ الْعَالِي की बारगाह में ले कर आए जो इन्तिहाई संगीन नौइय्यत के जराइम में मुलव्विष था ह़त्ता कि तीन क़त्ल भी कर चुका था और जेल में सज़ा भी काट चुका था। उस ने अमीरे अहले सुन्नत مَدَّظِلُّهُ الْعَالِي की ख़िदमत में अपनी दास्तान अ़र्ज़ की और कहने लगा कि, "मैं अपनी बक़िया ज़िन्दगी ईसाई बन कर गुज़ारना चाहता हूं लेकिन आप का येह इस्लामी भाई बहुत इसरार कर के मुझे आप के पास ले आया है। लिहाज़ा ! अगर आप मुझे मुत़मइन कर दें तो ठीक, वगरना (مَعَاذَاللّٰه) मैं सुब्ह़ गिरजा घर जा कर बाक़ाइ़दा ईसाई मज़हब इख़्तियार कर लूंगा और फिर से जराइम की दुन्या में मसरूफ़ हो जाऊंगा।"

बानिये दा'वते इस्लामी مَدَّظِلُّهُ الْعَالِي ने बड़ी तवज्जोह के साथ उस की बातें सुनने के बा'द बड़े प्यार और शफ़्क़त भरे लहजे में उस पर इनफ़िरादी कोशिश शुरूअ़ की। मदनी मिठास से लबरेज़ कलिमात गोया ताषीर का तीर बन कर उस के जिगर में पैवस्त हो गए। थोड़ी ही देर बा'द वोह शख़्स अमीरे अहले सुन्नत की दस्तबोसी करता हुवा नज़र आया। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ वोह ईसाई बनने के इरादे से भी बाज़ आ गया, मगर चूंकि वोह ईसाई बनने का इरादा कर चुका था, इस लिये शरई हुक्म के मुत़ाबिक़ वोह मुर्तद हो चुका था, लिहाज़ा ! आप ने उसे तौबा करवाई और अज़ सरे नौ मुसलमान किया। फिर उस ने आप के दस्ते मुबारक पर बैअ़त हो कर शहनशाहे बग़दाद हुज़ूर ग़ौषुल आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ की ग़ुलामी का पट्टा अपने गले में डाल लिया।

(इनफ़िरादी कोशिश, स. 111)

﴾54﴿ एक दहरिये की तौबा

सि. 1406 हि. में अमीरे अहले सुन्नत, हज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी مَدَّظِلُّهُ الْعَالِي पंजाब के मदनी दौरे पर थे कि साहीवाल में आप की मुडभेड़ एक दहरिये से हो गई। वोह अपने अ़क़ाइद व नज़रियात में बहुत पुख़्ता दिखाई देता था। लिहाज़ा ! बह़ष मुबाह़षा की बजाए आप ने इस उम्मीद पर उसे काफ़ी मह़ब्बत व शफ़्क़त से नवाज़ा कि हो सकता है कि हुस्ने अख़्लाक़ से मुतअष्षिर हो कर वोह अ़क़ाइदे बात़िला से ताइब हो जाए। आप को पाकपतन शरीफ़ में मुन्अ़क़िद होने वाले इजतिमाए़ ज़िक्रो ना'त में बयान करना था, लिहाज़ा वोह भी आप के हमराह चलने पर तय्यार हो गया। ब ज़रीअ़ए बस पाकपतन शरीफ़ पहुंचने के बा'द आप ने ह़ज़रते सय्यिदुना बाबा फ़रीदुद्दीन मसऊ़द गंजे शकर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के मज़ारे पुर अन्वार पर ह़ाज़िरी दी। वोह दहरिया भी आप के साथ साथ था। रात के वक़्त इजतिमाए़ ज़िक्रो ना'त में आप ने अपने मख़्सूस अन्दाज़ में रिक़्क़त अंगेज़ दुआ़ करवाई। ह़ाज़िरीन फूट फूट कर रो रहे थे। दौराने दुआ़ आप ने रो रो कर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में अ़र्ज़ की, "या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ राहे ह़क़ का एक मुतलाशी हमारे साथ चल पड़ा है और इस ने तेरी बारगाह में हाथ भी उठा दिये हैं, अब तू इस का दिल फैर दे और इस को नूरे हिदायत नसीब कर के रौशनी का मीनार बना दे।"

जब दुआ़ ख़त्म हुई तो उस दहरिये ने आप से बड़ी अ़क़ीदत का मुज़ाहिरा करते हुए अ़र्ज़ की, "दौराने दुआ़ एक अन्जाने ख़ौफ़ के सबब मेरे तो रोंगटे खड़े हो गए, अब मैं ने तौबा कर ली है।" फिर उस ने आप के दस्ते मुबारक पर दहरिय्यत से बा क़ाइदा तौबा की और कलिमा पढ़ कर मुसलमान हो गया और आप के ज़रीए़ हुज़ूर सय्यिदुना ग़ौषुल आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की ग़ुलामी का पट्टा भी अपने गले में डाल लिया। (इनफ़िरादी कोशिश, स. 101)

55 क़ादियानी प्रोफ़ेसर की तौबा

एक मरतबा अमीरे अहले सुन्नत مَدَّظِلُّهُ الْعَالِی की बारगाह में एक मक्तूब पहुंचा जिस में किसी प्रोफ़ेसर ने कुछ इस त़रह़ से लिखा था कि मैं क़ादियानी मज़हब से तअ़ल्लुक़ रखता हूं और एक बड़े ओ़हदे पर फ़ाइज़ हूं, मैं अब तक 70 मुसलमानों को गुमराह कर के क़ादियानी बना चुका हूं। सरदाराबाद (फ़ैसलाबाद) में होने वाले दा'वते इस्लामी के इजतिमाअ़ में तन्क़ीदी ज़ेह्न ले कर शरीक हुवा लेकिन आप का बयान सुन कर दिल की दुन्या ज़ेरो ज़बर हो गई। फिर किसी मुबल्लिग़ ने आप के बयानात की केसिटें तोह़फ़े में दीं। दिल की कैफ़िय्यात तो एक बयान सुन कर ही बदल चुकी थीं मगर जब दीगर केसिटें सुनीं तो लरज़ उठा और सारी रात रोता रहा, अब मुझे क्या करना चाहिये ?"

बानिये दा'वते इस्लामी ने इनफ़िरादी कोशिश करते हुए बिला ताख़ीर मक्तूब रवाना फ़रमाया कि फ़ौरन (हाथों हाथ) तौबा कर के इस्लाम क़बूल कर लीजिये और जितने मुसलमानों को مَعَاذَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ मुर्तद किया है उन्हें मुसलमान बनाने की कोई सूरत निकालिये।"

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ जब येह मक्तूब उस प्रोफ़ेसर तक पहुंचा तो आप की इनफ़िरादी कोशिश की बरकत से उस ने फ़ौरन तौबा की और मुसलमान हो गया। (इनफ़िरादी कोशिश, स. 110)

दुआ़

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में दुआ़ है कि हमें सच्ची तौबा की तौफ़ीक़ दे, अपना ख़ौफ़ और अपने मदनी ह़बीब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का इ़श्क़ अ़त़ा फ़रमाए और इसे हमारे लिये ज़रीअ़ए नजात बनाए।

اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

★★★★★★★

ماخذ و مراجع

١۔ صحیح البخاری، دارالکتب العلمیہ بیروت

٢۔سنن ابی داؤد، دار احیاء التراث العربی، بیروت

٣۔المسند لِامام احمد بن حنبل، دارالفکر، بیروت

٤۔جامع الترمذی،دارالفکر بیروت

٥۔ مجمع البحرین، دار الکتب العلمیہ، بیروت

٦۔ شرح السنّۃ، دار الکتب العلمیہ بیروت

٧۔ السنن الکبریٰ، دارالمغنی

٨۔ الترغیب والترہیب، دارالکتب العلمیہ، بیروت

٩۔ حلیۃالاولیاء، دارالکتب العلمیہ،بیروت

١٠۔ شعب الایمان، دار الکتب العلمیہ، بیروت

١١۔ مشکوٰۃ المصابیح، دارالفکر بیروت

١٢۔ احیاء علوم الدین، دارصادر، بیروت

١٣۔ مکاشِفۃ القلوب، دارالکتب العلمیہ بیروت

١٤۔ کتاب التوابین،دارالکتب العلمیہ، بیروت

١٥۔ کیمیائے سعادت، انتشارات گنجینہ، تہران

١٦۔ منہاج العابدین،مؤسسۃالسیروان، بیروت

١٧۔ تذکرۃالاولیاء، انتشارات گنجینہ، تہران

١٨۔ تنبیہ الغافلین، المکتبۃالحقّانیۃ پشاور

١٩۔ اولیائے رجال الحدیث، ضیاء الدین پبلیکیشنز، کراچی

٢٠۔ حکایاتِ الصالحین، ضیاء القرآن لاہور

٢١۔ روض الریاحین، دارابشائر، شام

۲۲۔ درۃ الناصحین، دارالفکر، بیروت

۲۳۔ ذمّ الھویٰ، دارالبشائر، شام

۲٤۔ میٹھا زہر، مکتبہ اعلٰحضرت، لاہور

۲۵۔ فتاوی رضویہ (قدیم) مکتبہ رضویہ، کراچی لاہور

۲٦۔ بہارِ شریعت، مکتبہ رضویہ، کراچی

۲۷۔ رسالہ ۲۸ کلماتِ کفر، مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی

۲۸۔ فیضانِ سنّت، مکتبۃ المدینہ، کراچی

۲۹۔ میں سدھرنا چاہتا ہوں، مکتبۃ المدینہ، کراچی

क्रिस्चैन का क़बूले इस्लाम

मर्कज़ुल औलिया (लाहोर) के एक इस्लामी भाई का बयान कुछ यूं है कि हमारे अ़लाक़े में एक वर्कशॉप थी, उस में एक **T.V** भी रखा हुवा था जिस पर कारीगर मुख़्तलिफ़ चैनल्ज़ देखा करते थे । रमज़ानुल मुबारक सि. 1429 हि. (सि. 2008 ई.) में जब दा'वते इस्लामी का **मदनी चैनल** शुरूअ़ हुवा तो उन्हें कुछ ऐसा भाया के दीगर तमाम चैनल्ज़ के बजाए अब वोह मदनी चैनल देखने लगे । इन कारीगरों में एक क्रिस्चैन नौजवान भी शामिल था वोह भी मदनी चैनल के पुरसोज़ सिलसिलों (प्रोग्राम्ज़) में दिलचस्पी लेने लगा । اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ सिर्फ़ तीन दिन के बा'द वोह कहने लगा कि **मैं अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ **की सादगी से बहुत मुतअष्षिर हुवा हूं** । फिर वोह कलिमा पढ़ कर मुसलमान हो गया ।

मदनी चैनल की मुहिम है नफ़्सो शैतां के ख़िलाफ़
जो भी देखेगा करेगा اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ *ए'तिराफ़*

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या की त़रफ़ से पेश कर्दा क़ाबिले मुत़ालआ़ कुतुब

﴿शो'बए कुतुबे आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه﴾

(1) करन्सी नोट के शरई अह़कामात :

(अल किफ़्लुल फ़क़ीहिल फ़ाहिम फ़ी क़िरत़ासिद्राहिम) (कुल सफ़ह़ात : 199)

(2) विलायत का आसान रास्ता (तसव्वुरे शैख़)

(अल याक़ूतितुल वासित़ह) (कुल सफ़ह़ात : 60)

(3) ईमान की पहचान (ह़ाशिया तम्हीदे ईमान) (कुल सफ़ह़ात : 74)

(4) मआ़शी तरक़्क़ी का राज़

(ह़ाशिया व तशरीह़ तदबीरे फ़लाह़ो नजात व इस्लाह़) (कुल सफ़ह़ात : 41)

(5) शरीअ़त व त़रीक़त

(मक़ालुल उ़-रफ़ाअ बि इ'ज़ाज़ि शर-इ़ व उ़-लमाअ) (कुल सफ़ह़ात : 57)

(6) ख़ुबूते हिलाल के त़रीक़े (तुरुक़ि इस्बाति हिलाल) (कुल सफ़ह़ात : 63)

(7) आ'ला ह़ज़रत से सुवाल जवाब

(इज़्हारिल ह़क़्क़िल जली) (कुल सफ़ह़ात : 100)

(8) ईदैन में गले मिलना कैसा ?

(विशाहुल जीद फ़ी तह़लीलि मुआ़नि-क़तिल ईद) (कुल सफ़ह़ात : 55)

(9) राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में ख़र्च करने के फ़ज़ाइल

(रद्दिल कहूति वल वबाअ बि दा'वतिल जीरानि व मुवासातिल फ़ु-क़राअ) (कुल सफ़ह़ात : 40)

(10) वालिदैन, ज़ौजैन और असातिज़ा के हुक़ूक़

(अल हुक़ूक़ लि त़र्ह़िल उ़क़ूक़) (कुल सफ़ह़ात : 125)

(11) दुआ़ के फ़ज़ाइल (अह़्सनुल विआ़अ लि आदाबिदुआ़अ मअ़हू ज़ैलुल मुद्आ़ लि अह़्सनिल विआ़अ)

(कुल सफ़ह़ात : 326)

शाएअ होने वाली अ-रबी कुतुब

अज़ : इमामे अहले सुन्नत मुजद्दिदे दीनो मिल्लत

मौलाना अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن

(12) किफ़्लुल फ़क़ीहिल फ़ाहिम (कुल सफ़हात : 74)

(13) तम्हीदुल ईमान (कुल सफ़हात : 77)

(14) अल इजाज़ातुल मतीनह (कुल सफ़हात : 62)

(15) इक़ा-मतुल क़ियामह (कुल सफ़हात : 60)

(16) अल फ़ज़्लुल मौहबी (कुल सफ़हात : 46)

(17) अज्लल ए'लाम (कुल सफ़हात : 70)

(18) अज़्ज़म-ज़-मतुल क़-मरिय्यह (कुल सफ़हात : 93)

(19,20,21) जद्दिल मुम्तार अ़ला रद्दिल मुहतार

(अल मुजल्लद अल अव्वल वष्षानी)(कुल सफ़हात : 713,677,570)

शो'बए इस्लाही कुतुब

(22) ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ (कुल सफ़हात : 160)

(23) इनफ़िरादी कोशिश (कुल सफ़हात : 200)

(24) तंग दस्ती के अस्बाब (कुल सफ़हात : 33)

(25) फ़िक्रे मदीना (कुल सफ़हात : 164)

(26) इमतिहान की तय्यारी कैसे करें ? (कुल सफ़हात : 32)

(27) नमाज़ में लुक़्मा के मसाइल (कुल सफ़हात : 39)

(28) जन्नत की दो चाबियां (कुल सफ़हात : 152)

(29) काम्याब उस्ताज़ कौन ? (कुल सफ़हात : 43)

(30) निसाबे मदनी क़ाफ़िला (कुल सफ़हात : 196)

(31) काम्याब तालिबे इल्म कौन ? (कुल सफ़हात : तक़रीबन 63)

(32) फ़ैज़ाने एह्याउल उ़लूम (कुल सफ़ह़ात : 325)

(33) मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी (कुल सफ़ह़ात : 96)

(34) ह़क़ व बात़िल का फ़र्क़ (कुल सफ़ह़ात : 50)

(35) तह़क़ीक़ात (कुल सफ़ह़ात : 142)

(36) अर-बईने ह़-नफ़िय्यह (कुल सफ़ह़ात : 112)

(37) अ़त़्त़ारी जिन्न का ग़ुस्ले मय्यित (कुल सफ़ह़ात : 24)

(38) त़लाक़ के आसान मसाइल (कुल सफ़ह़ात : 30)

(39) तौबा की रिवायात व ह़िकायात (कुल सफ़ह़ात : 124)

(40) क़ब्र खुल गई (कुल सफ़ह़ात : 48)

(41) आदाबे मुर्शिदे कामिल (मुकम्मल पांच ह़िस्से) (कुल सफ़ह़ात : 275)

(42) टी वी और मूवी (कुल सफ़ह़ात : 32)

(43 ता 49) फ़तावा अहले सुन्नत (सात ह़िस्से)

(50) क़ब्रिस्तान की चुड़ैल (कुल सफ़ह़ात : 24)

(51) ग़ौषे पाक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के ह़ालात (कुल सफ़ह़ात :106)

(52) तआ़रुफ़े अमीरे अहले सुन्नत (कुल सफ़ह़ात : 100)

(53) रहनुमाए जदवल बराए म-दनी क़ाफ़िला (कुल सफ़ह़ात : 255)

(54) दा'वते इस्लामी की जेलख़ाना जात में ख़िदमात (कुल सफ़ह़ात : 24)

(55) म-दनी कामों की तक़्सीम (कुल सफ़ह़ात : 68)

(56) दा'वते इस्लामी की म-दनी बहारें (कुल सफ़ह़ात : 220)

(57) तरबिय्यते अवलाद (कुल सफ़ह़ात : 187)

(58) आयाते क़ुरआनी के अन्वार (कुल सफ़ह़ात : 62)

(59) अह़ादीषे मुबारका के अन्वार (कुल सफ़ह़ात : 66)

(60) फ़ैज़ाने चह्ल अह़ादीष (कुल सफ़ह़ात : 120)

(61) बद गुमानी (कुल सफ़ह़ात : 57)

शो'बए तराजिमे कुतुब

(62) जन्नत में ले जाने वाले आ'माल

(अल मुत्जरर्राबेह़ फ़ी षवाबिल अ़-मलिस्सालेह़) (कुल सफ़ह़ात : 743)

(63) शाहराहे औलिया (मिन्हाजुल आ़रिफ़ीन) (कुल सफ़ह़ात : 36)

(64) हुस्ने अख़्लाक़ (मकारिमुल अख़्लाक़)(कुल सफ़ह़ात : 74)

(65) राहे इ़ल्म (ता'लीमुल मु-तअ़ल्लिम त़रीकुतअ़ल्लुम) (कुल सफ़्ह़ात : 102)

(66) बेटे को नसीह़त (अय्युहल वलद)(कुल सफ़ह़ात : 64)

(67) अद्दा'वति इलल फ़िक्र (कुल सफ़ह़ात : 148)

(68) आंसूओं का दरिया (बहूरुद्दुमूअ़) (कुल सफ़ह़ात : 300)

(69) नेकियों की जज़ाएं और गुनाहों की सज़ाएं (कुर्रतुल उ़यून) (कुल सफ़ह़ात : 136)

(70) उ़यूनुल ह़िकायात (मुतर्जम) (कुल सफ़ह़ात : 412)

शो'बए दर्सी कुतुब

(71) ता'रीफ़ाते नह़ूविय्यह (कुल सफ़ह़ात : 45)

(72) किताबुल अ़क़ाइद (कुल सफ़ह़ात : 64)

(73) नुज़्हतुन्नज़र शर्ह़े नख़्बतुल फ़िक्र (कुल सफ़ह़ात : 175)

(74) अर-बईनिन न-ववियय्ह (कुल सफ़ह़ात : 121)

(75) निसाबुत्तज्वीद (कुल सफ़ह़ात : 79)

(76) गुलदस्तए अ़क़ाइदो आ'माल (कुल सफ़ह़ात : 180)

(77) वक़ा-यतिन्नह़ूव फ़ी शर्ह़े हिदा-यतुन्नह़ूव

(78) सर्फ़ बहाई मुतर्जम मअ़ ह़ाशिया सर्फ़ बनाई

शो'बए तख़रीज

(79) अ़जाइबुल क़ुर्आन मअ़ ग़राइबुल क़ुर्आन (कुल सफ़हात : 422)

(80) जन्नती ज़ेवर (कुल सफ़हात : 679)

(81) बहारे शरीअ़त, जिल्द अव्वल (हिस्सा : 1 से 6)

(82) बहारे शरीअ़त, जिल्द दुवुम (हिस्सा : 7 से 13)

(83) बहारे शरीअ़त, जिल्द सिवुम (हिस्सा : 14 से 20)

(84) इस्लामी ज़िन्दगी (कुल सफ़हात : 170)

(85) आईनए क़ियामत (कुल सफ़हात : 108)

(86) उम्महातुल मुअमिनीन (कुल सफ़हात : 59)

(87) सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ का इश्क़े रसूल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم (कुल सफ़हात : 274)

शो'बए अमीरे अहले सुन्नत

(88) सरकार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का पैग़ाम अ़त्तार के नाम (कुल सफ़हात : 49)

(89) मुक़द्दस तह़रीरात के अदब के बारे में सुवाल जवाब (कुल सफ़हात : 48)

(90) इस्लाह़ का राज़ (म-दनी चैनल की बहारें हिस्सए दुवुम) (कुल सफ़हात : 32)

(91) 25 क्रिस्चैन क़ैदियों और पादरी का क़बूले इस्लाम (कुल सफ़हात : 33)

(92) दा'वते इस्लामी की जैलख़ाना जात में ख़िदमात (कुल सफ़हात : 24)

(93) वुज़ू के बारे में वस्वसे और इन का इलाज (कुल सफ़हात : 48)

(94) तज़किरए अमीरे अहले सुन्नत क़िस्त़ सिवुम (सुन्नते निकाह)(कुल सफ़हात : 86)

(95) आदाबे मुर्शिदे कामिल (मुकम्मल पांच हिस्से) (कुल सफ़हात : 275)

(96) बुलन्द आवाज़ से ज़िक्र करने में ह़िकमत (कुल सफ़हात : 48)

(97) क़ब्र खुल गई (कुल सफ़हात :48)

(98) पानी के बारे में अहम मा'लूमात (कुल सफ़हात : 48)

(99) गूंगा मुबल्लिग़ (कुल सफ़ह़ात : 55)

(100) दा'वते इस्लामी की म-दनी बहारें (कुल सफ़ह़ात : 220)

(101) गुम शुदा दुल्हा (कुल सफ़ह़ात : 33)

(102) मैं ने म-दनी बुर्क़अ़ क्यूं पहना ? (कुल सफ़ह़ात : 33)

(103) जिन्नों की दुन्या (कुल सफ़ह़ात : 32)

(104) तज़किरए अमीरे अहले सुन्नत क़िस्त़ दुवुम (कुल सफ़ह़ात : 48)

(105) ग़ाफ़िल दर्ज़ी (कुल सफ़ह़ात : 36)

(106) मुख़ालिफ़त महब्बत में कैसे बदली ? (कुल सफ़ह़ात : 33)

(107) मुर्दा बोल उठा (कुल सफ़ह़ात : 32)

(108) तज़किरए अमीरे अहले सुन्नत क़िस्त़ अव्वल (कुल सफ़ह़ात : 49)

(109) कफ़न की सलामती (कुल सफ़ह़ात : 33)

(110) तज़किरए अमीरे अहले सुन्नत क़िस्त़ चहारूम (कुल सफ़ह़ात : 49)

(111) चल मदीना की सआ़दत मिल गई (कुल सफ़ह़ात : 32)

(112) बद नसीब दुल्हा (कुल सफ़ह़ात : 32)

(113) मा'ज़ूर बच्ची मुबल्लिग़ा कैसे बनी ? (कुल सफ़ह़ात : 32)

(114) बे क़ुसूर की मदद (कुल सफ़ह़ात : 32)

(115) अ़त्त़ारी जिन्न का ग़ुस्ले मय्यित (कुल सफ़ह़ात : 24)

(116) नूरानी चेहरे वाले बुज़ुर्ग (कुल सफ़ह़ात : 32)

(117) आंखो का तारा (कुल सफ़ह़ात : 32)

(118) वली से निस्बत की ब-रकत (कुल सफ़ह़ात : 32)

(119) बा बरकत रोटी (कुल सफ़ह़ात : 32)

(120) इ़ग़वा शुदा बच्चों की वापसी (कुल सफ़ह़ात : 32)

(121) मैं नेक कैसे बना ? (कुल सफ़हात : 32)

(122) शराबी, मुअज़्ज़िन कैसे बना ? (कुल सफ़हात : 32)

(123) बद किरदार की तौबा (कुल सफ़हात : 32)

(124) खुश नसीबी की किरनें (कुल सफ़हात : 32)

(125) नाकाम आ़शिक़ (कुल सफ़हात : 32)

(126) नादान आ़शिक़ (कुल सफ़हात : 32)

(127) हैरोइन्ची की तौबा (कुल सफ़हात : 32)

(128) नौ मुस्लिम की दर्दभरी दास्तान (कुल सफ़हात : 32)

(129) मदीने का मुसाफ़िर (कुल सफ़हात : 32)

(130) ख़ौफ़नाक दांतो वाला बच्चा (कुल सफ़हात : 32)

(131) फ़िल्मी अदा कार की तौबा (कुल सफ़हात : 32)

(132) सास बहू में सुल्ह़ का राज़ (कुल सफ़हात : 32)

(133) क़ब्रिस्तान की चुड़ेल (कुल सफ़हात : 24)

(134) फ़ैज़ाने अमीरे अहले सुन्नत (कुल सफ़हात : 101)

(135) ह़ैरत अंगेज़ ह़ादिषा (कुल सफ़हात : 32)

(136) मॉडर्न नौ जवान की तौबा (कुल सफ़हात : 32)

(137) क्रिस्चैन का क़बूले इस्लाम (कुल सफ़हात : 32)

(138) सलातो सलाम की आ़शिक़ा (कुल सफ़हात : 33)

(139) क्रिस्चैन मुसलमान हो गया (कुल सफ़हात : 32)

(140) चमकती आंखों वाले बुर्ज़ुग (कुल सफ़हात : 32)

(141) म्यूज़िकल शो का मतवाला (कुल सफ़हात : 32)

(142) म्यूज़िकल नौ जवान की तौबा (कुल सफ़हात : 32)

मजलिसे तराजुमे कुतुब की तरफ़ से पेश कर्दा कुतुब

बानिये दा'वते इस्लामी मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार क़ादिरी مَدَّظِلُّهُ الْعَالِي के इन रसाइल के अ-रबी तराजुम शाएअ हो चुके हैं :

(1) बादशाहों की हड्डियां (इज़ामुल मलूक)

(2) मुर्दे के सदमे (हुमूमिल मय्यित)

(3) ज़ियाए दुरूदो सलाम (ज़ियाइस्सलाति वस्सलाम)

(4) श-ज-रए आलिया क़ादिरिय्या र-ज़विय्या अत्तारिय्या

इन रसाइल के सिन्धी तराजुम भी शाएअ हो चुके है

(1) ज़ियाए दुरूदो सलाम (मुअल्लिफ़ : बानिये दा'वते इस्लामी मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार क़ादिरी مَدَّظِلُّهُ الْعَالِي)

(2) ग़फ़लत (मुअल्लिफ़ : बानिये दा'वते इस्लामी मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार क़ादिरी مَدَّظِلُّهُ الْعَالِي)

(3) अबू जहल की मौत (मुअल्लिफ़ : बानिये दा'वते इस्लामी मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार क़ादिरी مَدَّظِلُّهُ الْعَالِي)

(4) एहतिरामे मुस्लिम (मुअल्लिफ़ : बानिये दा'वते इस्लामी मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार क़ादिरी مَدَّظِلُّهُ الْعَالِي)

(5) दा'वते इस्लामी का तआरुफ़ ।

इस के इलावा अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के कई रसाइल के सिन्धी तराजुम भी शाएअ हो चुके हैं

(1) अहकामे नमाज़

(2) फ़ैज़ाने रमज़ान

(3) फ़ैज़ाने बिस्मिल्लाह

(4) पेट जो कुफ़्ले मदीना

(5) आदाबे त़आ़म
(6) बयानाते अ़त्त़ारिय्या
(7) जिन्नात जो बादशाह
(8) सुब्हे़ बहारां
(9) ज़ल्ज़लो इन इनजा अस्बाब
(10) आक़ा जो महीनो
(11) अब्लक़ घोड़े सुवार
(12) पुल सिरात़ जी दहशत
(13) ज़ख़्मी नांग
(14) कफ़न जी वापसी
(15) बरेली कान मदीना
(16) मुलाज़िमीन जा लाइ 21 म–दनी गुल
(17) शजरए अ़त्त़ारिय्या
(18) 40 रूहा़नी इ़लाज

﴿अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या के इन रसाइल के सिन्धी तराजुम भी शाएअ़ हो चुके हैं﴾

(1) मूवी इन टीवी
(2) उ़श्र जा अह़काम (हारीन जा लाइ)
(3) मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी
(4) आदाबे मुर्शिदे कामिल
(5) इन्फ़िरादी कोशिश
(6) ख़ौफ़े ख़ुदा عزوجل
(7) तंगदस्ती इन इनजा अस्बाब
(8) निसाबे म–दनी क़ाफ़िला

याद दाश्त

दौराने मुतालआ ज़रूरतन अन्डर लाइन कीजिये, इशारात लिख कर सफ़्हा नम्बर नोट फ़रमा लीजिये । اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ इल्म में तरक़्क़ी होगी ।

उनवान	सफ़्हा	उनवान	सफ़्हा

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

सुन्नत की बहारें

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ तब्लीगे़ कुरआनो सुन्नत की आ़लमगी़र ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी के महके महके मदनी माह़ोल में ब कषरत सुन्नतें सीखी और सिखाई जाती हैं, हर जुमा'रात इशा की नमाज़ के बा'द आप के शहर में होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात गुज़ारने की मदनी इल्तिजा है, आ़शिक़ाने रसूल के मदनी क़ाफ़िलों में ब निय्यते षवाब सुन्नतों की तर्बिय्यत के लिये सफ़र और रोज़ाना "फ़िक्रे मदीना" के ज़रीए मदनी इन्आ़मात का रिसाला पुर कर के हर मदनी माह के इबतिदाई दस दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये, اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस की बरकत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और ईमान की हिफ़ाज़त के लिये कुढ़ने का ज़ेहन बनेगा।

हर इस्लामी भाई अपना येह ज़ेहन बनाए कि "मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।" اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ अपनी इस्लाह़ की कोशिश के लिये "मदनी इन्आ़मात" पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये "मदनी क़ाफ़िलों" में सफ़र करना है। اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ

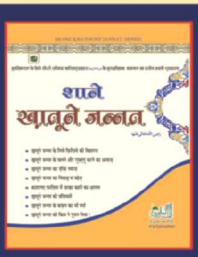

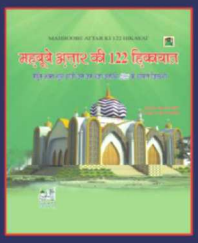

ISBN 978-969-579-912-3
0101180

مکتبۃ المدینہ
MAKTABA TUL MADINAH
MC 1286

MAKTABATUL MADINA
421, URDU MARKET, MATYA MAHAL, JAMA MASJID
DELHI - 110006, PH : 011-23284560
email : maktabadelhi@gmail.com
web : www.dawateislami.net